मैथिली

सुधांशु शेखर चौधरी

शिवाकान्त पाठक

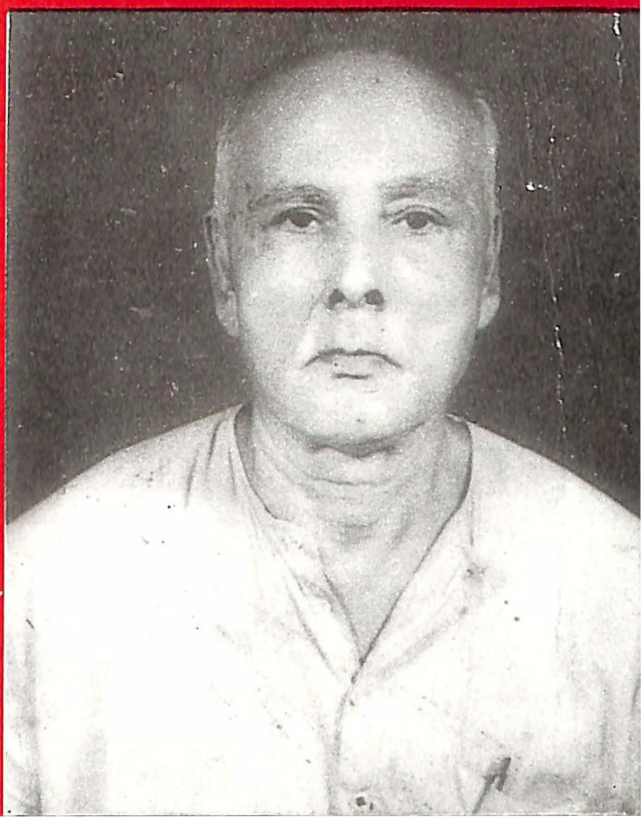

MT
817.230 92
C 393 P

भारतीय

MT
817.2392
C 393 P

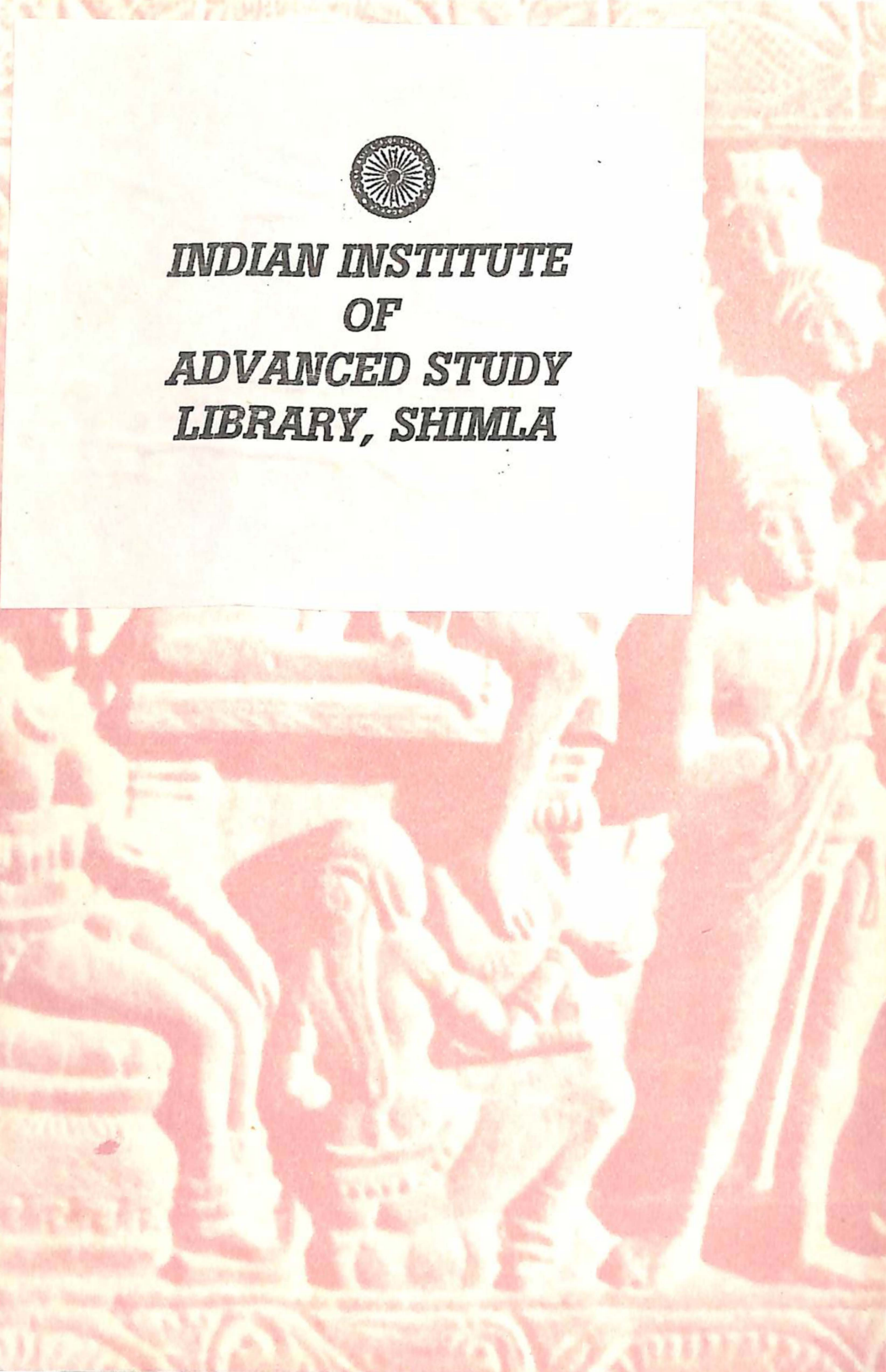

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

सुधांशु शेखर चौधरी

लेखक
शिवाकान्त पाठक

साहित्य अकादेमी

Sudhanshu Shekhar Choudhary : A monograph in Maithili by Shivakant Pathak on the modern Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1998), Rs. 25.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 1998

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 C 393 P
00117121

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा भवन, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
304-305, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई 600 018
ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर 560 002

MT
817.23092
C393P

मूल्य : पचीस टाका

Indian Institute of Advanced Study
117121
9.12.04
SHIMLA

ISBN 81-260-0236-0

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली 110 032
मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स, दिल्ली 110 051

अनुक्रम

प्राक्कथन	5
जीवनवृत्त ओ व्यक्तित्व	9
नाट्य कृति	22
कथा कृति	44
औपन्यासिक कृति	48
समीक्षात्मक निबन्ध	58
काव्य कृति	64
पत्रकारिता ओ सम्पादन	70
हिन्दी सेवा	74
उपसंहार	77
परिशिष्ट	79
शेखरजीक प्रकाशित ग्रन्थक सूची	

प्राक्कथन

सुधांशु शेखर चौधरी पर परिचयात्मक विनिबन्ध लेखनक क्रममे हम हुनका सम्बन्धमे हुनका जीवनकालमे कोनो इतिहास किंवा आने ठाम कोनो प्रसङ्गमे कहल-लिखल गेल तथ्यकेँ ग्रहण नहि कऽ हुनकहि रचनावलीकेँ आधार बनौलहुँ अछि ।

तात्पर्य, हम स्वतंत्र रूपेँ हुनक व्यक्तित्व ओ कृतित्त्वक परिचय प्रस्तुत करबाक चेष्टा रखलहुँ अछि । तेँ हमरा जे किछु ओ अपन कृतित्वमे भेटलाह तकरा निखोरि कऽ राखि देलहुँ अछि । हँ, हुनक जीवनक बाद जे किछु निर्भीकतापूर्वक कहल गेल तकरासँ परहेज नहि कयल गेल अछि ।

विनिवन्धक एहि स्वरूपक लेल 'आरम्भ' (अङ्क--5 एवम् अङ्क--6) पत्रिकाक समस्त लेखक ओ सम्पादक श्री राजमोहन झाक सङ्ग डॉ. हंसराज, डॉ. भीमनाथ झा ओ शेखरजीक एकमात्र बालक श्री शरदिन्दु शेखर चौधरी धन्यवादक पात्र छथि जनिक सहयोग कोनो-ने-कोनो रूपेँ भेटल अछि ।

सर्वाधिक धन्यवादक पात्र थिकाह साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, मे मैथिलीक प्रतिनिधि डा. सुरेश्वर झाजी जनिक सत्प्रयासेँ हमरा एहि विनिबन्ध-लेखनक अवसर प्राप्त भेल अछि ।

–शिवाकान्त पाठक

जीवनवृत्त ओ व्यक्तित्व

आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भ *कवीश्वर चन्दा झासँ* होइत अछि। कवीश्वर मैथिली साहित्यमे भाव, भाषा, शिल्प, विषय-वस्तु आदिमे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन आनि साहित्यक विविध नव क्षेत्रक उद्घाटन कयलनि। मैथिली साहित्यमे हिनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहलनि गद्य-विधाक सूत्रपात कऽ पूर्वसँ प्रवाहित साहित्य-सरितामे मोड़ आनि विकासक नवीन पथक निर्माण करब। हिनका बादे लेखकक नवीन वर्ग जहाँ पद्यमे नव-नव भाव, प्रतीक आदिक अनुसरण कऽ भाषा-साहित्यकेँ आगाँ बढ़ौलनि तहाँ गद्यमे कथा, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना, इतिहासलेखन आदि क्षेत्रमे कार्यारम्भ कयलनि। मुदा एहू समयमे मैथिली साहित्य मिथिला-मैथिल आदि धरि सीमित रहल। ओहिमे आञ्चलिक वा क्षेत्रीय जनसमस्येक प्रधानता रहलैक।

परन्तु वर्त्तमान शताब्दीक तेसर-चारिम दशक अबैत-अबैत राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय समस्त समस्याक राङ्ग साहित्य जुड़ि गेल। चिन्तनक रङ्ग-ढङ्गमेओ विषय-विश्लेषणक विस्तारमे अन्तर अयलैक। एकर मुख्य कारण भेलैक राष्ट्र-जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे परिवर्त्तनक गतिक तीव्रता। महात्मागान्धीक नेतृत्वमे देश जहाँ स्वराज्यक लेल दृढ़ताक सङ्ग आगाँ बढ़ि रहल छल ओतहि पाश्चात्य चिन्तक मार्क्स ओ फ्रायडक विचार सेहो भारत-भूमिपर प्रभावी होमऽ लागल। मैथिलीक चिन्तक साहित्यकार लोकनि सेहो एहि सभसँ प्रभावित भेलाह। एहि क्रममे मैथिलीयोमे अनेकानेक मत-सम्प्रदायक आविर्भाव भेल।

एहि सभ वाद-विवादक बीच मैथिलीमे साहित्यकारक एकगोट एहनो वर्गक विकास भेलैक जे राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय विभिन्न मत-सम्प्रदायवादक विलक्षणताकेँ आत्मासात करैत अपन धरतीक सुगन्धि आ अपन सांस्कृतिक गरिमाकेँ कायम रखलक। अर्थात् हिनकालोकनिक साहित्यमे अनुभूतिक यथार्थ-बोध अभिव्यक्ति पौलक अछि। कतहु भाव, भाषा ओ अभिव्यक्ति आदिक क्षेत्रमे, कतहु भाव ओ भाषेक क्षेत्रमे तँ कतहु भाषहि टाक क्षेत्रमे। मुदा पौलक अछि अवश्य।

एहि क्रममे *रामकृष्ण झा 'किसुन', चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मथुरानन्द चौधरी*

'माथुर' आदि सहित अनेकशः मान्य कवि-साहित्यकार-मालाक दर्शन होइत अछि ।

शेखरजी एही वर्गक साहित्यकार थिकाह, जे अपन विविध रचनावलीक माध्यमे मैथिली साहित्यक प्रायः सभ क्षेत्रमे अपन दृष्टिकोणक कारणेँ बेछप छथि ।

प्रभावोत्पादक भाषाक सफल नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार, निबन्धकार, कवि, सम्पादक ओ पत्रकार, स्वाभिमानी, कर्मठ, बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्वक स्वामी, साहित्य अकादेमी (नई दिल्ली) द्वारा सम्मानित, नरौने वत्सवार मूलक पराशर गोत्रीय मसिजीवी साहित्यकार *सुधांशु शेखर चौधरी* मैथिली जगतमे *'शेखरजी'* क नामसँ जानल जाइत छथि ।

ई साहित्यिक क्षेत्रमे जाहि रूपमे जानल-चीन्हल जाइत छथि तकरा पाछाँ हिनक वंशक पृष्ठभूमि रहल अछि । वस्तुतः प्रकृतिक आने पदार्थ जकाँ मनुष्यो माटि-पानिक अनुरूपे अपन ऊर्जाक आधारपर बनैत, बढ़ैत ओ फुलाइत-फड़ैत अछि ।

हिनक पितामह, पिता ओ पित्तीलोकनि देसकोसमे पसरैत आधुनिकतासँ परिचित छलाह । मुदा तकर ई अर्थ नहि जे ओ सभ अपन कुल-परम्पराकेँ बिसरि गेल छलाह । हिनकालोकनिमे जहिना आधुनिकताक परिचय छलनि तहिना अपन माटि-पानिक पकड़ सेहो छलनि । कर्त्तव्यक प्रति निष्ठा ओ संस्कृतिक प्रति अखण्ड आस्था शेखरजीक वंशक विशेषता रहलनि ।

पित्ती *स्व. शशिनाथ चौधरी* 'अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्' (मैथिलीक सुप्रसिद्ध ओ सुप्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था) क संस्थापक ओ मैथिलीक विशिष्ट लेखक छलाह । स्वयम् हिनक पिता *स्व. बदरीनाथ चौधरी* दरोगा छलाह । सङ्गहिँ साहित्यानुरागी सेहो । ओ बेगुसरायमे प्रचलित मैथिलीक स्वरूपमे एकगोट उपन्यासो लिखने छलाह । तेसर पित्ती *मुक्तिनाथ चौधरी* 'ट्रेण्ड ग्रेजुएट' छलथिन । जे 'डिप्टी इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल' क पदपर कार्यरत छलाह ।

एहन आधुनिक शिक्षा सम्पन्न परिवारमे उत्पन्न शेखरजीक आधुनिकतासँ युक्त साहित्यिक-क्षमतासँ सम्पन्न होयब स्वाभाविके छल ।

हिनक जन्म 1920 इ. मे दीपावलीसँ पूर्व धनतेरस दिन 3 नवम्बरकेँ दरभङ्गा नगरक मिसरटोला (मिश्रटोला) महल्लामे भेल छलनि ।

शेखरजीकेँ दुइ गोट माय छलथिन । पहिल सौराठक आ दोसर रखवारी गामक । हिनक पिताक प्रथम विवाह अभिभावक लोकनिक इच्छानुरूप भेल छलनि । दोसर विवाह ओ स्वयम् अपना इच्छेँ कयने छलाह । प्रथम पत्नीसँ एकगोट ओ दोसर पत्नीसँ छौ गोट बालक भेलनि । शेखरजी एही दोसर पत्नीक दोसर ओ पिताक तेसर सन्तान छलाह । हिनक बाल्यकालक अधिकांश समय मिसरटोलेमे मायक सान्निध्यमे व्यतीत भेलनि ।

बालपन ओ शिक्षा

शेखरजीक बालपन कष्टमे बितलनि । कारण, बहुतो दिन धरि पिताक अछैतो पितृविहीने जकाँ रहलाह । परिवार पैघ छलनि । भरण-पोषणक लेल एकटा निश्चित आय आवश्यक छलैक । —से हिनक पिता हिनक बालपनमे अधिकारीसँ अनबन होयबाक कारणेँ नोकरी छोड़ि देलनि । स्वाभिमानी पुरुष छलाह । तहिया अंग्रेजक जमाना छलैक । अंग्रेज पदाधिकारी अपनासँ निचला भारतीय पदाधिकारी पर्यन्तकेँ नहि गुदानैत छलैक । बदरीबाबू त्याग-पत्र दऽ देलनि । ततबे नहि घरो त्यागि देलनि । परिवारक आर्थिक व्यवस्था ढनमना गेलनि ।

एहिमे सभसँ बेसी प्रभावित भेलाह शेखरेजी । जखन निर्माण-काल छलनि, पिताक छत्र-छाया हटि जयबाक कारणेँ हिनक अध्ययन गड़बड़यलनि । पाछाँ जखन पिता तन्त्र-पद्धतिसँ यत्किञ्चित अर्जित कऽ घर देबो करथिन तँ पारिवारिक आवश्यकताक सोझाँ ओ नगण्य भऽ जाइक ।

पिताक स्नेह ओ मार्गदर्शनक अभावमे शेखरजी स्कूल-कालेजक व्यवस्थित शिक्षा नहि प्राप्त कऽ सकलाह । किछु दिन महल्लाक ख्यात 'ढेलबा स्कूल' मे पढ़लनि । किछु दिन दरभङ्गाक राज हाइस्कूलमे । पछाति पिताक इच्छा भेलनि जे ई संस्कृत पढ़थि । मुदा ताहू लेल तँ किछु ने किछु व्यवस्था चाही । कतहु नामाङ्कनक जोगार, किछु पोथी-पतराक व्यवस्था । जकर अभावे रहलनि । फलतः मिर्जापुरक धर्मनिष्ठ पण्डित वासुदेव झा वैयाकरण (श्यामा संस्कृत पाठशाला, मिर्जापुर) सँ पढ़ि मध्यमाक परीक्षा पास कयलनि । पछाति महारानी अधिरानी रमेश्वरलता विद्यालय (सम्प्रति महाविद्यालय), दरभङ्गामे सेहो पढ़लनि ।

ई सभ होइत-होइत हिनक पिता घर परावर्तित भऽ गेलथिन । ताबत हुनक अभिरुचि आयुर्वेदक दिस भऽ गेल छलनि । ओ पटनामे आयुर्वेदीय जड़ी-बूटीक एकगोट दोकान फोलि लेने छलाह । ओ शेखरजीक नामाङ्कन ओहीठामक आयुर्वेदिक महाविद्यालयमे करा देलथिन । किछु मास तँ शेखराजी जेना-तेना ओहिठाम निर्वाह कयलनि । मुदा ओहिठामक पढ़ाइ पसिन्न नहि पड़लनि । ई मिसरटोला घूरि अयलाह आ स्वाध्यायमे जुटि गेलाह ।

ई कहियो स्कूली पठन-पाठनकेँ बेसी महत्व नहि दऽ वैयक्तिक अध्ययनकेँ सभ दिन श्रेष्ठ मानैत रहलाह । ज्ञानक जाहि कोनो क्षेत्रक आवश्यकता अनुभव कयलनि तकरा अपना ढंगेँ पढ़लनि आ ओहि विषयपर अपन मौलिक चिन्तनकेँ स्थिर कयलनि ।

विवाह ओ सन्तान

शेखरजीक विवाह 1947 इ. मे 27 म वर्षक वयसमे वर्त्तमान मधुबनी जिलाक

धर्मपुर (उजान) नामक गाममे भेल छलनि। हिनक धर्मपत्नी *श्रीमती मोती देवी* मैथिलीक प्रख्यात साहित्यकार *डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण'* क वैमात्रेय *प. कौशिकीनाथ झा* क कन्या छलीह। ओ शेखरजीक जीवनक प्रत्येक परिस्थितिमे सहयोगी बनल रहलथिन। आर्थिक कठिनताक काल हो आ कि लिखबा-पढ़बाक काल ओ सदिखन अनुकूलता बनौने रहैत छलीह। शेखरजीक पढ़बा-लिखबा काल नेना लोकनिकेँ तेना बरजने रहैत छलीह जे हुनका कोनो बाधाक अनुभव नहि होइनि। ओ यथासाध्य हिनक पाण्डुलिपिकेँ ओरिया कऽ रखैत छलीह। एते धरि जे जीवनक अन्तिम क्षणमे जखन ओ मतिविशेष भऽ गेलीह तखनहुँ शेखरजीक चिन्ता करब नहि बिसरैत छलीह।

शेखरजी आत्मनिष्ठ व्यक्ति छलाह। जीवनमे व्यावहारिकताक कमी छलनि। ककरो सङ्ग बेसी गप्प-सप्प नहि करथि। टोकलापर नापल-तौलल शब्दमे उत्तर देथि। तेँ सर-कुटुम सेहो हिनकासँ विशेष अपेक्षा नहि करैत छलथिन। घरमे जे लोक अबैत छल से हिनक पत्नीएक स्वभावक कारणेँ। ओ उदार मैथिल ललना छलीह।

शेखरजीकेँ पाँचगोट सन्तान भेलनि। जाहिमे चारि गोट कन्या — *वीणा, मीना, सज्जू* ओ *मज्जू* तथा एकमात्र बालक *श्री शरदिन्दु शेखर चौधरी* छथिन। बालककेँ ओ प्रेमसँ *'शरदू'* कहैत छलाह।

पारिवारिक साहित्यिक परिवेश

परिवारमे मात्र शेखरजी टा साहित्यिक छलाह से नहि। पिता ओ पित्तीलोकनिक अतिरिक्त हिनक भायलोकनि सेहो साहित्यक विविध विधामे अभिरुचि रखैत छलाह।

नाटक खेलयबाक कौलिके गुण छलनि। पित्तीलोकनि सेहो नाटक खेलाइत छलथिन आ भायलोकनि सेहो। अनुज वालाजी कवितो लिखैत छलाह। सभसँ छोट भाय कलांशु शेखर चौधरी आरम्भमे किछु कथा लिखलनि। आब यदा-कदा 'इकोनॉमिक टाइम्स' नामक पत्रमे आर्थिक विषयपर निबन्ध लिखैत छथि।

उत्तराधिकारक रूपमे प्राप्त लेखन कलाकेँ सन्तान लोकनि अद्यावधि निमाहि रहलाह अछि। शेखरजीक एकमात्र बालक *श्री शरदिन्दु शेखर चौधरी* पिताक निधनोपरान्त हुनका स्मृतिमे हुनके द्वारा स्थापित *'शेखर प्रकाशन'* केँ पुनरुजीवित कऽ ओहि माध्यमे शेखरजीक अनुपलब्ध, अप्रकाशित ओ पत्र-पत्रिका सभमे छिड़िआयल रचनासभकेँ एकट्ठा कऽ प्रकाशित कऽ रहलाह अछि। एहि प्रकाशनक माध्यमे आनो-आन रचनाकारक पोथी प्रकाशित भेल अछि।

तात्पर्य जे शेखरजीक पूर्वापर परिवार साहित्यक हेतु समार्पित रहल अछि।

आजीविका ओ आर्थिक स्थिति

शेखरजी जँ कोनो स्थिर ओ व्यवस्थित स्कूल-कालेजक शिक्षा प्राप्त नहि कयने छलाह, तँ हिनका लग खानापूरीवला प्रमाण-पत्रकेर कागतक टुकड़ी नहि छलनि — जे कोनो सरकारी जीविकाक लेल आवश्यक मानल जाइत छैक । परिणामतः हिनका कोनो नोकरी-चाकरी नहि भेटि सकलनि । पारिवारिक आर्थिक स्थितिक जर्जरता हिनका अर्थोपार्जनक हेतु बेर-बेर बाध्य करैत छलनि । तँ अनेक वेर ओहिलेल प्रयासो कयलनि। मुदा से उपयुक्तताक अभावमे कतेको ठाम भेटियो कऽ छुटैत गेलनि । बहुतोकेँ छोड़ैतो गेलाह।

1945 इ. मे हिनक हिन्दी गीत-सङ्ग्रह *'पथ पर'* छपलनि । तकर बाद कलकत्ता चल गेलाह । ओतय 'रायल नाटक कम्पनी'मे काज करब आरम्भ कयलनि । काज रुचिक अनुकूल छलनि । अनेक बेर अनेको नाटकमे भाग लऽ चुकल छलाह । तँ एहि नाटक कम्पनीमे शेखरजी विशेष रूपेँ प्रसस्त भऽ गेलाह । एहि ठाम ई भूमिकासँ लऽ निर्देशन, रङ्गकर्म, सज्जाकार्य आदि सभ तरहक काज कयलनि । मुदा ओहिठाम बहुत दिन नहि टिकि सकलाह । गाम घुरि अयलाह ।

तकरा लगले बाद लहेरियासरायक *'विद्यापति हाइस्कूल'* मे हिन्दी शिक्षकक पद रिक्त भेलैक । शेखरजी कोनो जीविकासँ बान्हल नहि छलाह । मित्रवर अमरजी (मैथिलीक सुप्रसिद्ध कवि-साहित्यकार प. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर') स्कूलमे शिक्षकक पदपर काज करबाक हेतु आग्रह कयलथिन । ओमहर स्कूलक व्यवस्थापक लोकनिसँ गप्प कयलनि । स्कूलक व्यवस्थापक ओ प्रधानाध्यापक दुनूगोटे गछि लेलथिन ।

शेखरजी हिन्दीक साहित्यकार होयबाक कारणेँ हिन्दी शिक्षकक पदपर नियुक्त भऽ गेलाह । मुदा स्वाभिमानी साहित्यकार ओहिठाम बेसी दिन नहि टिकि सकलाह । लगभग छौ मासमेँ किछु कम्मे दिन ओतय रहलाह । वेतन निर्धारणक प्रश्नपर मतान्तर भऽ गेलनि । स्कूल जायब छोड़ि देलनि । त्याग-पत्रो देब आवश्यक नछि बुझलनि । फेर लोक लाख बुझौलकनि मन नहि मानलकनि । साहित्यकार कतहु स्वाभिमानक विरुद्ध कोनो बात स्वीकार करय । घुरि कऽ ओमहर तकबो नहि कयलनि ।

फेर पुरने ढाठी । पोथी लिखब आ प्रकाशकक हाथेँ ओकरा बेचब । ताहिसँ जे पत्रम्-पुष्पम् भेल ताहिसँ घरक काज चलायब ।

पोथी बेचि कऽ घरक काज चलायब कठिन काज छैक । ताहिसँ प्रकाशककेँ जे होउक । लेखककेँ तँ क्षुर्वाक्षते भेटैत छैक । सेहो एकठाम नहि—'आइ ताबत एतवा लऽ जाउ । फेर बादमे देखल जयतैक ।' एहना हालतिमे लेखनक बलपर क्यौ कतेक काल ठाढ़ रहि सकैत अछि ? शेखरजी जमशेदपुर चल्ल गेलाह । ओहिठाम हिनका अनायास एकगोट बिजली-खाम्हक कोण बनबयवला कम्पनीमे 'सुपरवाइजर' क काज

भेटि गेलनि । कलम-मोसि, किताब-कॉपीवलाकेँ लोहा-लक्कड़ भेटलनि । जे मन स्कूलमे नहि टिकि सकल से एतय कोना टिकैत ? टनटनायल घुरि अयलाह । फेर वैह पोथी लिखनाइ, बेचनाइ ।

एहि बीच किछु दिन राज प्रेस दरभङ्गामे साहित्य-सहायकक पदपर सेहो रहलाह। *'वैदेही'* मासिक ओ *'इजोत'* त्रैमासिकक सम्पादन कयलनि । ई सभ काज हिनक रुचिक अनुकूल अवश्य छलनि, मुदा मैथिलीक कोनो पत्रकेँ ई क्षमता नहि छलैक जे एकटा साहित्यकारक पोषण कऽ सकय । तेँ शेखरजी 1960 इ. सँ पूर्व, जाबत मैथिलीक सुप्रतिष्ठित पत्रिका *'मिथिला मिहिर'* सँ नहि जुड़लाह कतहु एकठाम स्थिर नहि भऽ सकलाह । कहियो एहिठाम तँ कहियो ओहिठाम घुमैत रहलाह ।

मुदा एहू दौड़-धूपक हालतिमे स्वतन्त्र लेखन ओ सम्पादनक काज चलैत रहलनि। एहिमे लहेरियासरायक *'पेपर हाउस'* दरभङ्गाक *'ग्रन्थालय प्रकाशन'* ओ पटनाक *'अजन्ता प्रेस'* प्रमुख छल जे हिनक पोथीकेँ छापि-छापि सहायता करैत रहलनि ।

तहिना मैथिली मासिक *'इजोत'* क प्रकाशनक उद्देश्य हिनक आर्थिके स्थितिक सुधार छल । मुदा मैथिलीक आने पत्र जकाँ ईहो पाठकक अभावमे शीघ्रे वन्न भऽ गेल । तथापि एहि पत्र सभक सम्पादनसँ एकटा लाभ भेलनि जे 1960 इ. सँ जखन साप्ताहिक *'मिथिला मिहिर'* क प्रकाशन पटनासँ आरम्भ भेलैक तँ सुधांशु शेखर चौधरी ओकर प्रधान सम्पादकक रूपमे नियुक्त भेलाह ।

शेखरजीक ई अवधि (1960 इ. क बाद) आर्थिक दृष्टिञेँ दृढ़ छलनि । परन्तु *'मिथिला मिहिर'* सँ सेवानिवृत्तिक बाद कठिनता पुनः शुरू भऽ गेलनि । अनेक तरहेँ आर्थिक ओ मानसिक कष्टमे पड़ि गेलाह ।

अपने सेवा-निवृत्त भैए गेल छलाह । दुइ गोट बेटीक परिवार सेहो आर्थिक आघातक चपेटमे पड़ि गेलनि । स्वाभाविक रूपसँ हिनका एहि सभ बातक विशेष आघात लगलनि आ एही घात-प्रतिघातक बीच जीवनक अन्तो भऽ गेलनि ।

मुदा तहिना ईहो सत्य अछि जे ओ कहियो ककरो लग हाथ नहि पसारलनि। सतत् अपन आर्थिक सन्तुलनकेँ जेना-तेना बनौने रहैत छलाह ।

एक साहित्यकारक रूपमे जखन-तखन ओ अपन एहि भावकेँ प्रकट करैत रहैत छलाह । *'लगक दूरी'* नाटकक मास्टर साहेबक आर्थिक सन्तुलनक प्रसङ्ग जेठका बालक ओ जेठकी पुतहुक बीचक वार्त्तालाप शेखरजीक ओही आन्तरिक भावक परिचायक अछि ।

सन्तुलने हिनक जीवनक आधार रहलनि । सन्तुलनेक बलपर ओ जे किछु भेलाह से भेलाह । स्वाभिमानकेँ कहियो ककरो लग बन्हकी नहि रखलनि । ककरो समक्ष आत्मसमर्पण नहि कयलनि । सदा स्वाभिमानपूर्ण जीवन जिउलनि ।

लिखबाकालक स्थिति

किछु काज लोक सौखसँ शुरू करैत अछि । करैत-करैत ओ ही काजकेँ करबाक अभ्यास लागि जाइत छैक । पछाति ओहि कार्य-विशेषकेँ बिनु कयने ओकरा चैन नहि होइत छैक । ओ काज ओकरा हेतु अनिवार्य भऽ जाइत छैक । लेखनमे शेखरजीकेँ किछु तेहने सन भेलनि । लेखन हिनका हेतु एकटा अनिवार्यता भऽ गेलनि । लिखब-पढ़ब हिनका हेतु जीवनक स्वाभाविक क्रिया बनि गेलनि ।

साहित्य-सर्जनाक समय शेखरजी वाह्य-जगतसँ पूर्णतः कटि जाइत छलाह । घर-आङन, सर-समाज आदिक कोनो प्रभाव हिनकापर नहि पड़ैत छलनि । कतहु किछु होउक, क्यौ गप्प करैत रहौ, ई पेटकुनिआँ पड़ल छाती तर गेरुआ धयने लिखैत रहैत छलाह । जखन 'गैस्टिक' भऽ गेलनि तखन आगाँमे एकटा बक्सा राखि पल्थी मारि बैसि कऽ लिखैत छलाह ।

कविता, कथा अथवा उपन्यास तँ चुपचाप लिखैत छलाह । मुदा नाटक लिखबाकाल सम्वाद बाजि कऽ लिखैत छलाह अथवा लिखि कऽ बजैत छलाह ।

ओहि कालक हिनक मानसिकताक प्रसङ्ग एकगोट घटना अछि जे एकबेर श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' (मैथिलीक कवि) हिनकासँ भेँट करबाक निमित्त *मिहिर* कार्यालय गेलाह । सामने सम्पादकाजी (शेखरजी) अपना टेबुलपर बैसल वामा हाथे किछु लिखि रहल छलाह । विनोदजी किछु काल थकमकायल ठाढ़ रहलाह । ओ अपन लेखनमे तल्लीन रहथि । थोड़े काल प्रतीक्षा कऽ विनोदजी कक्षमे प्रवेश कयलनि । विनोदजी हाथ जोड़ि अपन उपस्थितिक सूचना देबाक स्वरमे कहलथिन—'प्रणाम ! हम छी उदयचन्द्र झा 'विनोद' । मुदा ओ तकबो नहि कयलथिन । विनोदजी पुनः कहलथिन — 'अपने बहुत व्यस्त छिऐ की ?' एहि बेर ओ नजरि उठा कऽ तकलथिन अवश्य, मुदा पुनः लिखबामे लीन भऽ गेलाह । बीचमे एकबेर लिखबाक क्रम बन्नो भेलनि तँ चिन्तनमे डूबल रहलाह ।

माने, लिखबाक समयमे शेखरजी सामान्य मनःस्थितिमे नहि रहि जाइत छलाह । ओ जाहि धरातलक वस्तु लिखैत रहैत छलाह, सम्पूर्णतः ओही भावलोकमे विचरण करैत रहैत छलाह । कोनो कारणेँ सामान्य होयबामे समय लगैत छलनि । तेँ अनेक बेर अनेक व्यक्तिकेँ हिनक ई स्वभाव अखड़ि जाइत छलनि । मुदा हिनका लेल धन सन ।

व्यक्तित्व

गम्भीर व्यक्तित्वक स्वामी शेखरजी स्पष्टवादी, स्वाभिमानी ओ उच्च महत्वाकांक्षी छलाह । कतहु ककरो अनटोटल क्षण भरियोक लेल बर्दास्त नहि करैत छलाह । लाइ-लपेटसँ दूर, गुटबाजीसँ फराक, दृढ़निश्चयी, सत्साहित्य-सर्जनकेँ समर्पित पुरुष छलाह

शेखरजी ।

लोक हिनका ऊग्र बुझैत छलनि । एहि प्रसङ्ग एक प्रश्नक उत्तरमे स्वयम् कहने छथि— 'ऊग्र नहि, अनटोटल बातपर हम मुँहपर जवाब देनिहार व्यक्ति छी ।'

वस्तुतः एहन लोककेँ समाज मुँहफट्ट कहैत अछि । से हिनकहु सम्बन्धमे लोकक सामान्य धारणा छलैक । मुदा हुनक स्पष्टता ओ वाणीक प्रखरता कनेक कालक लेल जे अप्रिय लगौक, परन्तु ओहि प्रखरता ओ स्पष्टताक पाछाँ हुनक कोनो द्वेष-भाव नहि रहैत छल । सोझाँमे जे आयल ठाँहिपर ठाँहि कहि देलहुँ । एहन लोक प्रायः भीतरसँ मैल नहि होइत अछि । शेखरोजी भीतरसँ साफ लोक छलाह । तेँ जँ एकदिस मित्रक संख्या कम छलनि तँ दोसर दिस प्रशंसकक पैघ समुदाय छलनि ।

सभटा प्रशंसक साहित्यकार हिनकर छलनि आ ई सभक छलाह । ने ई कोनो गोलिमे छलाह आ ने हिनकर कोनो गोल छलनि । एकबेर आकाशवाणी पटना केन्द्रक निदेशक हिनका बजबा किछु साहित्यकारक नाम पुछने रहथिन । तकर उत्तरमे ई कहने रहथि— ''हमरा 'मिथिला मिहिर' मे जे साहित्यकार छपैत छथि सभ हमर थिकाह ।'' तात्पर्य जे हिनका ककरो सङ्ग सामीप्य वा दूरी नहि छलनि । सभसँ समान रूपेँ सम्बन्धित छलाह ।

एकर मूल कारण छल हिनक वादमुक्तता शेखरजी ने नव वाद चलयबाक प्रयास कयलनि आ ने पूर्वापर स्थापित वादक प्रति प्रतिबद्धता छलनि । हिनका समक्ष एकेगोट वाद छल मातृभाषावाद अथवा मैथिलीवाद । तेँ जाहि साहित्यकारमे प्रतिभा- क्षमता देखथि, आदर करथि । ताहिमे जाति, वर्ग, वर्णपर कोनो विचार नहि करथि । कविता, कथा, निबन्ध आदिक कारणेँ अन्तर नहि अवनि ।

यैह कारण भेलैक जे 'मिथिला-मिहिर' क हिनक सम्पादन कालमे लेखकक एकगोट विशाल सेना तैयार भेल ।

शेखरजी बजैत छलाह कम । काज करैत छलाह अधिक । कम बजबाक स्वभाव हिनकामे शुरुएसँ छलनि । बाल्यावस्थेसँ । कहल जाइत अछि जे नेनामे पाँच वर्ष धरि किछु बाजले नहि छलाह । पाँच वर्षक अवस्थामे एकदिन एकगोट गणेशक मुरुतक सङ्ग खेलाइत-खेलाइत अनायासे किछु बजलनि ।

आरम्भक ई प्रवृत्ति अन्त धरि रहलनि । हिनक एहि प्रवृत्तिक कारणेँ घरोक लोक अपमानित अनुभव करैत छल । कोनो सर-सम्बन्धियोक घर अयलापर ई सामान्य शिष्टाचारो वस नहि टोकैत छलाह । कय बेर जँ क्यौ बहरियो आबि प्रणामो करैत छलनि तँ आभेवादनक रूपमे बिनु मुँहसँ किछु बजने मात्र नजरि उठा कऽ ताकि दैत रहथि ।

वस्तुतः शेखरजीक स्वभावे लोकसँ फराक रहयबला भऽ गेल छलनि । ओ अधिक

काल किछु लिखैत-पढ़ैत अथवा चिन्तनमे मग्न रहैत छलाह । लोक-लौकिकता कम छलनि । हिनक एकगोट भाय पटनेमे रहैत छलथिन । शेखरजी कदाचिते कहियो हुनका डेरापर गेल होयताह । एते धरि जे जखन हृदय-रोगसँ ग्रस्त भऽ ओ मरि गेलाह, तथापि शेखरजी जिज्ञासो करबाक आवश्यकता नहि बुझलनि । एकादशाहोक दिन नहि गेलाह । द्वादशाहकेँ पहुँचलाह । चुपचाप शान्तभावेँ बैसल रहलाह । एकर ई अर्थ नहि जे बन्धु-विछोहक हुनकापर कोनो प्रतिक्रिया नहि छलनि । ओ हर्ष-विषादक भाव हुनकापर सामान्य जन जकाँ नहि व्यक्त होइत छल । ओ एहि तरहक भावकेँ भीतरे-भीतर पचबैत छलाह । जखन ई भाव अतिशय संवेदनशील बना दैत छलनि तँ अनायास सामान्य स्वरूप धारण कऽ लैत छलनि । ओही दिन चुमौनक बाद जखन भातिज आवि प्रणाम कयलथिन तँ कानय लगलाह । एहने एकटा आर घटना थिक । हिनक पत्नीक मृत्यु भऽ गेल छलनि । तत्काल हिनकापर कोनो प्रतिक्रिया नहि भेलनि । मुदा दोसर दिन भोरमे चाह पीबा काल ई अपन पत्नीक स्मृतिक पीड़ाकेँ सम्हारि नहि सकलाह । आँखिसँ अजस्र नोरक धार फूटि पड़लनि ।

ई एकटा भिन्न वात छल जे शेखरजी ककरो मुहेँ ककरो निन्दा सुनि शीघ्र विश्वास कऽ लैत छलाह तथा ओकरा सङ्ग ओहने व्यवहारक लेल तुरन्त तैयार भऽ जाइत छलाह । मुदा जखन हुनका क्यौ हुनकर गलती सुझा दैत छलनि तँ तकरा गछबामे सेहो कनेको देरी नहि लगैत छलनि । एकर ई तात्पर्य नहि जे हुनका अपन मर्यादाक ध्यान नहि रहैत छलनि । अपन मर्यादाक गरिमाक रक्षार्थ सादिखन तैयार रहैत छलाह । ओ बिनु बजौल कतहुनहि जाथि । कोनो साहित्यिक कार्यक्रमोमे नहि ।

ओ अपना कारणेँ कतौ सम्पादकक मर्यादाकेँ कम नहि होमऽ देलनि । मुदा जखन ओ कुर्सीसँ हटि डेरा जाइत छलाह, हुनकर ओ रूप नहि रहैत छलनि। अत्यन्त सरल भावक भऽ जाइत छलाह । साहित्यकारक सङ्ग उठबा-वैसबामे हुनका कतहु भाङठ नहि होइत छलनि । कतहु ककरो सङ्ग चाह पीवि लेब आ कि पान खा लेब हुनक सम्पादकक व्यक्तित्वकेँ प्रभावित नहि करैत छलनि ।

सम्पादन करवा काल ओ सभटा परिचय ओ सम्बन्ध बिसरि एकटा दबङ्ग सम्पादकक रूपमे पत्रक अनुरूपे रचनाक चयन ओ प्रकाशनक स्वीकृति दैत छलाह । ककरो रचनामे खगता भेने कलम लगा दैत छलाह । बरु ताहि कारणेँ अनेक बेर अनेक लेखकक कोप भाजने किएक ने होमऽ पड़ल होनि । कोनो परिस्थितिमे अपन सिद्धान्तसँ विरत नहि होइत छलाह । जे बात एकबेर सोचि लैत छलाह, ओहिपर अडिग भऽ जाइत छलाह । हँ, सोचमे त्रुटिक बोध भेलाक बाद तकर संशोधनो करबामे ने कनेको विलम्ब करैत छलाह आ ने मानापमान-बोध ।

तात्पर्य जे शेखरजीक जीवन खतिऔल छलनि । कतहु फेँट-फाँट नहि । सम्पादकक

रूपमे ओ कठोर छलाह तँ कवि-कथाकार, नाटककार-उपन्यासकारक रूपमे सरल ओ मृदु ।

अनावश्यक व्यय करबाकाल मितव्ययी छलाह तँ आवश्यक कार्यमे कनेको कोताही नहि करैत छलाह । उदार छलाह । साहित्यमे नवीनताक पक्षधर छलाह तँ प्राचीन सांकृतिक धरातलक प्रति अखण्ड आस्थावान छलाह । ओ जाहि सिद्धान्तक प्रतिपादक छलाह तकरा अपनो आचरणक लेल आवश्यक बूझि क्रियाशील रहैत छलाह । कथनी आ करनीमे भिन्नता नहि छलनि ।

प्रेरणा

साहित्य हिनक रक्त छलनि । कौलिक संस्कारक रूपमे साहित्य हिनका भेटल छलनि । नेनपनेसँ कोनो ने कोनो रूपमे साहित्यसँ जुड़ल रहलाह । मुदा मैथिली लिखबाक प्रेरणा हिनका *आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'* (मैथिलीक वयोवृद्ध कवि-साहित्यकार) सँ प्राप्त भेलनि ।

ओहिसँ पूर्व शेखरजी हिन्दीमे लिखैत छलाह, जहि क्रममे हिनका श्री सुमनजीक साहचर्य प्राप्त भेलनि । हिनक पहिल हिन्दी कविता-सङ्ग्रह प्रकाशित होयबा लेल छल। *'पथ पर'* नामक ओहि पोथीक भूमिका *'पाथेय'* नामसँ सुमनजी लिखलनि । प्रायः ओही क्रममे सुमनजी हिनका मैथिली लिखबाक लेल प्रेरित कयलथिन । ओही समयसँ ई मैथिली लिखब शुरुओ कऽ देलनि । एकर प्रमाण ओही पोथीमे साटल *डा. अमरनाथ झाक* मन्तव्यसँ भेटैत अछि —'....पथपर पढ़लहुँ, पढ़ि प्रसन्न भेलहुँ । पद भावपूर्ण अछि..... साहित्य सेवा करैत रहू। मैथिलीमे लिखब आरम्भ कयलहुँ से सन्तोषक विषय ।'

प्रेरणा-पुरुषक रूपमे सुमनजीक प्रति अपन हृदयक भावकेँ प्रकट करैत शेखरजी स्वयम् कहने छथि— 'हमरा जेहन प्रेरणा भेटल सुमनजीसँ तेहन किनकोसँ नहि । हमरा सुमनजीसँ सर्वदा नीक व्यवहार भेटल; आनमे देखौआ बात रहै, हुनकामे से नहि ।'

मुदा मैथिली-क्षेत्रमे पदार्पणक पश्चातो आरम्भमे मैथिली लिखबाक गति मद्धिम रहलनि । बेसी हिन्दीए लीखथि । तकरा पाछाँ मुख्य कारण छल मैथिली पोथीक प्रकाशकक अल्पता किंवा अभाव ओ पाठकक कमी । लेखन हिनक जीविका छलनि । से मैथिली पोथीसँ सम्भव नहि छल । जखन हुनक—*'दो पाटन के बीच'* नामक उपन्यास (जे पाछाँ तऽर पट्टा ऊपर पट्टा नामसँ छपल) केँ मैथिलीमे रहने बेसी नीक होयबाक गप्प डा. रामदेव झा (मैथिलीक उच्च कोटिक कथाकार, नाटककार आदि) कहने रहथि तँ शेखरजी व्यथित होइत बाजल छलाह—'....मुदा ई छापत के ? हिन्दीमे छपलापर किछु पाइयो भऽ जायत; मैथिलीमे तँ किछु ने । अहाँ तँ जनिते छी जे हमर पूजी आ हथियार कलमे थिक ।'

तेँ भावना रहितो मैथिलीक लेल बहुत किछु नहि कऽ पबैत छलाह । फलतः

शुरूमे मन बँटल रहलनि । मुदा *'मिथिला-मिहिर'* मे अयलाक बाद सम्पूर्णतः मैथिलीक भऽ गेलाह आ पछाति मातृभाषाक तेहन अनुरागी भेलाह जे हिनक लेखनीसँ बहरैलनि—

"ओ कपूत अछि
मातृभूमि भाषापर जकरा छै ने कनेको ध्यान
ओ बिल्कुल हैवान
हैवानो जँ कही तँ होइछ हैवानक अपमान "

'मिथिला-मिहिर'सँ सम्बद्ध भेलाक बाद हिन्दी लिखबाक विवशता समाप्त भऽ गेलनि । तेँ पटना अयलाक बाद शेखरजी सुमनजीक कथनकेँ बीज मन्त्र जकाँ मानि ओहिपर चलय लगलाह— 'मैथिलीक जे क्षेत्र छैक से एकदम खाली छैक, किछु नहि छैक, से अहाँ दिऔ ।'

मैथिलीमे ओहि समय धरि वस्तुतः बड़ अभाव छलैक । शेखरजी ओहि अभावक पूर्त्ति हेतु दत्तचित्त भऽ जुटि गेलाह ।

जहिना मैथिली लिखबाक लेल शेखरजी सुमनजीसँ प्रेरणा ग्रहण कयलनि तहिना साहित्यिक विषयक उपस्थापना, वातावरण निर्माण आदिक दिशामे बङला साहित्यसँ प्रभावित भेलाह । ओना बङलाक कोनो साहित्यकार विशेषक प्रभाव हिनकापर नहि छलनि । मुदा मिथिला आ बङ्गालक वातावरण जन्य समता होयवाक कारणेँ बङला साहित्य हिनका आकृष्ट करैत छलनि । तकरे यत्-किञ्चित् छाप हिनक रचनापर कहि सकैत छी ।

प्रतिभा

शेखरजी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार छलाह । साहित्यक कोनो विशेष विधासँ हिनक लेखनी बान्हल नहि छलनि । ई जाहि कोनो विधामे रचना कयलनि से विशिष्टे रहल । कथा, कविता, निबन्ध, उपन्यास, नाटक, आलोचना सभ क्षेत्रमे हिनक लेखनी एक रङ्ग रहल । ई चर्वित-चर्वणाक पक्षपाती नहि छलाह । हिनकामे कारयित्री ओ भावयित्री दुहू प्रतिभा छलनि । कहल गेल अछि—'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभामता ।' अर्थात् जे ज्ञानकेँ नव-नव दृष्टि देअय से प्रतिभा थिक ।

शेखरजी जाहि कोनो विधामे कलम चलौलनि ओहिमे सर्वथा हिनक नवीन दृष्टि देखबामे अबैत अछि । आलोचना सदृश शास्त्रीय विषयहुमे सर्वत्र हिनक मौलिकता परिलक्षित होइत अछि । ई शास्त्रीय विषयकेँ उठाय, पूर्व आचार्य लोकनिक मतक व्याख्या अपना ढङ्गेँ कयने छथि ।

साहित्य-सर्जनाक प्रतिभा हिनकामे बाल्यावस्थेसँ छलनि । पाछाँ तँ तेहन उच्च कोटिक साहित्यकार भऽ गेलाह जे केहनो विषय दऽ दियनु, अवधि निश्चित कऽ

दियनु, पात्रक संख्या कहि दियनु— निर्धारित अवधि धरि नाटक तैयार । स्वाभाविक-समर्थ अभिव्यक्ति, स्फीत, सरल भाषाक रचनाकार छलाह शेखरजी ।

ई तेहन प्रतिभावान साहित्यकार छलाह जे कोनो सामान्यसँ सामान्य अथवा दुरूहसँ दुरूह घटनाकेँ अत्यन्त सहजताक सङ्ग तेना उपस्थित करैत छलाह जे ओहि घटना-चक्रक प्रवाहमे पाठक स्वाभाविक प्रवाहित होमऽ लगैछ ।

सम्मान

काव्यक प्रयोजनक प्रसङ्ग विचार करैत *आचार्य मम्मट* सभसँ पहिल प्रयोजन 'यश' केँ मानलनि अछि । वस्तुतः साहित्य-रचनाक श्रीगणेश कोनो साहित्यकार 'यश' मात्रक प्राप्तिक निमित्त करैत अछि । भने ओहि प्रयोजनक सङ्ग आनो प्रयोजन सभ जुटैत चलि जाय । मुदा एकगोट विशुद्ध साहित्यकारक लेल 'यश' सर्वप्रधान प्रयोजन सदिखन बनले रहैत छैक ।

शेखरजी मैथिली साहित्यमे पर्याप्त यश अर्जित कयलनि । उत्कृष्ट साहित्य-सर्जनक लेल 1980 इ. मे *'ई बतहा संसार'* उपन्यासपर साहित्य आकादेमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत होयबाक अतिरिक्त 1950 इ. मे हिन्दी साहित्य परिषद् नागपुर (म. प्र.) द्वारा साहित्याचार्यक उपाधिसँ सम्मानित कयल गेल छलाह । 1987 इ. मे चेतना समिति, पटना सेहो सम्मानित कयलकनि ।

एहि सभ सम्मानसँ बेसी महत्वपूर्ण भेलनि समाजक द्वारा देल गेल यश ओ प्रतिष्ठा ।

निधन

समाजकेँ दिशा-निर्देश कयनिहार, समाजक कल्याणक हित-चिन्ता कयनिहार, समाजक गुण-दोषकेँ मोन राखि समुचित साहित्यिक प्रयास कयनिहार शेखरजीक स्मृति अन्तिम समयमे सङ्ग छोड़ि देलकनि । हठात् ककरो चीन्हथि नहि । बड़ी-बड़ी कालपर अपना भातिजो लोकनिकेँ चीन्हथि । भोजन कयलनि वा नहि तकरो ध्यान नहि रहनि । आ अन्ततोगत्वा 'ब्रेन हैमरेज' होयबाक कारणेँ पटनाक अस्पतालमे भर्ती कयल गेलाह जतय 28 मार्च 1990 केँ निधन भऽ गेलनि ।

शेखरजीक पाञ्चभौतिक शरीर समाप्त भऽ गेलनि, मुदा ओ आइयो अपना कृतिमे जीवित छथि आ रहताह—

'कीर्तिर्यस्य स जीवति ।'

संक्षिप्त कृति-परिचय

शेखरजी अपन जीवनक बहुलांश साहित्य-साधनामे लगौलनि । ओ किशोरावस्थामे जे एहि साधना दिस प्रवृत्त भेलाह से जीवनक अग्रिम भागमे पूर्णतः एकनिष्ठ साहित्य-

साधकक छवि अपन अन्तिम समय धरि बनौने रहलाह ।

एहि क्रममे साहित्य-साधनाक माध्यम बनल मातृभाषा मैथिली ओ राष्ट्रभाषा हिन्दी । दुहू भाषामे शेखरजीक अनेक मौलिक रचना उपलब्ध होइत अछि ।

मैथिलीमे उपलब्ध कृति सभकेँ मुख्यतः दूभागमे बाँटल जा सकैत अछि— गद्य कृति ओ पद्य कृति ।

गद्य कृतिमे पाँचगोट नाटक— *भफाइत चाहक जिनगी; लेटाइत आँचर; पहिल साँझ; लगक दूरी,* ओ *हथटुट्टा कुरसी* (एकाङ्की-सङ्ग्रह), चारि गोट उपन्यास— *तऽर पट्टा-ऊपर पट्टा; दरिद्रछिम्मरि; ई बतहासंसार* ओ *निवेदिता* (एहिमे पहिल ओ अन्तिम उपन्यास 'मिथिला मिहिर'मे धारावाही रूपमे छपल अछि) तथा एकगोट समीक्षात्मक निबन्ध सङ्ग्रह— *'सन्दर्भ'* प्रकाशित अछि ।

पद्य कृतिमे एकमात्र पोथी— *गजल ओ गीत* अद्यावधि प्रकाशित छनि ।

एकर अतिरिक्त हिनक बहुत रास कथा, कविता आदि पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि । तहिना किछु उपन्यास ओ आत्मकथा आदि प्रकाशनक बाट जोहि रहल अछि।

हिन्दीमे हिनक नाटक— *'तमाशा', 'नाटक', 'निकम्मा', 'कर्ज की मार', 'परिवार', 'मै भी इन्सान हूँ';* उपन्यास— *महाकवि पगलेट,* कथा— *जयमाला* ओ *फिल्मी दुनियाँ* तथा कविता— *पथ पर* ओ *फूल और कलियाँ* प्रकाशित छनि ।

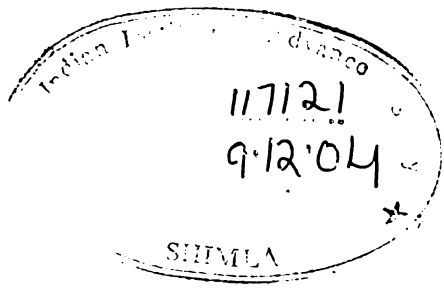

नाट्य कृति

सुधांशु शेखर चौधरी अपनाकेँ मूलतः नाटककार मानैत छलाह । नाटक वस्तुतः साहित्यक आन विधाक अपेक्षा अधिक लोकरुचिक अनुकूल एवं आकर्षक होइत अछि । भारतीय साहित्यशास्त्रक प्रथम उपलब्ध ग्रन्थो भरतमुनिक नाट्यशास्त्रे थिक । तेँ भारतीय साहित्यमे एकर श्रेष्ठता सिद्ध अछि ।

नाट्य-रचनाक सभसँ पैघ कठिनता होइत छैक ओकरा मञ्चोपयोगी बनायव । मञ्चनक अनुभवसँ विहीन व्यक्ति द्वारा लिखित नाटक आन सभ तरहेँ सफल होयबाक पश्चातो मञ्चनक जटिलताक कारणेँ सफल नहि भऽ पवैत अछि ।

शेखरजीकेँ एतबा सुविधा छलनि । ओ स्वयम् बाल्यावस्थेसँ नाटक खेलाइत छलाह । पछाति तँ किछु दिनक लेल नाटके हिनक जीविका सेहो भऽ गेल छलनि । कलकत्ताक रॉयल कम्पनीमे रहि नाटकक प्रायः सभ प्रकारक कार्य ओ ओकर प्रणालीसँ परिचित भैए गेल छलाह । हिन्दी ओ बङला आदि विभिन्न मञ्चक अपूर्व अनुभव प्राप्त छलनिहे । तेँ हिन्दीक सफल मञ्चीय नाट्य-लेखनक अनुभवक कारणेँ जखन मैथिलीमे नाटक लिखबाक लेल प्रेरित भेलाह तँ हिनका समक्ष अनेको समस्या आबि ठाढ़ भऽ गेलनि— अपन पूर्व लिखित हिन्दी नाटक सभसँ आगाँक वस्तु देब तथा मैथिलीमे जीवनक किछु तेहन अवस्था-व्यवस्थाकेँ समेटब जे आनो भारतीय भाषाक लेल स्पृहणीय होइक । एहि सन्दर्भमे विचार करैत ओ स्वयम् कहैत छथि—

"मैथिलीमे हमर नाट्य शिल्प सर्वथा नव कोटिक तँ होयबेक चाही, संगहि अन्यो भारतीय भाषाक लोकमे शिल्पक दृष्टिसँ आँखिपर चढ़ि सकय ।"

दोसर समस्या सांस्कृतिक छलनि । शेखरजी कोनो स्थितिमे अपन संस्कृतिकेँ बिसरबाक पक्षमे नहि छलाह । निश्चित रूपेँ सांस्कृतिक भूमिकेँ छोड़ि देलासँ नाटकमे स्वाभाविकता नहि रहि जाइछ, विशेषतः आधुनिक नाटकक स्वाभाविकता प्राण-तत्त्वे थिक । शेखरजी एहि प्रसङ्ग कहैत छथि जे— आजुक नव नाटकमे 'यदि कोनो रसक अपेक्षा रहैत छैक तँ तकरा स्वाभाविक रस कहि सकैत छिऐक ।'

'असलमे मैथिल लोक-व्यवहारमे मिलन-बिन्दुक कोनो स्थले नहि अछि । अर्थात्

आश्रममे एहन कोनो स्थाने नहि होइत अछि जत' परिवारक एक-एक व्यक्ति— स्त्रीगण आ पुरुषे किएक नहि होअय, एतेक धरि जे भाबहुँ आ भैंसुरे किएक नहि होअय, अवाँछित रूपसँ आबि जा नहि सकैत अछि ।'

तैँ शेखरजी जाहि नवीन नाट्य-शिल्पकेँ अपन मानस मन्थनसँ प्राप्त कयने छलाह ताहिमे मैथिल-पारिवारक घटनाकेँ खपायव कठिन छलैक । फलस्वरूप 1960 इ. मे यद्यपि ओ हिन्दीकेँ नमस्कार कऽ पूर्णरूपसँ मैथिलीमे आबि गेलाह, तथापि मैथिलीमे नाट्य-लेखनमे विलम्ब भेलनि ।

विलम्बेसँ सही, जखन ई मैथिलीमे अपन नाटकक सङ्ग उपस्थित भेलाह तँ ओ शिल्पक दृष्टिजेँ एकदम नव छल । अपन एहि नाटक सभकेँ शेखरजी *काल-खण्डी* नाटकक संज्ञा देने छथि ।

हिनक मतानुसार एकहि काल-खण्डमे घटित होमयवला एहन नाटक जे सम्पूर्ण जीवनक झलक प्रस्तुत करबामे समर्थ हो 'काल-खण्डी' नाटक थिक । जाहिमे घटनाक्रमक गति सतत बनल रहैत छैक । जाहिसँ दर्शकक मन-मस्तिष्कक चिन्तन-प्रवाहमे कतहु व्यतिक्रम नहि अबैत अछि ।

शेखरजीक 'काल-खण्डी' नाटक सभक एकगोट विशिष्टता रहल अछि जे ओहिमे जीवनक कोनो तेहन छोट काल-खण्डक चयन कयल गेल अछि जकरा माध्यमे पात्र-पात्रीक सम्पूर्ण जीवनक अनुमान कयल जा सकैत अछि । ओकर समग्र चिन्तन, चारित्रिकता आदिकेँ दर्शकक लग पहुँचयबामे नाटक पूर्ण समर्थ होइत अछि । हिनक उपलब्ध समस्त नाट्यकृतिकेँ एही आधारपर आँकल जा सकैत अछि ।

भफाइत चाहक जिनगी

मैथिली नाट्यकृतिक रूपमे *भफाइत चाहक जिनगी* शेखरजीक पहिल काल-खण्डी नाटक थिक । जे अपन नव छवि-छटाक सङ्ग उपस्थित भऽ मैथिली नाट्य-जगतमे परिवर्त्तनक सूत्रपात कयलक । ओना शेखरजी एहिसँ पूर्व हिन्दीमे अनेको नाटक लिखि चुकल छलाह, मुदा एहि नाटकक ख्याति ततबा भेलैक जे हुनका स्वयम् सेहो एकगोट नव उत्साहक प्राप्ति भेलनि आ लगले आरो नाटक लिखलनि ।

एहि नाटकक मञ्चन सर्वप्रथम चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति-स्मृति-पर्व समारोहक अवसरपर 1974 इ. मे भेल छल । पछाति 1975 इ. मे एकर पुस्तकाकार प्रकाशन समिति द्वारा भेलैक ।

प्रस्तुत नाटकक नामकरणक प्रसङ्ग स्वयम् शेखरजीक कथन छनि—"हम जे नाटकक नाम रखने छी से प्रतीकात्मक अछि । भफाइत चाहक अभिप्राय होइत अछि गरम चाह । गरम चाह दर्शयबामे दू टा प्रतीकार्थ व्यञ्जक शब्द अछि—गरम आ भाफ । भाफ उड़िक' बिला जायबला तत्त्व अछि आ सर्दक विपरीतार्थ द्योतक अछि । तैँ हम

पोथीक नाम रखबामे ई मानिक' चलल छी जे युवकक पूर्वक जे किछु सोचल छलैक से भाफ जकाँ उड़िक' विलीन भऽ रहलैक अछि मुदा ओकरा भीतरमे गरमी छैक वर्त्तमानसँ ठठि सकबाक । अर्थात् ओ अस्तित्वरक्षाक संघर्षक हेतु प्रस्तुत अछि ।''

नाटकक आरम्भ होइत अछि महेशक चाहक दोकानसँ ओ अन्तो एहीठाम होइत अछि । अधिकांश घटनाक्रम एही दोकानपर घटित होइत अछि । किञ्चित विद्यापति-पर्वहुकेँ दोग बाटे देखबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

नाटकक नायक महेश शिक्षित नवयुवक अछि जे अपन मेधाक बलपर एम.ए. पास कयने अछि । मुदा नवम् पत्र (पैरवी)क अभावमे ओ अपन सहपाठिनी सरितासँ पछुआ जाइत अछि । ओकरा एम.ए. मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त नहि होइत छैक । वेरोजगार महेश चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति-पर्व- समारोहमे चाहक दोकान खोलैत अछि । ओकरा चाहक दोकान खोलने देखि ओकर सङ्डी दिगम्बर दुत्कारैत छैक । परञ्च महेश अपन सटीक तर्कसँ दिगम्बरकेँ सन्तुष्ट करैत ओकरा समक्ष प्रेरणा-पुरुषक रूपमे ठाढ़ होइत अछि । तखने इञ्जीनियर उमानाथ अपन पत्नी चन्द्रमाक सङ्ग ओतय अबैत छथि । अंग्रेजी सभ्यता-संस्कृतिमे रङल, मातृभाषाक आत्मगौरवसँ शून्य उमानाथ हिन्दीमे चाह मङैत छथि आ महेशक टोकलापर विगड़ि जाइत छथि । दुहूक बीच-बचाव चन्द्रमा करैत छथि जे कला-संस्कृतिसँ रूचि रखनिहारि थिकीह । मातृभाषानुरागिणी चन्द्रमा महेशक पक्ष लऽ उमानाथकेँ शान्त करैत छथि । पछाति काव्यपाठक लेल महेशक नामक घोषणा मञ्चसँ होइत अछि । महेश चन्द्रमाकेँ दोकान देखबाक आग्रह कऽ चलि जाइत अछि । चन्द्रमा महेशक अनुपस्थितिमे ओकर दोकान चलबय लगैत छथि जे उमानाथकेँ नीक नहि लगैत छनि ।

महेश जखन काव्यपाठ कऽ घुरैत अछि तँ चन्द्रमाकेँ दोकान चलवैत देखि ओकरा पश्चात्ताप होइत छैक । एही बीच महेशक सहपाठिनी सरिता सेहो आतय आबि जाइत छथि । महेशकेँ एहि रूपमे देखि हुनका आत्मिक क्लेश होइत छनि । दुनू गोटे अपन-अपन परिस्थिति आदिपर बतिआय लगैत छथि । तखने उमानाथ, जे चन्द्रमाकेँ दोकान चलबैत देखि खिसिया कऽ चलि गेल छलाह, फेर घूरि अबैत छथि आ महेशक सङ्ग लड़बा-भिड़वा लेल उद्यत होइत छथि । मुदा सरिता द्वारा महेशक शिक्षित होयबाक बात सुनि ओकरा प्रति श्रद्धा होइत छनि । एतहि नाटकक चरम परिणति होइत छैक ।

नाटकमे कुल बारह गोट पात्र, दू गोट पात्री ओ चारि गोट डमी पात्र अछि । जाहिमे मुख्य पात्र अछि महेश, दिगम्बर ओ उमानाथ । पात्रीमे चन्द्रमा ओ सरिता थिकीह जाहिमे चन्द्रमा प्रधान छथि । नाटकक सभ पात्रक चरित्र स्पष्ट ओ उपयुक्त अछि ।

महेश मेधावी छात्र होइतो जखन परिस्थितिसँ गछाड़ल जाइत अछि तँ ओ नोकरीक

लौल छोड़ि चाहक दोकान खोलि लैत अछि। अपन जीविका स्वयम् तैयार करैत अछि। एहि लेल ओकरा हृदयमे कोनो पछतावा नहि छैक। ओ अपन जीविकासँ सन्तुष्ट अछि। महेश चाकरीकेँ आ अपन बाँहिक बलपर जिउनाइकेँ दू नहि बुझैछ; आने स्वतन्त्र व्यवसाय जकाँ चाकरीयोकेँ जीविकाक एकगोट साधन बुझैत अछि।

भीतरसँ दबङ्ग ओ निष्ठावान महेशक हृदयमे मातृभाषाक प्रति अखण्ड अनुराग छैक। मैथिलीमे कवितो लिखैत अछि। ओ माङि कऽ पोथी नहि पढ़ैत अछि। एतऽ धरि जे चेतना समिति द्वारा प्रकाशित पोथी जखन चन्द्रमा ओकरा उपहारस्वरूप देबय चाहैत छथि तँ ओ अस्वीकार कऽ दैत अछि।

ओ अत्यन्त शालीन नवयुवक अछि। ओ एहिठाम चाह बेचैत अछि, मुदा अपना गाममे एहि बातक भनको नहि लागय दैत अछि। ओकर पिता बुझैत छथिन जे हुनक बेटा कतहु नोकरी कऽ रहल छनि। तेँ ओ सन्तुष्ट छथि। महेश अपन चाहक व्यवसायक सूचना दऽ पिताक प्राचीन विचारकेँ ठेस पहुँचाबय नहि चाहैत अछि। ओ जे बुझैत छथि बुझथु। ओ गामक पुरान लोक छथि। ओ अपना दुनियाँमे जीबैत छथि आ ई अपना दुनियाँमे जीबैत अछि।

ठीक एकर विपरीत नोकरीक खोजमे बी. ए. पास दिगम्बर बौआयल घुरैए। कुल-मर्यादाक नामपर बेलक मारल बबूर तऽर भेल घुरैए। अपन परिचितक ओहिठाम छौ माससँ पेट पोसने घुमल-घुरनिहार दिगम्बर पहिने तँ महेशकेँ दुत्कारैत छैक पछाति महेशकेँ प्रेरणा-पुरुषक रूपमे स्वीकारि लैत अछि।

तहिना चन्द्रमोक जीवनमे बनावटीपन नहि छैक। ओहो निरर्थक बड़प्पनक चद्दरि नहि ओढ़ने अछि। कोनो काजकेँ छोट नहि मानैत अछि।

सम्पूर्ण नाटकमे जीवनक प्रति नव ओ पुरान दृष्टिक दुइ गोट युवक ओ युवतीकेँ सोझामे राखि दू पीढ़ीक लोकक मानसिकताकेँ फड़िछौल गेल अछि। सङ्गहि विद्यापति-पर्वक क्रममे उपस्थित असमाहि जनसमुदायक मैथिलीक प्रति अनुरक्ति ओ विरक्तिक सटीक चित्र उपस्थापित कयल गेल अछि। वस्तुतः लोकक भीड़ मातृभाषाक प्रति अनुरागसँ कम गीत-नादक आकर्षणसँ बेसी जुटैत अछि।

एहि तथ्यक अतिरिक्त आधुनिक युगक विडम्बना, पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृतिक प्रति आकर्षित होइत मनोवृत्ति आदिक यथार्थता दृष्टिगत होइत अछि।

लेटाइत आँचर

'लेटाइत आँचर' शेखरजी-लिखित मैथिलीक दोसर कालखण्डी नाटक अछि। एहू नाटकक प्रथम मञ्चन 1975 इ. मे चेतना समिति पटना द्वारा भेल। पश्चात् 1976 इ. मे एही संस्थाक द्वारा प्रकाशितो भेल।

नाटकक नामकरण ममता नामक पात्रीकेँ ध्यानमे राखि कयल गेल अछि। जकर

आँचर सामाजिक कुप्रथाक कारणेँ सभदिन लेटाइते रहलैक । ओकर मातृत्व सन्तानक लेल जीवन भरि हाहाकार करिते रहलैक । प्रकाशनसँ पूर्व एहि नाटकक नाम 'ढहैत देबाल' सेहो प्रचारित भेल छल ।

एकर कारण छल नाटकक कथावस्तु । शेखरजीक नाटकमे मूल कथावस्तुक सङ्ग एक अथवा अनेक अन्तः प्रवाह रहैत अछि । एहू नाटकमे सैह देखबामे अबैछ ।

नाटकक मूल-प्रवाह दहेजरूपी कुप्रथाक दुष्परिणामस्वरूप अतृप्त मातृत्व अछि तँ अन्तःप्रवाह अछि समाजक एकगोट सशक्त, प्रभावी ओ अनिवार्य संस्था परिवारक विघटन । आ तेँ शेखरजी एहि नाटकमे *'ढहैत देबाल'* आ *'लेटाइत आँचर'* दुहूक प्रवाहकेँ स्वीकरैत छथि ।

नाटकक समस्त घटनावली एकहि ठाम रमानाथ द्वारा लेल गेल किरायाक मकानमे सम्पन्न होइत अछि । कतहु कोनो दृश्य-परिवर्त्तन आदिक आवश्यकते नहि छैक ।

नाटकक आरम्भ दीनानाथक पचीस वर्षीया एकमात्र पुत्री ममताक असन्तुलित मानसिकताक उपस्थापनाक सङ्ग होइत अछि । ममता पति-परित्यक्ता अछि । ओकर पति रेडियो, मोटरसाइकिल आदि नहि भेटबाक कारणेँ दोसर विवाह कऽ लेलकैक अछि । एहि आघातकेँ ओकर नारी-हृदय सहन नहि कऽ सकलैक । ओ बताहि भऽ गेलि । मुदा बतहपनियोक अवस्थामे ओकर मातृत्व सन्तानक लेल अहुछिया कटैत रहैत छैक । दीनानाथक तेसर पुत्र मोदनाथ जे डाक्टरी पढ़ि रहल अछि तकरा प्रसङ्ग घटकैतीमे एकगोट प्रोफेसर उपस्थित होइत छथि । माँझिल पुत्र हेमनाथ ओ स्वयम् दीनानाथ एहि विवाहमे लेनदेनक पक्षधर छथि । दुहू बाप-पूत ममताक स्थितिकेँ बिसरि कन्यागतसँ टाकाक अतिरिक्त मोटरसाइकिल आदिक माङ करैत छथि । मुदा मोदनाथकेँ अपन बहिनिक स्थिति मोन छैक । ओ विवाह करब तँ गछि लैत अछि, मुदा लेनदेनक मुखर विरोध करैत अछि । होमयवला श्वसुर प्रोफेसर साहेबक गोरलगाइक टाका पर्यन्त घुरा दैत अछि । घटकलोकनि मोदनाथक एहि व्यवहारसँ पहिने तँ थोड़े सशङ्क होइत छथि, मुदा पछाति आश्वस्त होइत छथि । नाटकक अन्त ममताक मार्मिक कथनसँ होइत अछि । नाटकमे एही कथाकेँ विस्तार देल गेल छैक । ओना एहि मूल-प्रवाहक सङ्ग पारिवारिक स्नेह ओ समरसताक ढहैत देबालक अन्तःप्रवाह सेहो प्रवाहित होइत रहैछ ।

नाटकमे दस गोट पुरुष पात्र अछि, जाहिमे दीनानाथ, रमानाथ, हेमनाथ ओ मोदनाथ प्रमुख छथि । दुइगोट स्त्री पात्रमे ममता प्रमुख अछि ।

भैयारीमे सभसँ पैघ रमानाथ किरानी अछि । व्यवहारकुशल, स्पष्टवादी एवं गम्भीर व्यक्तित्वक स्वामी रमानाथक आय सीमित छैक । जाहि कारणेँ ओकरा परिवारमे पिता ओ माँझिल भायक तिरष्कार सहय पड़ैत छैक । ओकरे सहयोगसँ हेमनाथ इञ्जीनियर बनबामे सफल होइछ । तथापि ओकरा द्वारा कयल जायवला अपमानकेँ रमानाथ अनठबैत रहैत अछि । मकानक किराया आदि वैह दैत अछि, मुदा हेमनाथक सुविधाक लेल

अपने कष्ट सहैत अछि । एतेक भेलोपर रमानाथ पारिवारिक विघटन नहि चाहैछ । ओकरा अन्तरमे पिता ओ भाय द्वारा मोजर नहि देबाक व्यथा सालैत रहैत छैक । तथापि ओ मौनावलम्बन कऽ धैर्यक परिचय दैछ ।

रमानाथ समस्त परिस्थितिपर विचार-मन्थन करैत रहैत अछि । आ ओहिसँ प्राप्त निष्कर्षमे ओकर चिन्तना-शक्तिक परिचय भेटैत अछि । अपन मित्र नरेशक सङ्ग गप्पक क्रममे ओ पारिवारिक समाजवादक आवश्यकतापर जोर दैत सभटा भ्रष्टाचारक जड़ि परिवारकेँ मानैत कहैत अछि— "भ्रष्टाचार परिवारमे जन्म लैए..... परिवारसँ समाजमे जाइए आ तखन अनेक ठाम अनेक रूपमे व्यक्त होइए । आ सभसँ पैघ बात ई जे घरक मुखिये एकर जन्मदाता होइत छथि ।"

आर्थिक आधारपर परिवारमे भेटयवला मान्यतापर कटाक्ष करैत अपन उपर्युक्त कथनक समर्थनमे ओ कहैत अछि— "जे व्यक्ति आश्रममे वेसी दैत अछि तकरा तिलकोराक पात··· दूध-दही, जे कम देनिहार वा नै देनिहार तकरा कुर्थीक दालि ।"

दीनानाथ ओ हेमनाथक चरित्रमे समानता अछि । दीनानाथ मास्टर छलाह । राष्ट्रक भावी पीढ़ीक निर्माता रहि चुकल छलाह । मुदा हुनक चरित्रमे शालीनता, भौतिकवादी सुविधाक लिप्तासँ दूर रहबाक गुण आदिक विपरीत विचार देखबामे अबैत अछि । ओ परिवारक प्रधान रहितो अपन कर्त्तव्यक निर्वाह नहि करैत छथि । ज्येष्ठ पुत्रक प्रति हुनक व्यवहार नीक नहि छनि । एतेक धरि जे ममता हुनका कहैत छनि— 'अहाँ ककरो बाप नै छिऐ... अहाँ... अहाँ रुपैया टाक बाप छी ।' ममताक एहि कथनमे हुनक अर्थ-लोलुपता स्पष्ट होइछ । एतबे नहि; ओ तेहन विचार-शून्य छथि जे अपन एकमात्र बेटी ममताक जीवनकेँ दहेजक आगिमे सुड्डाह होइत देखियो कऽ मोदनाथक विवाहमे दहेज लेबाक पक्षधर छथि । हुनका हेमनाथसँ खूब पटैत छनि ।

हेमनाथ व्यवहार-शून्य, दम्भी ओ लोभी अछि । व्यवहारिकताक अभाव ओकरामे ततेक वेसी छैक जे रमानाथक मित्र नरेश जखन अबैत अछि तँ ओकरा घटक बूझि ओ स्वागत करैछ । आ वास्तविकताक ज्ञान होइते ओकर व्यवहार रुच्छ भऽ जाइत छैक । ओकर एही रुच्छताक कारणेँ नरेश हेमनाथकेँ लक्ष्य करैत रमानाथसँ पुछैत छैक— 'तोँ ओहि सज्जनक किरायेदार छहुन आ कि वैह तोहर किरायेदार छथुन ?'

हेमनाथकेँ इञ्जीनियर होयबाक दम्भ छैक । ओ मनुष्यक श्रेष्ठता ओकर आर्थिक परिस्थिति वा पदसँ अँकैत अछि । परिवारोमे ओ एही मानसिकतासँ अनका प्रति व्यवहार करैत अछि । अग्रज रमानाथकेँ ओ भाय नहि किरानी बुझैत अछि । भाउज लोकनिक प्रति सेहो ओकर व्यवहार उचित नहि रहैत छैक । ओकरामे अवसरवादिता ओ लोभक सन्निवेश बेस छैक । एकदिस ओ नरेशकेँ घटक बूझि प्रफुल्लतासँ स्वागत करैछ तँ दोसर दिस मोदनाथक विवाहमे मोटरसाइकिल लेबाक पाछाँ ओकर अपन स्वार्थ छैक ।

ओ मोदनाथकेँ सेहो अपना रङ्गमे रङबाक चेष्टा करैत अछि ।

मोदनाथक चरित्रमे आदर्श ओ दृढ़ताक निवेश छैक । ओ शालीन आ विनम्र अछि । आधुनिक शिक्षा पबितो ओकरामे हेमनाथ जकाँ औद्धत्य नहि छैक । ज्येष्ठ-श्रेष्ठक सम्मान करब, हुनका समक्ष बैसब नहि आदि गुणसँ ओ पूर्ण अछि । अर्थ-प्रधानताकेँ स्वीकारब, वा आर्थिक आधारपर ककरो प्रति व्यवहारक निर्धारण करब ओकरा नहि रुचैत छैक । हेमनाथक व्यवहार ओकरा नीक नहि लगैत छैक से ओ अपन जेठकी भाउज कमलाक सङ्ग गप्पक क्रममे स्पष्ट करैत अछि—'भौजी, हमरा मझिला भाइ नै बूझि लियऽ ।' मोदनाथ हेमनाथक सहयोगसँ पढ़ैत अछि । मुदा अवसर अयलापर ओकरो प्रतिकार करबासँ नहि चुकैत अछि । ओ पिता ओ भ्राताकेँ आदरणीय मानैत अछि; परञ्चू बेर अयलापर हुनका लोकनिक गर्हित विचारक विरोध दृढ़ताक सङ्ग करैत अछि । ममताक परिस्थितिकेँ बिसरब ओकरा वुतेँ सम्भव नहि छैक । ओ ममताक दुःस्थितिक जाड़ि दहेजकेँ चिन्हैत अछि आ तेँ अपना विवाहमे लेनदेनक मुखर विरोध करैत अछि । ओ स्पष्ट शब्दमे कहैत अछि—'विवाहमे जँ लेनदेन भेलैक तँ विवाह रुकि जायत।'

भाय ओ पिताकेँ दहेज लेवालेल दुत्कारबामे ओकरा कनेको सङ्कोच नहि होइत छैक । ओ पिताकेँ कहैत अछि—'बावू, घरमे अछैत ममता बहिन अहाँकेँ बिसरा गेल, अहाँकेँ ई बिसरा गेल जे लेन-देनक कारण ओ दुर्गति भोगि रहल अछि । अहाँ बिसरि जैयौ....आजीवन हमरा ई बिसरल पार नै लगि सकैए । धर्मतः कहैत छी बावू, जे ओकर कष्टक जाड़ि छै, हम तकरा काटब, जिनगी भरि कटैत रहब ।'

मोदनाथकेँ मनुक्खोसँ बढ़ि टाकाक महत्व स्वीकारब नहि अरघैत छैक—'आशीर्वादमे रुपैया, विवाह-दानमे रुपैया....सभ कथूमे रुपैया....जेना सभ किछु रुपैये होइ....मनुक्ख किछु ने होअय....मनुक्खक हृदय किछु ने होइ ।'

अपन एही दृढ़ताक कारणेँ ओ पिताकेँ विचार बदलबा लेल विवश करबामे सफल होइछ आ समाजक युवकक सोझाँ प्रेरक वनि जाइत अछि ।

प्रस्तुत नाटकमे ममताक स्थिति बड़ कारुणिक छैक । आद्यन्त ओकर चरित्र परिस्थितिसँ गछाड़ल-पछाड़ल गेल सन्तानक लेल लालायित विक्षिप्ताक रुपमे प्रकट होइत अछि । ओना ममता विक्षिप्ता अछि, ओकर व्यवहार असन्तुलित होइत छैक; मुदा ओकर कथनमे कतहु एकर दर्शन नहि होइछ । ठाम-ठाम अपन संवादक माध्यमे ओ सामाजिक-सांस्कृतिक ओ पारिवारिक व्यवस्थामे उपस्थित कटु-सत्यक दर्शन करवैत अछि । बताहि होइतो ओ अपना परिवारक एक-एक सदस्यक चरित्रसँ नीक जकाँ अवगत अछि । ओकर प्रत्येक कथनमे वास्तविकताक पुट छैक । पिताकेँ रुपैयाक बाप कहब आ पिता द्वारा रमानाथ, हेमनाथ एवम् मोदनाथक प्रति अपनौल जायवला व्यवहारमे

अन्तरक सम्बन्धमे ओकर कथन एही वास्तविकतासँ परिचित करबैत अछि—'अहाँ बच्चा भैयाकेँ दुरदुरौने रहै छियनि....लाल भैयाक लल्लो-चप्पोमे लागल रहै छी....जे काल्हि डाक्टर बनता तनिका छनन-मनन खोअवैत छियनि ।'

तहिना समाजमे बेटा-बेटीक मध्य कयल जायवला अन्तरकेँ स्पष्ट करैत ओ कहैत अछि—'बेटामे लोभक कारण लोक पूजी लगबैए आ बेटीकेँ फेकि दैए कत्तौ ।' ओकर एहि कथनमे अपना परिस्थितिक कारणक रूपमे बेटा-बेटीक मध्य कयल जायवला यैह अन्तर छैक । ममता विक्षिप्ता अछि मुदा जखन ओ सामाजिक व्यवस्थाक प्रसङ्ग अपन विचार प्रकट करैत अछि तँ बताहि नहि बूझि पड़ैछ ।

नाटकक अन्तमे दाबल पीचल जाइत मैथिल ललनाक स्वर; ओकर अन्तर्द्वन्द्व देखबामे अबैछ । मोदनाथक विवाह तय भऽ गेलाक बाद जखन ओ रबरक बाबा (खेलौना) केँ कहैत छैक—'....लिखिहेँ, बाबू अहाँ मायकेँ किए छोड़ि देलिऐ....किए रेडियो आ साइकिलसँ बेकार बुझलिऐ....।' तँ समाजक पतनशीलता, भौतिकवादक बढ़ैत महत्ता, मानवक संवेदन शून्यता आदिक चित्र सोझाँमे आबि ठाढ़ भऽ जाइत अछि ।

सम्प्रति परिवारमे जे आर्थिक आधारपर मूल्याङ्कनक परम्परा सन्हिया गेल अछि नाटककार तकरहु अपन दृष्टिपर राखि ओकर सशक्त आलोचना कयने छथि । वस्तुतः परिवार ओ कार्यालयमे पर्याप्त अन्तर होइत छैक । कार्यालयक जेठ-छोटक आधार परिवारमे नहि चलबाक चाही । अपना ओहिठामक व्यवहारमे सम्बन्धक आधारपर जेठ छोटक निर्धारणक परम्परा रहल अछि जे आइ नष्ट भऽ रहल अछि । नाटककार शेखरजीक सूक्ष्म दृष्टि वर्त्तमानक सोचकेर एहू ढङ्गकेँ लगसँ देखलक अछि ।

पहिल साँझ

'पहिल साँझ' शेखरजीक तेसर प्रकाशित मैथिली नाटक अछि । एहिमे दू पीढ़ीक बीचक रहन-सहन, आचार-विचार, चिन्तन आदिक अन्तरकेँ फड़िछौल गेल अछि । एहू नाटकक मञ्चन चेतना समिति पटना द्वारा सर्वप्रथम 1978 इ. मे भेल छल । पछाति मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1982 इ. मे प्रकाशित भेल ।

नाटककार एहि नाटककेँ अपन पहिला दुनू नाटकक नाट्य-शिल्पक विकसित रूप कहैत छथि । सङ्गहि पूर्वक दुहू नाटकक अपेक्षा एकर कथावस्तुकेँ सेहो सुगठित होयब स्वीकारैत छथि ।

नाटकमे मात्र छौ गोट पात्र-पात्री अछि— रमाकान्त, उदयकान्त, उमाकान्त, गङ्गानाथ, भुवनेश्वरी ओ भारती ।

रमाकान्त गाममे रहनिहार गृहस्थ छथि । हुनक जेठ बालक उदयकान्त नगरमे रहि नोकरी करैत अछि जे अपन छोट भाय उमाकान्तकेँ अपने सङ्ग राखि पढ़बैत

अछि । उमाकान्त इञ्जीनियरिंगमे पढ़ि रहल अछि । भारती उदयकान्तक पत्नी थिकीह जनिका वर्ष दिनुका एकगोट बच्चा छनि । भुवनेश्वरी, उदयकान्त ओ उमाकान्तक माय एवम् रमाकान्तक पत्नी थिकीह आ गङ्गानाथ उदयकान्तक मित्र छथि ।

एहि नाटकक कथावस्तु संक्षिप्त होइतो प्रभावोत्पादक अछि । नाटकक आरम्भ उदयकान्तक वर्ष दिनुका बालकक जन्मदिन मनयबाक तैयारीसँ होइत अछि । उदयकान्त, उमाकान्त, गङ्गानाथ ओ भारती ओहि तैयारीमे लागल छथि कि बीचहिमे गामसँ पिता रमाकान्त भुवनेश्वरीक सङ्ग ओतय उपस्थित होइत छथि । ओ परिवारक लोककेँ अस्त-व्यस्त देखि अकचकाइत छथि । ओ जन्मदिन मनौनाइकेँ अपव्यय मानैत छथि । गाममे भूमि अर्जनक लेल उदयकान्तसँ टाका उपलब्ध होयबाक सम्भावना नहि देखि खौँझा जाइत छथि । आ अन्ततः पहिले साँझ अपन झोरी लऽ बिदा भऽ जाइत छथि । जन्मदिनक तैयारी तैयारिए रहि जाइछ । नाटक समाप्त भऽ जाइत अछि ।

एहि छोट सन घटनाक माध्यमे दुइ पीढ़ीक लोकक रहन-सहन, आचार-विचार, चिन्तन ओ मान्यता आदिकेँ उधेसि कऽ देखल गेल अछि । जेना कोनो केवाड़क फाट बाटे सम्पूर्ण घरक वस्तु-जातकेँ हुलकी मारि देखि लेल जाइत अछि ।

रमाकान्त गाममे जमीन कीनबकेँ प्रतिष्ठा मानैत छथि । अपन कमौआ बेटाक बलपर भूमि कीनि ओ ककरोसँ द्वेम नहि रहय चाहैत छथि । तेँ बेटा उदयकान्तपर सदिखन टाकाक लेल दवाब बनौने रहैत छथि । उदयकान्तक असहयोगक स्थितिमे छोट बेटा उमाकान्तक विवाह कतहु टाका गनाय करबाक ओ ओहि टाकासँ जमीन किनबाक नेयार करैत छथि, जाहिसँ कमौआ बेटाक बाप बनि धाख जमा सकथि । मुदा ताहूमे सफलता नहि भेटैत छनि ।

ओ प्राचीनताक पक्षधर छथि । हुनकामे रूढ़िवादिता, स्वार्थपरता आदि भरल छनि । रूढ़िवादिता तँ ततेक बेसी छनि जे पौत्रक अस्वस्थताक निवारण मात्र दुर्गापाठसँ मानैत छथि । ओ उदयकान्तक दरमाहाक टोह ओकर मित्र गङ्गानाथसँ लेबाक प्रयास करैत छथि आ एहि क्रममे बाइली (घूस) आमदनीकेँ अधलाह नहि मानैत छथि— 'एते आदमी जे बाइली आमदनीसँ कोठा पीटि लेलक-ए, सभ बैमाने अछि ? हम तँ बुझै छी, जकरा लूरि छै से बेस कमा लैए... घर भरि लैए आ जे अलूरि अछि से मूँहेँ तकैत रहि जाइए । नै ?'

स्वार्थी तेहन जे भुवनेश्वरी द्वारा ज्ञात भेलापर अपन पौत्रक जन्मदिनक तुलना वर्षीसँ कऽ दैत छथि—'बरसगेंठ रहै कि वर्खी, हम किछु नै बाजी सएह ने अहाँ कहै छी ?'

दोसर दिस उदयकान्त नगरक जीवनमे रचि-पचि जयबाक प्रयास कऽ रहल अछि । घूस-पैँचसँ दूर रहि निर्धारित मासिक वेतनक बलपर छोट भायकेँ पढ़बितो

अछि आ डेराक खर्चो चलबैत अछि । पिता द्वारा आर्थिक सहयोगक अपेक्षा कयलापर थोड़-बहुत सहायतो कऽ दैत छनि । ओकर रहन-सहन नगरीय छैक । कने साफ-सूफ रहय पड़ैत छैके । घरमे टेबुल-कुर्सी-सोफा राखहि पड़ैत छैक । ओ गामक आर्थिक प्रतिस्पर्द्धाकेँ नीक नहि मानैत अछि ।

उदयकान्त सहनशील अछि । पिता द्वारा अनेको वेर असहनीय व्यवहार कयलोपर ओ अपन सहनशीलताक परित्याग नहि करैत अछि । वैचारिक अन्तर रहितो कतहु पुत्र-धर्मक त्याग नहि करैछ ।

उदयकान्तक सहकर्मी मित्र गङ्गानाथक विचार सेहो उदयकान्तेक समान छैक । हँ ! ओ थोड़े उत्साही अवश्य अछि । जतय उदयकान्त अनठयबाक प्रयास करैत अछि ओतय ओ रमाकान्तकेँ वास्तविकताक अनुभव करयबाक निमित्त खोध-वेद सेहो कऽ दैत अछि । प्राचीन व्यवस्था वा मानसिकतासँ ओकरो विरोध छैक । ओ तँ एते धरि मानैत अछि जे घूस-घासकेँ प्रचलित करवामे गाममे रंहनिहार घरक लोकक हाथ रहैत छैक—'हम तँ ई कहव' जे सभठाम जे घूस-घासक साम्राज्य पसरल देखै छहक तकर जड़िमे एकटा ई शोषणो छै । घरेसँ टाका जुटयबाक लेल मोकल जाइ छै ..... बेचारा नोकरिहारा मोनकेँ शान्ति देबाक आशामे हाथ-पयर मारैए ..... चोराक' घूस लैए.....।'

छोट भाय उमाकान्त ओ पत्नी भारती सेहो नगरीय जीवन पसिन्न करैत अछि ।

भुवनेश्वरी, वेटा ओ वापक वीच किंवा प्राचीनता ओ नव्यताक बीच अपना भरि सन्तुलन बनयबाक चेष्टा करैत रहैत छथि । घड़ीक पेण्डुलम जकाँ खन बामा, खन दहिना भऽ नव ओ पुरानक वीच तारतम्य स्थापित करबाक सतत चेष्टा करैत रहैत छथि ।

एहि कालखण्डी नाटकमे एकदिस दू पीढ़ीक बीच बढ़ैत अन्तरकेँ रेखाङ्कित कयल गेल अछि तँ दोसर दिस गाम ओ शहरक बीच अवैत अन्तरकेँ सेहो स्पष्ट कयल गेल अछि । ई दूरी गाम ओ नगर एवम् दुनू पीढ़ीक विपरीत दिशामे होयबाक कारणेँ बढ़ल जा रहल छैक । जकर सुदूरोमे कतहु मिलन-बिन्दु परिलक्षित नहि होइत अछि ।

नाटक नव्यताक सङ्गहि सांस्कृतिक सुरक्षामे सेहो सफल भेल अछि । पुतहु भारती आ कि पुत्र उदयकान्त ओ उमाकान्त पितासँ भिन्न विचार रखितो कतहु मर्यादाक उल्लंघन नहि करैत छथि । शेखरजी जतय एकदिस नवीनताक आग्रही थिकाह ओतय दोसर दिस अपन सांस्कृतिक सुरक्षाक लेल सचेष्ट सेहो ।

लगक दूरी

सर्वथा नवीन शैलीमे लिखल गेल मैथिली नाटक *'लगक दूरी'* मे 'फ्लैश बैक' पद्धतिक माध्यमे, मनुक्ख आ कि जीव मात्र कोना लगसँ दूर किंवा अपनसँ आन भऽ जाइत अछि अथवा दूर होयबाक लेल प्राकृतिक नियमानुसार बाध्य होइत अछि

तकर चित्रण कयल गेल अछि ।

स्वाभाविक रूपसँ चिड़ै-चुनमुन्नीसँ लऽ मनुक्ख धरिक लेल सभसँ लग होइत छैक ओकर सन्तान । मुदा समयक अन्तराल भेलापर सन्तानहुँ ओकरासँ परिस्थितिवश दूर अति दूर भऽ जाइत छैक । ओ सौँसे घर-परिवारमे एकसरुआ भऽ रहबाक लेल बाध्य भऽ जाइत अछि ।

'लगक दूरी' मे वर्त्तमानक एही सत्यकेँ उद्‌घाटित कयल गेल अछि । पहिने लोक पुस्त-दर-पुस्त एकहि ठाम एकहि परिवारमे रहैत छल । मुदा से आइ सम्भव नहि रहि गेल छैक । किछु तँ विवशताक कारणेँ आ किछु व्यक्तिक प्रकृति ओ प्रवृत्तिक कारणेँ।

एहि नाटकमे पछिला नाटकक अपेक्षा पात्रक संख्या बेसी अछि । जतय पछिला नाटकमे मात्र छौ गोट पात्र-पात्री छल ओतय एहिमे डमी पात्रकेँ छोड़ि बारह गोट पात्र अछि ।

नाटकक प्रधान पात्र मास्टर साहेब वृत्तिएँ शिक्षक ओ उच्चकोटिक साहित्यकार छथि ; जनिका साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल जाइत छनि । हुनका तीनगोट पुत्र कामेश्वर, रामेश्वर ओ ज्ञानेश्वर; दुइ गोट पुत्रवधू एवम् दुइगोट पौत्र छनि । यशोदा हुनक पत्नी छथीन । श्रीकान्त शोधकर्ता छथि आ मदनबाबू साहित्यिक मित्र । एकर अतिरिक्त गोविन्द नामक एक पात्र अछि जकरा मकानमे मास्टर साहेब सपरिवार रहैत छथि ।

नाटक श्रीकान्त द्वारा मास्टर साहेबपर शोधक निमित्त हुनकासँ भेँट करबासँ आरम्भ होइत अछि । श्रीकान्तक पुछलापर मास्टर साहेब अपन अतीतमे चलि जाइत छथि— हुनका परिवारमे कुल नौ गोट सदस्य छनि । जेठका बेटा कामेश्वर इञ्जीनियर छनि जे अपन आमदनीक टाका बचाय घर बनयबाक लेल पत्नीक नामसँ जमीन कीनि अपन डेरा फराक कऽ लैत अछि । छोटका बेटाकेँ पढ़बा-लिखबामे उछतगर नहि रहबाक कारणेँ मास्टर साहेब ओकरा खेती-पथारीक भार दऽ यशोदाक सङ्ग गाम पठा दैत छथि । लगमे रहि जाइत छनि मझिला बेटा रामेश्वर, मझिली पुतहु आ दू गोट पौत्र । मुदा रामेश्वरोक नोकरीमे पदोन्नतिक सङ्ग बदली भऽ जाइत छैक । ओकरो सभकेँ परिस्थितिसँ बाध्य भऽ मास्टर साहेब फराक कऽ दैत छथि । स्वयम् असगर रहि जाइत छथि । साहित्यकार थिकाह तेँ लेखनमे व्यस्त रहैत छथि । जँ से नहि नँ कोनो चिन्तनमे मग्न रहैत छथि । मुदा लगक एहि दूरीसँ कखनो कऽ उद्वेलित भऽ उठैत छथि । एतहि नाटकक चरम परिणति होइत छैक ।

मास्टर साहेब प्रधानाध्यापक छथि । मुदा एहिसँ बेसी साहित्यकार छथि । तेँ ओ साहित्यकारक एकाकीपन नहि स्वीकारैत छथि । मास्टर साहेबक चरित्रमे एकगोट

स्थितिप्रज्ञ चिन्तकक चित्र उपस्थित कयल गेल अछि। हुनक सम्पूर्ण जीवन अनुशासनमे आवद्ध छनि। अपना बाहुबलपर विश्वास करैत छथि। सन्तानक कमाइक आशा नहि करैत छथि। ककरोसँ कहियो याचना करबाक अवसर नहि अबैत छनि। कारण ओ आय-व्ययमे पर्याप्त सन्तुलन बना कऽ रखने छथि। स्वाभिमानी मास्टर साहेब आत्म-प्रचारसँ घृणा करैत छथि। सन्तानक प्रति शुभाकांक्षा रखनिहार ओ छोटका बेटा ज्ञानेश्वरक परीक्षाफल ओ जेठ बेटाक व्यवहारसँ मर्माहत भऽ उठैत छथि। मुदा दृढ़ निर्णयी मास्टर साहेब गम्भीरतासँ विचारि निर्णय लैत छथि। ओना तँ ओ अत्यन्त गम्भीर व्यक्तित्वक स्वामी छथि, मुदा कामेश्वरक घर छोड़ि चल गेलापर आ ज्ञानेश्वरक असफलतापर विचलित भऽ उठैत छथि। एकदिस ज्ञानेश्वरक असफलतासँ छात्रलोकनि द्वारा आनल गेल मिठाइकेँ ओ बिक्ख कहैत छथि तँ दोसर दिस कामेश्वरक घर छोड़ि देबाक कारणेँ अनमयस्क भऽ जाइत छथि, पढ़व-लिखब सेहो नियमित नहि रहि जाइत छनि।

ओ दयालु आ इमनदार लोक छथि। जाहि मकानमे किरायापर रहैत छथि तकर स्वामी अछि गोविन्द। जखन ओ अपन मकान मास्टर साहेवक हाथे वेचवाक प्रस्ताव करैत अछि तँ ओकरो आवासक सम्वन्धमे विचार कऽ मास्टर साहेव समुचित प्रबन्ध करैत छथि। हुनकापर गोविन्दकेँ ततेक आस्था ओ विश्वास छैक जे ओ जमीन ओ मकानक टाका हुनके लग जमा छोड़ि दैत अछि।

मास्टर साहेव जीवनक वास्तविक आनन्द सुख-दुःखक समभावकेँ मानैत छथि। पत्नी यशोदाक प्रति सेहो अनुराग छनि। तेँ पत्नीक स्वर्गवासी भेलाक वाद हुनक अभाव खटकैत छनि। मास्टर साहेवक चरित्र तेहन छनि जे मात्र अपना स्वार्थमे लीन रहनिहार कामेश्वर पर्यन्त हुनक गुणगान करैत छनि। हुनक स्थितिप्रज्ञता तखन स्पष्ट होइत अछि जखन साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृतो भेलापर ओ कोनो अलभ्य लाभक अनुभव नहि करैत छथि आ अपन सन्तान लोकनिकक क्रमशः लगसँ दूर होयबाकेँ सेहो एकगोट शाश्वत प्रक्रिया मानि लैत छथि।

कामेश्वर स्वार्थी अछि। आर्थिक सवलताक लेल ओ सदिखन प्रयत्नशील रहैत अछि। परिवारमे रहबाक पाछाँ ओकर एकमात्र उद्देश्य छैक अर्थ-सञ्चय कऽ व्यक्तिगत सुखोपभोग करब। एहि लेल ओ अपना पत्नीकेँ सेहो सिखबैत-पढ़वैत अछि। पिता ओ माताक प्रति कयल जायवाला कर्त्तव्यसँ सर्वथा फराक रहनिहार कामेश्वर अपना विवाह पर्यन्तमे पिताक विरूद्ध जा टाका गनवैत अछि आ पछाति पत्नीक नामसँ जमीन कीनि अपन डेरा फराक कऽ लैत अछि। ओकर प्रत्येक क्रिया-कलापमे वैयक्तिकता, कर्त्तव्यच्युतता देखबामे अवैछ। पिताक गुणगानोमे ओकर भविष्यक लाभार्थ पत्नीकेँ बुझयवेक भाव छैक।

एकर विपरीत रामेश्वर एकगोट आदर्श पुत्र अछि। ओकर व्यवहार शालीनतासँ

भरल छैक । ओ पिताक देख-रेख मनोयोगसँ करैत अछि । हुनकापर ध्यान रखैत अछि । गोविन्दसँ मकान किनबा काल आर्थिक सहयोगो करैत अछि । पितासँ ओकरा आत्मिक लगाव छैक तेँ पदोन्नतिक सङ्ग बदली भऽ गेलापर ओ योगदान करय नहि चाहैत अछि । पिताक प्रतिष्ठा ओ लोकप्रियताक ओकरा गौरव छैक ।

पतिक सहगामिनी यशोदा पतिक गम्भीरता, निर्णय, यश आदिसँ प्रफुल्लित रहैत छथि । पतिक साहित्यिक गतिविधिक सहायिका बनलि रहनिहारि यशोदा हुनक पाण्डुलिपिकेँ गहना जकाँ संजोगि कऽ रखैत छथि । ओही सहेजलहा पाण्डुलिपिक पोथीपर मास्टर साहेब पुरस्कृतो होइत छथि । ओ मास्टर साहेबक ततेक सहयोगी रहैत छथि जे हुनका अभावमे मास्टर साहेबकेँ घर होटलक समान प्रतीत होइत छनि । हुनका जेठकी पुतहु नहि सोहाइत छनि । ओकर व्यवहार, पढ़ल-लिखल रहबाक मिथ्याभिमान, बेटाक प्रति टाका गनायब आदि नहि रुचैत छनि । समग्रतः यशोदा अपना पतिक विचारानुकूल छथि । मास्टर साहेबकेँ जे नीक लगैत छनि से हुनको नीक लगैत छनि आ जे हुनका अधलाह लगैत छनि से यशोदाकेँ सेहो । एकवाक्यमे जँ कही तँ बैह कहि सकैत छी जे यशोदा मास्टर साहेबक वास्तविक अर्द्धाङ्गिनी थिकीह ।

जखन कि जेठकी पुतहु पैघ (धनसँ) बापक बेटी होयबाक, पतिक हाकिम होयबाक, अपन पढ़लि-लिखलि होयबाक मिथ्याभिमानसँ ग्रस्त छथि । ओ आश्रमक कोनो काज करय नहि चाहैत छथि । सासु-ससुरक धाख मानब, हुनक अनुशासनमे रहब हुनका सह्य नहि होइत छनि । आ जखन काज-धन्धा आरम्भो करैत छथि तँ ओहिमे स्वार्थ रहैत छनि ।

ठीक एकर विपरीत मझिली पुतहु सहनशील, परिवारकेँ अपन बुझनाहरि, गृहस्थीक सम्पूर्ण भार उघनिहारि थिकीह । ओ मास्टर साहेबकेँ पिता मानैत छथि । हुनक बुद्धिक सराहना स्वयम् मास्टर साहेब करैत छथि आ अपन एही गुण सभक कारणेँ ओ हुनकासँ बेटी सम्बोधन पर्यन्त पयबामे सफल होइत छथि ।

ओना तँ नाटकमे सभटा पात्र-पात्रीक चरित्र सन्तुलित अछि, मुदा मास्टर साहेबक चारित्रक उपस्थापना ततेक सबल ओ जीवन्त अछि जे आन सभक चरित्रकेँ छापि लैत अछि ।

एहि नाटकक प्रथम मञ्चन 1987 इ. मे नाट्य-संस्था 'भङ्गिमा' द्वारा भेल आ तकर बाद शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 1992 इ. मे प्रकाशित भेल ।

नाटकक 'फ्लैश बैक' शैलीमे रचनाक कारण अछि घटनाक स्थल ओ कालक अन्तरालक भिन्नताकेँ उजागर करबाक अनिवार्यता । एहि नाटकमे पर्याप्त रङ्गमञ्चीय निर्देश देल गेल अछि । एते धरि जे प्रकाश-योजना पर्यन्तक निर्देश देल गेल छैक ।

नाटकमे युगधर्म, पारिवारिक विशृंखलताक कारण, व्यक्तिक पारस्परिक बढ़ैत दूरी आदि बहुत रास समस्याकेँ सशक्त ढङ्गसँ उठौल गेल अछि ।

हथटुट्टा कुरसी

एकाङ्की नाट्य-विधाक एकगोट प्रमुख प्रकार थिक । एकर स्थल अनेको भऽ सकैत अछि मुदा विषयक दृष्टिकोणसँ एहिमे जीवनक कोनो एके खण्ड चित्रित होइत अछि ।

शेखरजी साहित्यक आने विधा जकाँ अनेको एकाङ्कीक रचना कयलनि । जाहिमेसँ अनेको यत्र-तत्र छिड़िआयल अछि ।

प्रस्तुत *'हथटुट्टा कुरसी'* नामक एकाङ्की-सङ्ग्रह शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 1992 इ. मे प्रकाशित भेल । एहिमे तीन गोट एकाङ्की— *आँखिक परदा, बेलक मारल* आ *हथटुट्टा कुरसी* सङ्कलित अछि । जे साहित्य-जगतमे लोकप्रिय अछि आ तीनू मैथिली एकाङ्की मध्य अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि ।

आँखिक परदा

दहेज प्रथाकेँ आधार बना लिखल गेल एहि एकाङ्कीमे कुल सात गोट पात्र-पात्री अछि । पाँच गोट पुरुष पात्र ओ दुइ गोट स्त्री पात्री ।

वारह विगहा जमीन जोतनिहार सुभ्यस्थ गृहस्थ जित्तू अपन वेटी शोभाक विवाह दिगम्वर नामक विद्यार्थीसँ करैत छथि । विवाहक व्यवस्थाक नामपर दू हजार आ विदाइमे एक हजार टाका खर्च करय पड़ैत छनि । पचास टाका मास पढ़वाक खर्च सेहो जमायकेँ देवय पड़ैत छनि । तेँ खेत सभ भरनापर भरना पड़ल जा रहल छनि । एमहर हालति ई भेल छनि जे घरमे सतहत्तरि बीति रहल छनि । एकमात्र वालक विरजूक पढ़वाक लेल कापी- किताव आ स्कूलक फीस सन सामान्य खर्चो नहि जुटा पबैत छथि । ओ स्कूल जायव छोड़ि महिसवार सभक सङ्ग खेलाइत घुरैत अछि ।

ओमहर जमाय दिगम्बर जे दीगू नामेँ सम्बोधित होइत छथि ससुरक टाकाकेँ दोस्त-महीमक सङ्ग ऐश-मौजमे फुकैत रहैत छथि ।

मुदा अन्तमे दीगूकेँ स्थितिक ज्ञान होइत छनि । ओ शिक्षक भऽ गेल छथि । एक दिन स्कूलसँ घुरैत छथि तँ पत्नी शोभाकेँ नोरे दहो-बहो भेल पबैत छथि । जिज्ञासा कयलापर ज्ञात होइत छनि जे हुनके कारणेँ बिरजूक जीवन आइ वरबाद भऽ रहल छैक आ जित्तू तेहन आर्थिक जर्जरताकेँ प्राप्त भऽ गेल छथि जे बीमार रहैत दबाइयो करयबाक स्थितिमे नहि छथि । एहि परिस्थितिक ज्ञान भेलापर दिगूकेँ घोर पश्चाताप होइत छनि । ओ अपनाकेँ दोषी मानि पश्चाताप करय चाहैत छथि । ओ विरजूकेँ अपना लग राखि पढ़यवाक, जित्तूकेँ अपनहि ओहिठाम राखि इलाज करायब निश्चित करैत छथि । हुनका आँखिपर लागल परदा हटि जाइत छनि । एहि प्रसङ्ग ओ शोभाकेँ कहैत छथि—

"हमर पापक कोनो सजाय नहि भऽ सकैए । एक हमहीं नै, हमरा सन-सन हजारो-लाखो दिगम्बर हजारो-लाखो बाबूकेँ तबाह कयलकनि आ कऽ रहल छनि । हजारो-लाखो बिरजूक अधिकार छीनि हमरा सन-सन नराधम समाजमे अगुआ पुजबैत अछि ।...आइ जे अपना समाजमे प्रोफेसर, डाक्टर...इंजीनियर आ ने जानि, कोन-कोन पद पाबि ऐँठि रहल छथि तैमेसँ कतेको लोक ससूरैक आ सारैक सुख-सुविधाकेँ लूटि मओज मना रहल छथि ।"

एकाङ्कीमे दिगूक जीवनक दुइ गोट चित्र उपस्थित कयल गेल अछि—आरम्भक छात्र जीवनक ओ बादक जीवनक । हुनक छात्र जीवन अवश्य ससुरक टाकापर होटल, सिनेमा ओ सङ्गी-साथीक बीच गुलछर्रा उड़बयवला रहलनि, मुदा जखन वस्तुस्थितिक बोध होइत छनि तँ ओ एकगोट समाजक निर्माणकर्त्ताक रूपमे ठाढ़ होइत छथि । ओ अपन अध्यापनमे छात्रलोकनिकेँ ईहो पढ़यबाक निश्चय करैत छथि जे—

'मर्द ओ जे बापक कमाइसँ पढ़य ।'

सम्पूर्ण एकङ्कीमे मात्र जुगलक उपस्थिति थोड़े कालक लेल भेल अछि । ओ समाजमे समर्थवानोक बेटाकेँ ससुरेक टाकापर पढ़वाक चर्च तँ करैछ, मुदा स्वयम् अपना लेल कोनो गुदगर असामी तकैत अछि ।

पाँच दृश्यमे समायोजित ई एकाङ्की अपन सन्देश देवामे पूर्ण क्षम अछि ।

बेलक मारल

वर्त्तमानकालीन नगरीय जीवनमे अति निम्न ओ मध्यमवर्गीय सामाजिक जीवनक सटीक चित्र एहि एकाङ्कीमे उपस्थापित कयल गेल अछि ।

एहिमे चारि गोट पुरुष पात्र—नारायण, कमल, सिपाही आ विनोद एवम् दुइ गोट स्त्री पात्री—लक्ष्मी आ माया; कुल छौ गोट पात्र-पात्री अछि ।

नारायण सड़कक कातमे देबाल लगा ठाढ़ कयल घास-पातक खोपड़ीमे जीवन-यापन कयनिहार एकगोट नाङर भिखमङ्गा अछि । लछमी ओकर पत्नी छैक । कमल एहने कीड़ा-मकोड़ा सन जीवन जिउनिहार वर्गक एकगोट पढ़ल-लिखल नाटककार ओ दलितोद्धारक युवक अछि तथा माया आ विनोद दलितोद्धारकक स्वाङ्ग रचनिहार युवती आ युवक अछि । सिपाही घटनाकेँ गति प्रदान करबाक ओ जोड़बाक सहयोगी पात्र अछि ।

एकाङ्की नारायण द्वारा कतहुसँ कुकुरक छुइल दस गोट रोटी पयबाक प्रसन्नतासँ आरम्भ होइत अछि । नारायण ओहि दसो रोटीकेँ लऽ बड़ आह्लादसँ बैसाखीपर पैँड़ मारैत अबैत अछि । अबिते देरी लछमीकेँ नहि पाबि हाक लगबैत अछि । लछमी सड़कपर खसल खुद्दी हँसोथब छोड़ि अबैत छैक । नारायण हाथक रोटीकेँ नुका ओकरा बुझौअलि बुझबैत छैक—'बाज की अनने छी ?' आ लछमीक हठ कयलापर दसो

रोटी ओकरा धरा दैत छैक । पैघ लोक जकाँ आइ ओहो 'फिफ्टी-फिफ्टी' खायत । दुनू खायब आरम्भ करैत अछि । तखने सिपाही आवि ओकरा सभकेँ ओतयसँ खोपड़ी नहि हटयबाक कारणेँ बैजत करैत छैक । ओहि दऽ पैघ-पैघ अफसर, लीडर आदि चलैत छथि तेँ तुरन्त खोपड़ी हटयबालेल कहैत अछि । नारायण आ लछमी जल्दीए हटा लेबाक वात कहैत सिपाहीकेँ मनयबाक चेष्टा करैत अछि । परञ्च सिपाही नहि मानैत अछि ओ दुनूक हाथक रोटी छीनि मोड़ीमे फेकि लाठी आ बूटक प्रहारसँ खोपड़ीकेँ ध्वसत कऽ दैछ । लछमी आ नारायण सिपाहीकेँ सरापय लगैत छैक । सिपाही क्रोधमे लाठी चलबैत अछि जे नारायणक बैसाखीपर लगैत छैक । नारायण खसि पड़ैछ । सिपाही दुनूकेँ लाठी ओ पैरक ठोकरसँ मारैत अछि जाहिसँ दुहूक कपार फूटि जाइत छैक । सिपाही नारायणकेँ थाना लऽ जाइछ जकरा पाछाँ-पाछाँ लछमी सेहो कनैत-पिटैत विदा भऽ जाइत अछि ।

एमहर जाहि देवालसँ लागल ओ खोपड़ी छलैक ताहि मकानसँ माया बहराइत अछि । ओ सिपाही द्वारा उनटौल-पुनटौल वस्तु-जातकेँ देखय लगैछ कि तखने ओहिठाम कमल उपस्थित होइत अछि । माया ओ कमलक वीच सामाजिक ओ आर्थिक विषमता आदि विषयपर नोंक-झोंक होमऽ लगैत छैक । माया दलितोद्धार करबाक निमित्त 'चैरीटी शो' क आयोजन करयवाली छलीह । ओही दिन मायाक सहयोगी विनोद सेहो ओतय आवयवला छल नारायण ओ लछमीक उद्धारक हेतु । अवितो अछि, मुदा तावत ओकरा सभक दुर्दशा भऽ गेल रहैत छैक ।

एमहर नारायण ओ लछमी थानासँ शोणितायल घुरि अबैत अछि । माया आ विनोद ओकरा सभक प्रति फुसिआह संवेदना व्यक्त करैत अछि । जकर कमल खण्डन करैत अछि । विनोद आ कमलमे कहा-कही भऽ जाइत छैक । विनोद उत्तेजित भऽ कमलपर लपकैत अछि । ता कमल पाछाँ हटि जाइत अछि, जाहिसँ विनोदकेँ ओकर चद्दरि पकड़ा जाइत छैक । कमल उघार भऽ जाइत अछि । ओकर केहुनीसँ नीचाँ दुनू हाथक गलल चाम देखि विनोद घृणासँ भरि उठैत अछि । दलितोद्धार करवाक गप्प कहनिहार माया ओ विनोद ओतयसँ प्रस्थान करैत अछि । नारायण ओ लछमी कमलकेँ पुनः चद्दरि ओढ़ा दैत अछि । लछमी जिज्ञासा करैत छैक—'की यैह सभ आइ आबयवला छलाह ?' कमल हुनका लोकनिक वास्तविकताक उद्घाटन करैत हुनक मनुष्यतापर ठहाका लगवैत अछि । एतहि एकाङ्कीक चरम परिणति होइत छैक ।

एकाङ्कीक सम्पूर्ण घटना सड़कक कातक एकगोट मकानक देवालक सटल फुटपाथपर घटित होइत अछि । एक सेटक एहि एकाङ्कीकेँ एकहि ठाम, एकहि कालखण्डमे सम्पूर्ण होयबाक कारणेँ एक स्थानीय कालखण्डी एकाङ्की कहि सकैत छिऐक । ओना श्री अनिल कुमार मिश्र शेखरजीसूँ अन्तरङ्ग वार्त्ताक आधारपर अपन पोथी 'नाटककार

शेखर'मे एहि एकाङ्कीकेँ *'कटल हाथ'* नामक तीन सेटक नाटकक प्रथम सेट वा अंश कहैत छथि । मुदा एहि सूचनासँ प्रस्तुत एकाङ्कीक छविपर कोनो आघात नहि लगैत छैक, कतहु अपूर्णताक बोध नहि होइछ ।

सम्पूर्ण एकाङ्कीमे मध्यवर्गीय समाजक प्रपञ्चपूर्ण चरित्रकेँ उजागर कयल गेल अछि । विनोद तँ कमल द्वारा गप्पमे गछाड़ल गेलापर एतेक धरि कहि जाइत अछि— 'व्यक्तिगत रूपसँ हमरा एहि कीड़ा-मकोड़ासँ कोनो सहानुभूति नहि अछि ।'

एकाङ्कीमे एकाङ्कीकार वर्त्तमानकालमे समाजमे होइत मानव-मूल्यक ह्रास, अर्थक महत्ता ओ मानवताक सङ्गहि कला पर्यन्तक कुरूप परिहासक नग्न रूपकेँ सोझाँमे रखलनि अछि ।

मानवताक एहिसँ अधिक उपहास की होयतैक जे, जे व्यवस्था एकदिस सड़कपर चलैत कोनो पैघ लोककेँ टूटल-भाङल खोपड़ीपर नजरि नहि पड़ैक ताहि हेतु ककरो घर उजारैत अछि, भूखलक हाथसँ कुकुरक छुइल रोटी छीनि फेकैत अछि । जखन कि ककरो कुकुरो मोटरपर चलैत छैक ; माछ-मासु खाइत अछि ; पलङ्गपर सुतैत अछि ।

ई तँ मध्यकालीन सामन्ती व्यवस्थाक चरम थिक जे वर्त्तमान स्वातन्त्र्योत्तर कालोमे विभिन्न रूपमे विद्यमान अछिए । मुदा एहूसँ गर्हित वात अछि सामाजिक सम्मानक निमित्त दलितोद्धारकक स्वाङ्ग रचनिहार कलाकार वर्गक क्रिया-कलाप । वस्तुतः ई कला नहि ; कलाक व्यभिचार थिक । भीतर-भीतर चूड़ा-दही आ ऊपरसँ रामनामवला संस्कृतिकेर विकास थिक । नहि तँ कतय एहन लाचारक पूछ छैक । ओ मरि किएक ने जाय ओकरा कतहु क्यौ पुछनिहार नहि छैक । अस्पताल आ कि आने कोनो ठाम टकेवलाक पूछ छैक । निकौड़ियाक भगवाने रक्षक ।

हथदुट्टा कुरसी

एहि एकाङ्कीमे सन्तानक प्रति ममतासँ भरल पिताक हृदयक विशालताक सङ्ग लोकक गामक प्रति बढ़ैत वितृष्णा ओ नगरक प्रति बढ़ैत आकर्षणक भाव चित्रित भेल अछि । एकर कथानक संक्षिप्त अछि । मुदा प्रभावक दृष्टिञेँ एकाङ्की-जगतमे एकर महत्वपूर्ण स्थान छैक । एहिमे मात्र तीन गोट पात्र अछि— नेनमणि, कण्टीर आ डाकपीन ।

नेनेमणि गृहस्थ छथि । हुनक जेठ बालक कण्टीर सेहो गृहस्थ छथि, खेती-पथारी करैत छथि । दोसर बालक हरे भागलपुरमे डिप्टी कलक्टर छथि । पिता अनेक बेर गाम अयबाक प्रसङ्ग लिखने रहथिन तँ अयबाक चेष्टा करबाक गप्प लीखथि । मुदा जेँ कि एहि बेर स्वयम् गाम अयबाक गप्प लिखने छथि तेँ पिताकेँ हुनक अयबाक पूर्ण आशा छनि । परञ्च् कण्टीरकेँ से विश्वास नहि होइत छनि ।

हरेक आगमनक तैयारीसँ एकाङ्की आरम्भ होइत अछि । नेनमणि अपन पुत्रक आगमनमे घर-दलान साफ करा दलानपर चौकी धयने छथि । हरेक बैसबाक लेल गामेक

बोचबाबूसँ कुर्सी मङबौलनि अछि । बोचवाबू एकटा हथटुट्टा कुर्सी पठबा दैत छथिन । नेनमणिकेँ अपन कमौआ बेटाक लेल हथटुट्टा कुर्सी उपयुक्त नहि बुझना जाइत छनि । मुदा दोसर वाट नहि देखि ओकरे तेलपनिञाँ कऽ चमका देबाक लेल कण्टीरकेँ कहैत छथि ।

एमहर हरेक आगमनक तैयारी चलिए रहल अछि कि तखने डाकपीन चिट्ठ लऽ कऽ अबैत अछि । जाहिमे लिखल छैक जे हरे एहूवेर गाम नहि आबि सकताह । एकगोट मित्रक आग्रहपर सपरिवार काश्मीर जा रहल छथि ।

नेनमणिक सभटा हुलासपर पानि पड़ि जाइत छनि । ओ मर्माहत भऽ उठैत छथि । तथापि हुनका हृदयमे हरेक प्रति शुभकामना रहैत छनि । कण्टीरक कहलापर जे—'वावू हम जनिते रही । ओ आब भला एहि देहातमे की करए अओताह ।' उत्तरमे नेनमणि दीर्घ निसाँस छोड़ैत कहैत छथि—'तोँ एखन नेना छह । बापक हृदय केहन होइ छैक, की वुझबहक । कतेक जतनसँ हम गाछ रोपलहुँ, मुदा फुलाए-फड़क वेरमे.... जाए दैह, हरे कतहु रहथु सुखी रहथु ।'

एहि छोट सन उद्गारमे जहाँ नेनमणिक पुत्र-निर्माणक सम्पूर्ण कामना-कथा नुकायल अछि ततहि सन्तानक प्रति पिताक हृदयक अथाह स्नेह-सागरक असीम उधियान चरमकेँ छूबैत अछि ।

सम्पूर्ण एकाङ्कीमे एकगोट छोट सन घटनाक द्वारा मिथिलाक गाममे रहनिहार, अपन साधनाक वलपर पुत्र-निर्माता पिताक हृदयक पुत्रकेँ देखबाक आकुलतामे अनन्त सन्तोषक जीवन्त चित्र उत्कीर्ण अछि । समाजमे प्राचीन मान्यता, व्यवस्था, आचार-विचार, व्यवहारकेँ आधुनिकताक नामपर देल जा रहल तिलाञ्जलि आदिक दर्शन करायव एहि एकाङ्कीक प्रमुख उद्देश्य अछि । जतय समाजमे 'जननी जन्मभूमिश्च' केर मन्त्र जपनिहारक अधिकता छलैक ओतय आइ सुख-सुविधाक समक्ष ई मन्त्र निरर्थक सन भेल जा रहल अछि । नेनमणिक एहि कथनमे जे—'... निरसू ई काश्मीर कतऽ छैक ?· एहि गामसँ की ओ सुन्दर स्थान छैक ?' ओही मान्यता, वैह जन्मस्थानक प्रति स्नेह देखबामे अबैत अछि तँ हरेक निर्णय ओहि मान्यताकेँ धराशायी करैत अछि ।

मञ्चन ओ सन्देश-सम्प्रेषणक दृष्टिसँ एकहि स्थानपर एकहि कालखण्डमे सम्पन्न होमयवला ई एकाङ्की शेखरजीक सफल एकाङ्कीकार होयबाक सवल प्रमाण अछि ।

रेडियो नाटक

सम्प्रति रेडियो नाटक एक स्वतन्त्र विधाक रूपमे जानल जाइत अछि । ओना वहुत दिन धरि एकर गणना एकाङ्कीएक रूपमे होइत छल । किछु समीक्षक एखनो एकरा एकाङ्कीए मानैत छथि । मुदा एकर स्वतन्त्र अस्तित्व छैक । कारण एकाङ्की किंवा नाटक मञ्चीय होइत अछि । ओहिमे मञ्चीय निर्देशक अपेक्षा रहैत छैक । ओहिमे

समस्त घटनावली, पात्र-पात्रीक मनोवृत्ति, हाव-भाव आँखिक सोझाँ घटित होमयवला रहैत छैक । जखन कि रेडियो नाटक ध्वनि प्रधान होइत अछि । एहि श्रव्य-विधाक समस्त घटना, पात्र-पात्रीक मानसिकता, चरित्र, क्रिया-कलाप, घटनास्थल, समय आदिक जानकारी सुनि कऽ होइत छैक । एतेक धरि जे दृश्य-परिवर्त्तन पर्यन्तक ज्ञान ध्वनिएक माध्यमे करौल जाइत अछि । पात्रक परिचितिक लेल पैघ-पैघ कथोपकथन ओ समय-सीमाक निर्वहण सेहो आवश्यक होइत छैक । ठाम-ठाम ध्वनि-प्रभाव (sound effect) क निर्देशक एहिमे अपेक्षा रहैत छैक ।

तेँ रेडियो नाटक लिखब एकगोट दुष्कर कार्य थिक । ताहूमे सफलताक वरण करब निश्चित रूपसँ एकगोट महान उपलब्धि ।

शेखरजी पर्याप्त संख्यामे रेडियो नाटक लिखने छथि । हिनक रेडियो नाटकक कोनो स्वतन्त्र प्रकाशित पोथी नहि छनि । आकाशवाणी द्वारा प्रसारित ओ पत्र-पत्रिका आदिमे प्रकाशित नाटक सभ यत्र-तत्र छिड़िआयल छनि । जकरा सभकेँ अद्यावधि समेटल नहि जा सकल अछि । कालक प्रवाहमे शनैः शनैः ई कार्य असम्भव सन भेल जा रहल अछि । गङ्गेश्वर झा 'विह्वल' (डा० गङ्गेश गुञ्जनक नामे ख्यात) हिनक रेडियो नाटकक संख्या बारहगोट कहैत छथि । जखन कि श्री अनिल कुमार मिश्र अपन पोथी 'नाटककार शेखर' मे आकाशवाणी पटनाक अधिकारी लोकनिसँ प्राप्त जानकारीक आधारपर दू सँ अढ़ाइ दर्जनक बीच मानैत छथि ।

उपलब्ध तथ्यक आलोकमे शेखरजीक रेडियो नाटक सभ अछि— *'जय सोमनाथ', 'बहतर', 'चाकरी', 'आँखिक पर्दा', 'परिवार', 'सख-सिहन्ता', 'कहाँ जाइ छी डगरे-डगरे', 'उड़न खटोला', 'उफाँटि', 'नव आँखि, 'सोनाक टुकड़ी', 'पड़ल काज'* आदि ।

एहिठाम शेखरजीक किछु रेडियो नाटकक संक्षिप्त परिचय उपस्थित करब आवश्यक प्रतीत होइत अछि, जाहिसँ विषयक वैविध्यक सङ्गहि संक्षिप्त कथानक सेहो परेखल जा सकय ।

उड़नखटोला

बीससूत्री कार्यक्रमपर आधारित रेडियो नाटक *'उड़नखटोला'* अपना अन्तरमे जमाखोरी, चोरबजारी, नफाखोरी आदि विषयकेँ समेटने अछि । सम्पूर्ण नाटकमे हास्यक पुट छैक जे एकरा अत्यधिक मनोरञ्जक बनबैत अछि । उड़नखटोला उड़ल जा रहल अछि । ओहिपर माम आ भागिन बैसल छथि । माम निभेड़ भेल फोँफ काटि रहल छथि आ भागिन संसारक घटनाचक्रक अवलोकन करैत ओकर व्याख्या करैत जा रहल अछि । ओकरा मामक जागल वा सूतल रहबासँ कोनो मतलब नहि छैक । ओ अपनहिमे मस्त अछि । ओना माम बीच-बीचमे टीप-टाप छोड़ि कऽ सम्पूर्ण नाटकमे ठढ़रे पाड़ैत रहैत छथिन । संसारमे बढ़ैत चोरबजारी ओ ओहिसँ व्याकुल जनमानसक बखान करैत

भागिन जखन उड़नखटोलापरसँ खसैत अछि तँ ओकर निन्न टूटि जाइत छैक । अर्थात् समस्त घटना स्वप्नमे घटित होइत छैक ।

उफाँटि

पारिवारिक समस्यापर लिखित *'उफाँटि'* मे आर्थिक सम्पन्नता ओ पदक मिथ्याभिमानक वेदीपर होमल जा रहल पारस्परिक सम्बन्ध, वन्धुत्व, प्रेम, परिवार आदिकेँ विषय बनौल गेल अछि । 'फ्लैश बैक' शैलीमे रचित एहि नाटकमे क्लर्की कयनिहार जेठ भायक द्वारा पढ़ाओल-लिखाओल गेल छोट भाय हाकिम वनि गेलापर अपन भाग्य-निर्माता ओहि भायकेँ अपनासँ हीन मानैत अछि । एके नगरमे रहलो उत्तर जेठ भायक डेरापर नहि अवैत अछि । एकदिन अवितो अछि तँ तकर उद्देश्य रहैत छैक अपन नवका मोटरगाड़ीक माध्यमे आर्थिक-सम्पन्नताक प्रदर्शन करव । जखन जेठका भायक पत्नीकेँ मोटरपर चढ़बाक लालसा भऽ जाइत छैक तँ अपन इच्छा छोटकी देयादनीसँ कहैत अछि । परञ्च् हुनक ओ इच्छा पूर्णताक वाटे तकैत रहि जाइत अछि । कार्य-व्यस्तताक बात कहि छोटका भाय सपत्नी प्रस्थान कऽ जाइत अछि आ जेठ भाय दुनू प्राणी मोटर द्वारा उड़िऔल धूराकेँ देखैत रहि जाइत छथि । जेठ भायक पत्नी हुनका लोकनिक अयवाक उद्देश्यकेँ स्पष्ट करैछ जाहिपर जेठ भाय सन्तोष प्रकट करैत कहैत छथि जे हुनक परिश्रम सार्थक भेलनि । ओ भने पैघ लोक नहि वनि सकलाह, मुदा छोट भायकेँ पैघ लोक वनयवामे सफल भेलाह अछि ।

नव आँखि

नारी शिक्षासँ सम्वन्धित रेडियो नाटक *'नव आँखि'* मे शिक्षाक आधारपर अनमेल विवाहक समस्याकेँ मुखरित कयल गेल अछि ।

प्रायः समाजमे कन्या वा वरक पिता वर-वधूक शिक्षासँ सम्वन्धित सामञ्जस्य स्थापित करवाक प्रयास नहि करैत छथि । कम पढ़लि अथवा निरक्षर कन्याक विवाह उच्च शिक्षित युवक वा पढ़लि-लिखलि कन्याक विवाह अपढ़ युवकक सङ्ग कऽ देल जाइत अछि । जाहिसँ दाम्पत्य जीवन प्रभावित होयव स्वाभाविके ।

'नव आँखि' मे एही विषयकेँ उपस्थापित कयल गेल अछि । एकगोट शिक्षित युवतीक विवाह तेहना ठाम होइत छैक जतय पढ़वासँ सभकेँ शत्रुते छैक । ओकर पोथी छीनि चूल्हिमे झोँकि देल जाइत छैक आ पछाति पतिसँ प्रताड़िता भऽ ओ घर छोड़बाक लेल विवश भऽ जाइत अछि । घर छोड़ि ओ एकगोट एहन युवतीक ओहिठाम शरण लैत अछि जकर पारिवारिक जीवन ओकर अशिक्षिता होयबाक कारणेँ विघटित भऽ रहल छैक । ओकर विवाह फुसिये मैट्रिक पास कहि कऽ देल गेल रहैत छैक । जखन ओकर निरक्षरता प्रकट होइत छैक तँ ओकर पति घर त्यागि दैत छैक । अपन

शरण-स्थलीक एहन दुर्दशा देखि शिक्षिता युवतीकेँ नव दृष्टि भेटैत छैक । ओ अपना जीवनकेँ नारी-शिक्षामे समर्पित करबाक सङ्कल्प लैत ओही घरसँ एकरा कार्यरूप देबाक निर्णय करैत अछि ।

सोनाक टुकड़ी

समाजमे व्याप्त ऊँच-नीच, छोट-पैघ आदि समस्याक कारणेँ उपस्थित सामाजिक विभेद ओ तकर दुष्परिणामकेँ *'सोनाक टुकड़ी'* मे रेखाङ्कित कयल गेल अछि ।

तथाकथित एकगोट पैघ लोकक विरुद्ध समाजक निम्नवर्गक लोक सभ एकजुट भऽ काज-धन्धा वन्न कऽ दैत अछि । ओ सभ पैघ लोकक जनीजातिकेँ अपने काज करैत देखय चाहैत अछि । पैघलोक ओकरा सभक टोलमे आगि लगबा दैत छथिन । परिणामतः मनोमालिन्य आरो वढ़ि जाइत छैक । सभ नेयार करैत अछि जे जहिया ओ अपना खेतपर औताह हुनक हत्या कऽ अगिलग्गीक बदला लेल जायत । दुहू दिससँ हसेरा-हँसेरी होइछ जाहिमे शान्त-सज्जन चरित्रक खबास अपने लोकक हाथे मारल जाइत अछि । ओकरे कारणेँ ओ पैघलोक बचि जाइत छथि । हुनका अपन कृत्यपर ग्लानि होइत छनि । ओ गामक सभ वर्गक सभा बजाय ओहिमे अपन कुकृत्यकेँ स्वीकारैत खवासक मृत्युक कारण, समाजमे व्याप्त विभेदरूपी विषकेँ मानैत छथि आ अपन सोनाक टुकड़ी सन पाँच बीघा खेत मृत खबासक नामपर कऽ दैत छथि । ओकर स्मारकक निर्माण ओ ओकर चरित्रक अनुशरण कऽ सामाजिक सामञ्जस्य स्थापित करबाक बीजमन्त्र नाटकान्तमे देल जाइत अछि ।

पड़ल काज

साहित्यकार समाजक सर्वाधिक सम्वेदनशील ओ उत्तरदायी व्यक्ति होइत छथि। शेखरजी व्यक्ति, परिवार, समाजक सङ्ग-सङ्ग राष्ट्रीय ओ अन्तरराष्ट्रीय विविध समस्या ओ अपेक्षाक प्रति सतत जागरूक रहलाह ।

भारत-चीन युद्धक समय जखन सम्पूर्ण राष्ट्रक अस्मिता सीमापर जूझि रहल छल, तखन शेखरजी एक सजग साहित्यकारक रूपमे कलम लऽ देशक सभ वर्गक लोककेँ ओकर कर्त्तव्य-वोध करयबामे जुटल छलाह ।

युद्धक समयमे देशक प्रत्येक व्यक्ति सिपाही भऽ जाइत अछि । जे जतहि रहय ओहीठामसँ अपन कर्त्तव्यक द्वारा सीमापर डटल जवानक मनोवल वनौने रहय । तखनहि 'विजयश्री' क प्राप्ति होइत छैक । *'पड़ल काज'* एही सन्दर्भमे लिखित शब्द-नाट्य (रेडियो नाटक) थिक । एहिमे कुल सात गोट पात्र-पात्री अछि— गृहस्थ 'भुल्लर झा', हुनक चरबाह 'फकिरबा', पत्नी 'गुलाबरानी', पुत्र 'ठक्कन', पुत्रवधू 'भैरवी', फकिरवाक माय 'वुधनी' आ पञ्चायतक मुखियाजी ।

नाटकक आरम्भ फकिरबा द्वारा गिरहतनी गुलाबरानीसँ चरवाहीक बाँकी वोनि मङवासँ होइत अछि । साँझक समय छैक । गिरहत-गिरहतनी बोनि देबासँ नकारि दैत छथिन । ओमहरसँ फकिरबाक मायो आबि कऽ बोनि देबाक विरोध करैत अछि । वैह स्पष्ट करैत अछि जे फकिरबा चिनिञाँ सभसँ लड़बालेल जाय चाहैत अछि । भुल्लर ओकरा डाँटि-दबारि कऽ बिदा कऽ दैत छथि । एमहर हुनक बेटा ठक्कन कालेजक पढ़ाइ छोड़ि आबि जाइत छनि । ओ फौजमे भर्ती भऽ गेल अछि । भुल्लर दुनू प्राणी ओकरा मनयबाक असफल प्रयास करैत छथि आ अन्तमे अपनो राष्ट्रहितमे काज करबाक सङ्कल्प लैत छथि । पछाति मुखियाजीक अध्यक्षतामे गामक लोकक बैसार होइत अछि जाहिमे मुखियाजी ओ ठक्कन गामक प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन काज निष्ठा ओ मेहनतिसँ करैत राष्ट्र-सेवामे तत्पर होयवाक सन्देश दैत छथि । ओहि सन्देशक ततेक बेसी प्रभाव होइत छैक जे भैरवी राष्ट्रहितमे अपना योग्य काजक जिज्ञासा करैत छथि । आ नर्सक काज करबाक नेयार कऽ पति ठक्कनकेँ अपन शोणितक ठोप कऽ युद्ध करबाक लेल बिदा करैत छथि ।

प्रायः रेडियो नाटक सभमे प्रचारक अतिरिक्त किछु कहबाक गुञ्जाइश नहि रहैत छैक । तथापि श्रेष्ठ रचनाकारक एहनो कृतिमे हुनक वैशिष्ट्य उद्‌भासित होइत रहैत छनि । शेखरजीक एहि रचना सभमे ओ वैशिष्ट्य देखबामे अबैत अछि । भने ओ वैवाहिक, पारिवारिक, सामजिक किंवा राष्ट्रीय विषयपर लिखित किएक ने हो प्रचारात्मक रहितो तथ्यपरक होयबाक कारणेँ सारस्वत भऽ गेल अछि ।

कथा कृति

कथा कहबाक ओ सुनवाक परम्परा आदौसँ चलि आबि रहल अछि । प्रायः मानवीय सभ्यताक विकासक सङ्ग-सङ्ग । तहिना कथा-लेखन ओ पठनक परम्परा सेहो बड़ प्रचीन अछि । ओना आधुनिक कथा पाश्चात्यक देन मानल जाइत अछि, मुदा ईहो निर्विवाद तथ्य थिक जे कथाक बीज संस्कृते साहित्यमे विद्यमान छैक । जाहिसँ एकर प्राचीनता सवयं सिद्ध अछि ।

मैथिली साहित्यमे कथा-विधा आधुनिक युगक सुउपजा थिक । कवीश्वर चन्दा झा द्वारा प्रवाहित गद्य-विधाक धाराकेँ बेगवती बनयवामे आधुनिक युगक अनेक साहित्यकार अपन महत्वपूर्ण योगदान देलनि, जाहिमे शेखरजी सेहो एकगोट प्रमुख साहित्य-मनीषी थिकाह जनिक विविध रचनावली मैथिली साहित्यक आन विधाक सङ्ग कथा-विधाकेँ सेहो उर्वर बनयबामे महत्वपूर्ण भूमिका निमाहलक । हिनक कथा सभ मैथिली साहित्यमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि, जाहिमे मिथिलाक सांस्कृतिक चेतना ओ युगधर्मक स्वर मुखरित भेल छैक ।

शेखरजीक कथा सभ पत्र-पत्रिका आदिमे यत्र-तत्र छिड़िआयल अछि । हिनक कोनो स्वतन्त्र कथा-सङ्ग्रह प्रकाशित नहि भेल छनि । उपलब्ध कथा सभमे प्रमुख अछि— *'फूलदीदी', 'चिनगी', 'सरस गल्प', 'भारती', 'एकसिंघारा : एक चाय', 'छोटछीन बात', 'पुरान बात', 'युगधर्म', 'जिनगीक बाट', 'सिनेहक आश्वस्ति'* आदि । जाहिमे भोगल यथार्थ, करुणा, संवेदनशीलता, सहज मानवीयता आदि गुणकेँ उपस्थापित कयल गेल अछि । हिनक कथामे ठाम-ठीम बङला साहित्यक प्रभाव दृष्टिगोचर होइछ, मुदा एहि प्रभावसँ कथाक मौलिकतापर आघात नहि होइत छैक । अपितु शिल्प ओ विषयगत वैशिष्ट्यक सङ्ग कथाक भावभूमि मौलिकताकेँ अक्षुण्ण रखने अछि ।

फूलदीदी

एहि कथाक चरित नायिका स्वयम् फूलदीदी थिकीह । जनिक अतीत दुःखसँ भरल रहलनि अछि । अपन पतिकेँ त्यागि फूलदीदी एकगोट मध्यमवर्गीय परिवारमे

बरतन-बासन करैत अपन स्वभावगत विशिष्टताक कारणेँ ओहि परिवारक मान्य ओ अभिन्न सदस्या भऽ जाइत छथि । ओहि घरक दम्पत्ति युगलक असामयिक निधनक पश्चात् हुनकालोकनिक एकमात्र बालकक पालन-पोषण करैत छथि । पढ़ला-लिखलाक बाद ओ बालक नोकरी करय लगैत अछि । पछाति ओकर विवाह होइत छैक । फूलदीदीक घरमे पुतहु आबि जाइत छनि । कालक्रमे एकगोट पौत्र होइत छनि । मुदा हठात् एकदिन फूलदीदीक माय, सासु ओ पितामही बनि जयबाक प्रसन्नतापर तुषारपात भऽ जाइत छनि । जखन एकदिन ओ पौत्रकेँ एक चाट मारैत छथिन तँ पुतहु हुनका कटु सत्य कहैत छनि जे ओ रक्त-सम्बन्धी नहि छथि । अपन पति पर्यन्तकेँ त्यागि देनिहारि फूलदीदी अपन ओ आन शोणितक एहि कठोर प्रहारकेँ नहि पचा पबैत छथि । फूलदीदी जहर खाय आत्महत्या कऽ लैत छथि । जीवन-सङ्ग्रामक प्रत्येक मोर्चापर धैर्य ओ साहसक सङ्ग मोकबिला करयवाली फूलदीदी मानव निर्मित सम्बन्धक परिमापनकेँ नहि पचा पबैत छथि ।

चिनगी

'चिनगी' कथा मध्य वासनावन्त नायक द्वारा प्रेमिका नहि भेटलापर पत्नी गङ्गाकेँ झर्पटि शान्ति प्राप्त करवाक कथाकेँ विस्तार देल गेल अछि ।

सरस गल्प

'सरस गल्प' मे कल्पना ओ यथार्थक सामञ्जस्यकेँ देखौल गेल अछि । दू खण्डमे बँटल एहि कथाक पहिल खण्डमे नायक द्वारा नायिकाक कल्पना काव्यात्मक शैलीमे वर्णित अछि तँ दोसर खण्डमे यथार्थक उपस्थापना भेल अछि । नायक चतुर्थीमे नायिकाकेँ मुँह देखौन दैत छैक जे नायिकाकेँ छुच्छुन लगैत छैक । आ नायक अपन आर्थिक-स्थितिक आत्मविशलेषण हेतु बाध्य होइछ आ ओकरा समक्ष भविष्यक एकगोट विकराल प्रश्नचिह्न आबि ठाढ़ भऽ जाइत छैक ।

भारती

शेखरजीक सर्वाधिक चर्चित ओ महत्वपूर्ण कथा छनि *'भारती'* । चर्चित एहि लेल जे कतेको विद्वान एही कथाकेँ हुनका कथाकारक छवि प्रदाता मानैत छथि आ महत्वपूर्ण एहिलेल जे मैथिल वातावरणक सटीक चित्र एहिमे उपस्थित भेल अछि । प्रभावी ततेक जे *स्व. राजकमलक* प्रसिद्ध कथा *'ललका पाग '*क प्रेरणा-श्रोत एही कथाकेँ मानल जा सकैत अछि ।

वैवाहिक समस्यापर आधारित एहि कथामे घटक द्वारा एकगोट प्रोफेसर बालकक विवाह असुन्दरि कनिञाँसँ कराय देल जाइत अछि । प्रोफेसरक पिता हुनक दोसर विवाह करयबाक नेयार करैत छथि । प्रोफेसर अपन पुनर्विवाहक अनुमति ओहि कनिञाँसँ

मडैत छथि । पछाति विवाहक लेल जखन ओ प्रस्थान करैत छथि तँ कनिआँ नगहरक कलश लऽ ठाढ़ि भऽ जाइत छथिन । सगुनक द्रव्य खसेबाकाल प्रोफेसर हुनक अश्रुपरिपूरित आँखि देखैत छथि । एहीठाम कथाक अन्त भऽ जाइत छैक ।

एकदिस एहि कथामे मैथिलानीक त्याग, धैर्य, सहनशीलता आदि गुणक चित्र उपस्थित कयल गेल अछि तँ दोसर दिस कथा आन्तरिक सौन्दर्यक महत्व स्पष्ट करवामे सफल भेल अछि ।

एक सिंघारा : एक चाय

'एक सिंघारा : एक चाय' शेखरजीक यथार्थसँ सम्पृक्त कथा छनि । छोट-छीन घटनाक माध्यमे युवावर्ग द्वारा अपन माता-पिताक सपनाकेँ ध्वस्त करैत अपन भविष्य पर्यन्तकेँ तबाह करबाक कथा एहिमे कहल गेल अछि । अल्पवेतनभोगी कथाकार सन्ध्याकाल काजपरसँ घुरबाकाल बाटमे पड़यवला एक गोट होटलमे अकसरहाँ एक सिंघारा आ एक कप चाहक लेल रुकैत छथि । ओतय युवक लोकनिकेँ होटलबाजी करैत देखि कथाकारकेँ अपन छात्र-जीवन मोन पड़ैत छनि जे कोना ओ अपन माय-वापक मनोरथकेँ ध्वस्त करैत सभटा पाइ मौज-मस्तीमे खर्च कऽ दैत छलाह । आ आइ गृहस्थीक भार उघैत कोना एक सिंघारा : एक चाय पर आबि गेलाह अछि । कथाकार ओहि युवक लोकनिमे अपन छवि देखैत छथि ।

ओकरा सभक भविष्यकेँ सेहो अपने समान पावि हुनक मानसिक चञ्चलता बढ़ि जाइत छनि । पूर्वदीप्ति शैलीक संयोजन कऽ कथाकार कथाकेँ बेस प्रभावी बनौलनि अछि । कथामे भूत , वर्त्तमान ओ भविष्य प्रभावशाली ढङ्गसँ उपस्थित भेल अछि ।

छोट-छीन बात

समाजक दलित-पीड़ित वर्गक महिला लोकनिक धनाढ्य लोकक द्वारा कयल जायवला यौन-शोषणक कथा कहैत अछि *'छोट-छीन बात'* । धनुकाइन युवती रतिया अपना वर्गक आने स्त्री जकाँ मेहनति-मजूरी कऽ जीवन-यापन करैत अछि । विवाहिता अछि । सुन्नरि सेहो । ओकर सतीत्व मालिक लोकनि द्वारा भङ्ग होइत छैक । जखन ओकर बेटी सेहो युवावस्था दिस डेग बढ़बैत छैक तँ कथाकार ओकरो गति मायक समाने होयबाक सम्भावना व्यक्त करैत छथि ।

माने, कथामे ओहि दलित-सीदित वर्गक स्त्री-लोकनिक चक्रीय गतिमे यौन-शोषण होयबाक बात कहि सामाजिक यथार्थकेँ रेखाङ्कित कयल गेल अछि ।

पुरान बात

'पुरान बात' कथामे भाइ-भैयारीक छल-प्रपञ्चकेँ देखौल गेल अछि । कथाक

आरम्भ औत्सुक्य ओ नाटकीयतासँ होइत अछि । मुदा कथा किछु सन्देश देबामे वा प्रभाव उत्पन्न करबामे सफल नहि भेल अछि ।

युगधर्म

प्रत्येक नोकरिहाराक जीवनमे अवकाश प्राप्त करब निश्चिते रहैत छैक । तकर बाद ओकर जीवन केहन नीरस भऽ जाइत छैक, मानसिक अवस्था केहन रहि जाइत छैक, अपन सहकर्मी ओ सर-समाज द्वारा ओकर कोना उपेक्षा कयल जाइत छैक यैह सभ विवेच्य विषय अछि *'युगधर्म'* कथाक ।

जिनगीक वाट

'जिनगीक वाट' कथामे गामक तथाकथित निम्न वर्गीय स्त्री द्वारा वेश्यावृत्ति करव ओ अन्तमे शारीरिक कान्ति क्षीण भेलापर घिसियौर काटि मरि जयबाक स्थिति देखौल गेल अछि । गामक दवङ्ग वूढ़-वुढ़ानुस लोकनिक ओकरा सङ्ग सम्पर्क ओ मुखिया द्वारा ओकर वेटाक विवाहक लेल घूस लेब तथाकथित सभ्य समाजक दूषित मनोवृत्तिक परिचय दैछ ।

सिनेहक आश्वस्ति

'सिनेहक आश्वस्ति' कथामे एकगोट साहित्यकारकेँ अपन ओहि कृतिपर पुरस्कृत कयल जाइत छनि जकरा पूर्वमे लोकसभ अधलाह कहने रहैत छैक । कथामे एही मुख्य विषयकेँ विस्तार प्रदान कयल गेलैक अछि ।

शेखरजीक उपलब्ध एहि कथा सभमे यद्यपि किछु ने किछु सन्देश देवाक सफल प्रयास कयल गेल अछि । जाहिमे रोचकता, प्रवाह, नव ढङ्गेँ किछु नव बात कहबाक प्रयास आदि देखबामे अबैत अछि । मुदा किछु कथा वर्णन-विस्तारक अपेक्षा रखैत अछि ।

औपन्यासिक कृति

शेखरजी साहित्यकेँ मनोविनोदक माध्यम नहि मानैत छलाह। अपितु ओ साहित्यकेँ संसारक सङ्ग पयरसँ पयर मिला कऽ चलि विविध पारिवारिक, सामाजिक ओ राष्ट्रीय समस्या सभक समाधानक लेल एकगोट विशिष्ट साधन मानैत छलाह। एहि समाधानक क्रममे ओ कोनो अन्य दिशामे नहि तकैत छलाह। अपना भूमिपर अपन गाछ लगयबाक पक्षधर छलाह। हिनक ई दृष्टिकोण एकदिस समाजकेँ अपन माटि-पानिसँ जुड़ि आधार भूमिसँ ऊर्जा ग्रहण कऽ समग्र विकासक प्रेरणा देबाक काज कयलक तँ दोसर दिस मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा - नव गति देबाक सङ्ग विकासक पथपर अग्रसर करबामे सहायक सिद्ध भेल।

शेखरजीक समस्त औपन्यासिक रचनावलीकेँ उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे देखब उचित होयत। जेँ कि साहित्य-संरचनाक उद्देश्यक प्रति हिनक दृष्टिकोण बड़ व्यापक छलनि तेँ हिनक औपन्यासिक कृति सामान्यसँ किछु भिन्न प्रकारक अवश्य रहल, ओहिमे मनोवैज्ञानिकताक पुट किछु वेसिए रहल। मुदा एहिसँ हिनक उपन्यासकारक छविपर कतहु कोनो आघात नहि लगतनि। ओना सामान्य पाठककेँ विषयक गूढ़ता, एकहि कथानकमे अनेक उपकथानकक सन्निवेश, प्रवाह केर अभाव आदि खटकनि से सम्भव।

मैथिलीमे शेखरजीक कुल चारि गोट उपन्यास प्रकाशित छनि। तीन गोट पुस्तकाकार आ एक गोट मिथिला-मिहिरमे धारावाही रूपमे। जेँ शेखरजीकेँ अखिल भारतीय स्तरपर 'ई बतहा संसार' नामक उपन्यासपर पुरस्कृत कयल गेलनि अछि तेँ सभसँ पहिने ओही पोथीकेँ देखब समीचीन होयत।

ई बतहा संसार

'ई बतहा संसार' प्रसिद्ध मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास अछि। एहि पोथीकेँ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 1980 मे पुरस्कृत कयल गेल। 1979 ई० मे मैथिली अकादमी पटना द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित एहि उपन्यासमे प्रेम-वासना, पाप-पुण्य, व्यभिचार आदिक भित्तिपर कथानककेँ पल्लवित कयल गेल अछि। विभिन्न पात्र-

पात्रीक मानसिक उहापोहक सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा विषयकेँ स्पष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

प्रेम ओ वासनापर भारतीय ओ पाश्चात्य ऋषि-साहित्यकारगण अपन विचार आरम्भेसँ प्रकट करैत रहलाह अछि । हुनका लोकनिक दृष्टिकोण लौकिक ओ पारलौकिक (देव विषयक) प्रेमकेँ फड़िछयबाक चेष्टा धरि रहलनि । ओ मानवीय प्रेम ओ वासनाकेँ सोझामे राखि विवेचन नहि कयने छथि । मुदा शेखरजी प्रेम ओ वासनाक निगूढ़ताकेँ सामान्य जीवनक परिप्रेक्ष्यमे राखि एकर अन्तरकेँ देखने छथि । 'प्रेम ओ वासनामे ओतबे अन्तर छैक जतेक फिल्टर कयल गेल कलक पानिमे ओ मोरीमे बहैत भभकैत पानिमे ।' वासनाक संयमित रूपकेँ प्रेम कहल जा सकैए । प्रेममे खण्ड नहि होइत छैक । जे मनुक्ख वास्तवमे प्रेमी अछि तकर हृदयमे घृणाक निवास भऽ नहि सकैत छैक ।

जहाँ धरि सांसारिक वासनात्मक प्रकृतिक बुभुक्षाक प्रश्न छैक तकर परितृप्तिक प्रसङ्ग विचार करबाक क्रममे विद्वान लेखक स्पष्ट कहैत छथि—'भूख होटलक मिलावटी वस्तुसँ बनल खाद्यसँ समाप्त कयल जाइए आ' सड़क कातक खोंचामे पड़ल धूरासँ भड़ल भोज्य पदार्थसँ मुदा घरक भोजन सुस्वादु होयबाक सङ्ग जतेक स्वास्थ्यप्रद होइए ओते बहरिया नै ।' शेखरजी एहि प्रसङ्ग भारतीय मर्यादित वासनात्मक क्षुधाक प्राप्तिक वैवाहिक ढङ्गकेँ अधिक मानवीय मानैत छथि । पशुवत मुक्त यौनाचार मानवक मर्यादाक अतिक्रमण थिक । सृष्टिक नियमक उल्लंघन करब अन्ततः पाप थिक । सामाजिक नियम स्थान ओ काल भेदेँ भिन्न होइत छैक ।

यद्यपि सम्पूर्ण उपन्यासमे प्रेम-वासना सदृश युग-युगसँ ओझरायल विषयकेँ सोझरयबाक चेष्टा अछि, मुदा एहि माध्यमे सामाजिक ओ राजनीतिक अनेकानेक समस्याकेँ उठौल गेल अछि ओ तकर समाधानक मार्गदर्शन कयल गेल अछि । जीवनमे कर्मक महत्त्व ओ आर्थिक सन्तुलन आदिक विश्लेषण कऽ सुख ओ शान्तिक मार्गदर्शनमे वस्तुतः प्राचीन भारतीय जीवन दर्शनक व्यवहारिताकेँ देखौल गेल अछि ।

जे स्वाद कर्मक फल चिखबामे भेटैत छैक से बजारक किनुआ वस्तुमे किन्नहुँ नहि छैक । श्रम सुखक पूजी थिकैक । जकरा अपना श्रमपर भरोस छैक से नोकरी किए ताकत ? रहलै भविष्यक लेल पूर्व सतर्कताक प्रश्न से कर्मशील पुरुषकेँ नहि झकझोड़ैत छैक । यैह भविष्यक चिन्ता सामाजिक कष्टक कारण बनि जाइत छैक । 'यैह काल्हुक चिन्ते पूँजीवादी मानसिकता छैक आ दोसर दिस वर्त्तमानमे लोक पाइ-पाइ लेल लल्ल अछि ।' अर्थ जीवनक हेतु अनिवार्य होइछ, मुदा से एक सीमामे । सीमाविहीन आर्थिक भूख कष्टक कारण होइत छैक । मनुक्खक मनुक्ख बनल रहबाक सभसँ सरल ओ सोझ उपाय यैह छैक जे ओ अपन आवश्यकताकेँ सीमित राखय ।

एही विषय सभकेँ व्याख्यायित कयनिहार एहि उपन्यासक आरम्भ होइत अछि एकगोट बतहाकेँ धीयापूता द्वारा ईटा-पाथर मारबासँ । बतहा अर्थात् निरञ्जन माय-बाप विहीन गरीब घरक लोक अछि । छात्रावस्थहिसँ श्रमकेँ महत्व देनिहार निरञ्जनक अध्ययन, चिन्तन ओ मनन सम्बल छैक । ओ श्रमकेँ सुख ओ शान्तिक कुञ्जी मानैत अछि । अपन मेधाक बलपर ओ प्राध्यापक भऽ जाइत अछि । ओकर शान्त-संयमित व्यक्तित्वक चर्चा छात्र समुदायमे पसरि जाइत छैक । एही क्रममे कामिनी नामक एक पैघ बापक बेटी ओकरा दिस आकृष्ट होइत छैक । यद्यपि बाह्यस्तरपर ओकरा मनमे कोनो विकार नहि छैक । मुदा अनजानेमे ओ ओमहर घिचाय लगैत अछि । ओमहर निरञ्जनो ओकरा पयबाक दिशामे ततेक आकुल भऽ गेल जे ओ ज्वर-पीड़ित भऽ जाइत अछि । कामिनीएक ओहिठाम ओकर उपचार होइत छैक । आ कामिनीक दैहिक भोगक बाद ओ बताह भऽ जाइत अछि । आकांक्षाक अतिशय संयम ओ दबाव ओकरा बताह बना देलकैक ।

ई कथा स्वयम् कामिनी अपना ननादिकेँ प्रेम ओ वासनाक अन्तर फुटयबाक आग्रहपर कहैत अछि । कामिनी प्रेमकेँ कलक स्वच्छ जल ओ वासनाकेँ नालीमे बहैत सड़ल पानि मानैत अछि । ओकरा अनुसारेँ हृदय ककरो एकबेर देल जाइत छैक । तेँ विवाहोपरान्त ओकरा ओ ओकर पति सुदर्शनमे पति-पत्नीक सम्बन्धो नहि भऽ पबैत छैक । आ अन्ततः जखन सुदर्शनकेँ एहि बातक भाँज लागि जाइत छैक जे ओकर पत्नी पूर्वमे ओकरहि सहपाठी मित्र बतहा अर्थात् निरञ्जनक सङ्ग सम्बद्ध छलैक तँ ओ दुहूक बीचसँ हटि पुरीक यात्रापर बिदा भऽ जाइत अछि ।

एमहर कामिनी आन्तरिक पीड़ाकेँ दबौलाक कारणेँ रुग्ना भऽ संसारसँ बिदा भऽ जाइत अछि । ओना निरञ्जनकेँ जखन सुदर्शन ओ कामिनीक प्रसङ्ग जानकारी होइत छैक तँ ओ दुहूक सुखमय जीवनक कामना करैत पहिने चुपचाप बिदा भऽ जाइत अछि ।

उपन्यासमे प्रेम ओ वासनाकेँ लऽ सर्वाधिक उद्विग्ना चान अछि । ओकरे चरित्र आरम्भसँ अन्त धरि व्याप्त छैक । चानक माय ओकर नेनपनेमे मरि गेल छैक । पिता सतत प्रयासरत रहैत छथि जे ओकरा मायक अभाव-बोध नहि होइक । जाहि कारणेँ ओ थोड़ेक जिद्दी भऽ गेलि । मुदा ओ अपन जिदक बलपर कोनो ताहि तरहक काज नहि करैत अछि जे अकल्याणकारक होइक । ओ बतहाकेँ अपना ओहिठाम राखि ओकर मानसिक सुधार करबाक निश्चय करैछ । ओ सोचैत अछि जे बतहाक चित्त स्थिर भऽ गेने ककरो ने ककरो उपकार अवश्य हेतैक । के जानय जे ओ महाविद्वान बहराय । आ विद्वानसँ सहजेँ समाजक लाभ होइत छैक । चानक सोचबाक एकटा फाराके ढङ्ग छैक । ओकर मान्यता छैक जे—जे व्यक्ति समाजक एक व्यक्तिसँ प्रेम

आ दोसरसँ घृणा करैत अछि आ तैयो प्रेमी होयबाक घोषणा करैत अछि से वस्तुतः प्रेमी नहि ढोङी होइत अछि ।

अपन एही सब तरहक मान्यताक कारणेँ चान शुरू-शुरूमे धनञ्जयक प्रति अनाकृष्ट रहैत अछि । मुदा पछाति जखन धनञ्जय चान द्वारा बेर-बेर नकारि देलाक बाद चानक दैहिक प्राप्तिक कामनासँ अनासक्त भऽ ओकर पाथरक प्रतिमा बना ओकरे प्रति आसक्त भऽ जाइत अछि, ओकरे पूजा करय लगैत अछि तँ चान ओकरा बतहाक संज्ञासँ विभूषित करैछ । धनञ्जयो ओकरा बताह कहैत छैक । तखनहि कतहुसँ क्यौ गाबि उठैत अछि—

'अपने धुनिमे सब बताह अछि
ई बतहा संसार ।'

एही ठाम उपन्यासक चरम परिणति होइत छैक । उपन्यासक समस्त तत्व एहि पोथीमे विद्यमान छैक ।

तऽर पट्टा ऊपर पट्टा

1960 इ. मे *मिथिल मिहिरक* पुनर्प्रकाशनक पश्चात् धारावाही रूपमे पहिल उपन्यास *'तऽर पट्टा ऊपर पट्टा'* क प्रकाशन भेल । मिहिरमे प्रकाशित ई पहिल उपन्यास तँ अछिए मैथिलीमे शेखरजीक प्रथम प्रकाशित उपन्यास सेहो यैह अछि । यद्यपि ई *शेफालिका देवीक* नामसँ प्रकाशित भेल मुदा यथार्थतः एकर उपन्यासकार मिथिला-मिहिरक यशस्वी सम्पादक *सुधांशु शेखर चौधरी* थिकाह । ई मिहिरक 21 मई 1961 सँ 22 अक्टूबर 1961 इ. धरिक अङ्कमे कुल 22 खण्डमे प्रकाशित भेल ।

मूलतः *'दो पाटन के बीच'* नाम सँ हिन्दीमे लिखित ओ मैथिलीमे प्रकाशित ई उपन्यास अद्यावधि पुस्तकाकार नहि लऽ सकल अछि ।

मैथिल परिवेशक कथानकसँ युक्त प्रस्तुत उपन्यास दू खण्डमे विभाजित अछि । पहिल खण्डमे नायक परमा ओ दोसर खण्डमे नायिका गङ्गाक आत्मविश्लेषण अछि ।

परमा एहि उपन्यासक आदर्शवादी नायक अछि । सत्यक प्रति आग्रही परमाक व्यक्तित्वमे साङ्गठनिक क्षमता छैक । चिन्तना शक्तिक समन्वय ओकरा चरित्रक सभसँ प्रमुख विशेषता छैक । अपन बहिन गङ्गाक प्रेरणासँ ओ सामाजिक कुरीति ओ दुर्भावनाकेँ नष्ट कऽ ओकरा स्थानपर सामाजिक समरसता ओ समाजिक सौहार्दक स्थापनाक निमित्त ग्रामीण राजनीतिमे सक्रियताक सङ्ग प्रवेश करैत अछि । अपन उद्देश्यमे सफलीभूत होयबाक लेल ओ ग्रामीण नवयुवक लोकनिक एकगोट दल बनयबामे लागि जाइत अछि । मुदा सत्यक पथक बटोही परमाक ग्रामोत्थानसँ सम्बन्धित क्रिया-कलाप समाजक ओहि वर्गकेँ नीक नहि लगैत छैक जे समाज वा गामक अधःपतनक मूल कारण अछि । एहने

एकगोट पात्र छथि लीलाधर बाबू । गामक प्रभावी व्यक्ति लीलाधर बाबूकेँ परमाक समस्त क्रिया-कलाप अप्रिय लगैत छनि । सम्भवतः ओ एहि लेल चिन्तित भऽ उठैत छथि जे नवयुवक वर्गक उत्साहसँ हुनक मिथ्याभिमान, प्रभावशालिताक आडम्बर नष्ट होयबाक सम्भावना बढ़ि रहल छनि । तेँ परमाक बढ़ैत प्रभावकेँ समाप्त करबाक हेतु ओकर आदर्श स्वरूपकेँ खण्डित करबाक हेतु ओ षड्यंत्र कऽ परमाकेँ जमुनीक सङ्ग व्यभिचार करबाक मिथ्या आरोपमे फसयबाक उद्योग करैत छथि । मुदा परमाक दूरदर्शिता ओ ओकरा द्वारा गठित दलक सजगताक फलस्वरूप जमुनीक सतीत्व भङ्ग करैत लीलाधर बाबू स्वयम् पकड़ल जाइत छथि । अभियानी दल विजयश्रीक वरण करबामे सफल होइत अछि ।

गङ्गा एहि उपन्यासक नायिका थिकीह । हुनक जीवन कष्ट ओ करुणासँ ओतप्रोत छनि । ओ पति परित्यक्ता थिकीह । हुनक स्वामी विदाइमे यथेष्ट सामान नहि भेटबाक कारणेँ हुनका छोड़ि दोसर विवाह कऽ लैत छथि । आ गङ्गाकेँ मानसिक यातनाक अथाह समुद्रमे उबडुब करबा लेल विवश कऽ दैत छथि ।

मुदा गङ्गा एहि सकल परिस्थितिक झञ्झावातकेँ सहितो अपना अन्तरमे सामाजिक परिवर्त्तनक ओ व्यवस्थाक परिशुद्धिक लेल दीप जरौने रहैत छथि आ तकरे परिणाम होइत अछि जे हुनक व्यक्तित्व परमाक समक्ष प्रेरणा बनि ठाढ़ होइत अछि । ई सत्य जे परमाक सक्रियता, ओकर सङ्गठनात्मक क्षमता विलक्षण छैक मुदा ओकर ऊर्जाकेँ एहि दिशामे प्रेरित कयनिहारि गङ्गे थिकीह । निस्सन्देह हुनक व्यक्तित्वमे सामाजिक परिवर्त्तनक सूत्रधारिकाक गुण विद्यमान छनि ।

मनोवैज्ञानिक पद्धतिमे लिखल गेल एहि उपन्यासमे सामाजिक-मानसिक समस्याक सङ्ग नारी-व्यथा, ओकर विवशता, करुणा आदिक सङ्ग नारी-शक्तिक प्रेरिका रूपक विलक्षण चित्र उत्कीर्ण कयल गेल अछि । मैथिली उपन्यास-जगतमे सूक्ष्म चरित्र-चित्रण ओ सटीक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवम् मिथिलाक माटि-पानि ओ मैथिल वातावरणक सजीव चित्रणक लेल एहि उपन्यासक महत्व अक्षुण्ण रहत ।

दरिद्रछिम्मरि

मिथिला-मिहिरक 13 जनवरी 1974 सँ 25 मइ 1974 धरिक कुल 19 अङ्कमे प्रकाशित प्रस्तुत उपन्यासक उपन्यासकार थिकाह *सुधांशु शेखर चौधरी* जे *'पराशर'*क छद्मनामसँ 'मिहिर'मे छपल । पछाति मैथिली अकादमी पटना एकरा पुस्तकाकार स्वरूप प्रदान कयलक ।

आत्मकथात्मक शैलीमे लिखित एहि उपन्यासकेँ शेखरजी मनकथाक संज्ञा दैत छथि । मुदा एहिमे उपन्यासक समस्त तत्व विद्यमान छैक तेँ एकरा मनकथात्मक शैलीमे रचित उपन्यास कहब उपयुक्त बुझना जाइछ ।

दरिद्रछिम्मरि उपन्यासक मुख्य चरित्र अमल केर जीवन-कथा सम्पूर्ण उपन्यासक कथावस्तु अछि। अमलक जीवन-कथाकेँ आधार वना उपन्यासकार सामाजिक-पारिवारिक ओ वैयक्तिक विविध समस्यापर गम्भीरतापूर्वक विचार कयलनि अछि। खास कऽ निम्न मध्यमवर्गक पारिवारिक समस्याकेँ प्रकाशित करबामे शेखरजी विशेष सफल भेलाह अछि।

उपन्यासमे एहि समस्त समस्याक उद्घाटन विविध चरित्रक उपस्थापनाक माध्यमे भेल अछि। नगरीय समाजमे रहनिहार विठू ओ गोपाल, प्रतिकूल वातावरणीय समाजमे रहनिहार शिवनाथ जे अपन समुचित विकास नहि कऽ सकल, वेतनभोगी समरक विवशता आदिक सङ्ग अमल ओ रञ्जनाक प्रेम-प्रसङ्गक माध्यमे प्रेमक कोमल ओ मधुर भावनाक यथार्थता आदिक समुचित उपस्थापना एहि पोथीमे भेल अछि।

दरिद्रछिम्मरिक नामे जानल जाइत अमलक कर्त्तव्यक प्रति दृढ़ताक भावना अनवाक सङ्गहि उपन्यासक अन्तमे सभटा चरित्र जीवनक विविध समस्याक निदान करबामे सफल होइत अछि।

उपन्यासक कथा-नायकक माध्यमे लेखक अनेको मान्यताक ओझाराहटिकेँ सोझरयबाक सफल चेष्टा कयलनि अछि। जेना दरिद्रछिम्मरि होयवापर विचार करैत नायक सोचैत अछि जे ओ दरिद्रछिम्मरि अछि ताहिमे ककर दोष ? दरिद्रछिम्मरि के थिक ? आ अन्तिम निष्कर्षपर अवैत अछि जे दरिद्रछिम्मरि मन होइत छैक लोक नहि।

तहिना ओकर विचारमन्थनक माध्यमे समाजक विविध चरित्र ओ ओकर क्रियाकलाप किंवा मानसिकताक प्रसङ्ग सेहो विचार कयल गेल अछि। कथा-नायक मानसरोवरक घाटपर वैसल विचार करैत अछि जे लोक अपन स्वभावेक हिसावे काज करैत अछि। जँ ओ राजनेता रहितय तँ मानसरोवरक दछिनवारी मोहारपरक हलखोरकेँ आ पुवारी मोहारपरक ख़जुरबन्नीक पासीकेँ चढ़ाबढ़ा झगड़ा लगवितय। दार्शनिक रहितय तँ पीपरक गाछमे टाङल डाबासँ चुबैत पानिकेँ देखि सत्यासत्यक विश्लेषण करैत आ कवि-साहित्यकार रहने सौन्दर्य वर्णन करैत।

सम्पूर्ण उपन्यासमे जीवन-जगतक अनेको विवाद, भ्रम आ मोहकेर सत्यक उद्घाटन विविध चरित्रक विलक्षण उपस्थापना द्वारा भेल अछि। लेखकक गम्भीर दृष्टि ओ चिन्तन जीवनसँ सम्बन्धित विविध अनुभवक उपस्थापनामे दृष्टिगत होइत अछि।

एहिठाम ईहो कहि देव समीचीन होयत जे जँ सूक्ष्मतापूर्वक एहि उपन्यासकेँ देखल जाय तँ कल्पनाशीलताकेँ फराक कऽ देलाक बाद सम्पूर्ण उपन्यासमे शेखरजीक जीवनी भेटत। तखन उपन्यासकेँ मनकथा नहि कहि लेखकक आत्मकथा कही तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि होयत।

निवेदिता

ई उपन्यास *'मिथिला-मिहिर'*मे 02 अक्तूबर 1983 सँ 27 नवम्बर 1983 इ. धरि धारावाही रूपमे प्रकाशित भेल छल । सम्प्रति पुस्तकाकारो प्रकाशित भऽ गेल अछि ।

एहिमे रोमांसक संस्पर्श अछि, मुदा कतहु सीमाक उल्लंघन नहि भेल अछि । एहि उपन्यसक एकगोट विशिष्ट महत्व छैक । एहिमे शेखरजीक 'क्रान्तिद्रष्टा'क छवि देखबामे अबैत अछि ।

सामाजिक दृष्टिऐँ दुइगोट सम्भ्रान्त परिवारक कथा एहि उपन्यासमे गुम्फित अछि । मुजफ्फरपुर निवासी रमाशङ्कर बाबूक कन्या नीलिमा ओ दरभङ्गाक रईश बाबू आनन्दमोहनक बालक प्रफुल्लचरण थिकाह । रमाशङ्कर बाबूकेँ कटिहारमे एकटा जूट मिल छनि आ आनन्दबाबूक बेस पैघ पैतृक सम्पत्ति छनि । ओ एकटा प्रकाशन सेहो चला रहलाह अछि । नीलिमा भारतीयताक प्रबल पक्षधर थिकीह ओ प्रफुल्लचरण कवि-साहित्यकार थिकाह ।

नीलिमाकेँ विवाह योग्य बूझि हुनक पिता रमाशङ्करबाबू दरभङ्गाक बाबू आनन्दमोहनक बालक प्रफुल्लसँ विवाहक लेल प्रस्ताव पठबैत छथि । अपन भावी पत्नीक शील-स्वभावकेँ विवाहसँ पूर्वे जानि लेबाक इच्छुक प्रफुल्ल घरमे बिनु ककरो किछु कहने रमाशङ्कर बाबूक ओहिठाम भिखारिक वेशमे पहुँचैत छथि । गर्मीक दुपहरियामे रमाशङ्कर बाबू लगले सुतले छलाह कि हुनका ओहिठाम प्रफुल्ल 'मालिक-मालिक' केर हाक लगवैत छथि । काँचे निन्न टुटबाक कारणेँ रमाशङ्कर बाबू खौँझा कऽ प्रफुल्लकेँ रोलसँ पीटि वेहोश कऽ दैत छथि । हल्ला सूनि नीलिमा अपना कोठलीसँ आवि देखैत छथि–शोणितसँ लतपथ एकटा भिखमङ्डाकेँ । ओ पिताकेँ संकेतसँ बुझबैत छथि जे कोनहुना जँ ई वात प्रकाशित भऽ गेल तँ नाहक झमेला भऽ जायत । तेँ एकरा एहीठाम कोनो डाक्टरकेँ बजा देखौल जाय । सैह होइत अछि । भिखमङ्डा किछु दिनमे स्वस्थ भऽ जाइत अछि । नीलिमा ओकरा अपना अन्दरमे नोकरी राखि लैत छथि । ओ नोकर चरणक नामे रहय लगैत अछि । किछु दिन बितलाक बाढ़ चरण एकदिन नीलिमाकेँ जीवनसङ्गी ताकि लेबाक आग्रह करैत छैक । जकर उत्तरमे नीलिमाक चाट खाय चरण नामधारी नोकर प्रफुल्ल उदास भेल अपन घर घुरि जाइत अछि ।

मुदा प्रफुल्ल घरपर बेसी काल नहि टिकैत अछि । पुनः घरसँ बिदा भऽ जाइत अछि । मुदा एहिवेर घर छोड़बाक कारण भिन्न छैक । ओ अपना पयरपर ठाढ़ होमऽ चाहैत अछि । तेँ पिताक देलहा सभटा वस्तु घरमे छोड़ि एकखण्ड धोती मात्र पहिरने आ ओक़रे आधा ओढ़ने बिदा भऽ जाइत अछि ।

अनेक दिन धरि भूखल-पियासल यात्रा करैत रहैछ कि गर्मीक एक दुपहरियामे

ओकरा चाउन्ह आबि जाइत छैक । ओ बेहोश भऽ खसि पड़ैछ । सुनसान बाटपर क्यौ देखनिहार नहि छैक । एतबेमे एकटा भिखमङनी ओकरा कहुना उठा कऽ लगक पीपरक गाछ तर लऽ जा अपन बार्लीवला टिनही डिब्बाक पानिक छिटका मुँहपर दैत छैक । ओ होशमे आबि केहन-काहन पानि मुँहपर देबाक लेल भिखमङनीकेँ डँटैत अछि । भिखमङनी चल जाइत अछि । प्रफुल्ल किछु काल ओतहि पड़ल रहैछ पछाति बनारसक यात्रापर बिदा भऽ जाइत अछि ।

गाड़ीमे एकगोट खद्धरधारी सहृदय व्यक्तिसँ भेँट होइत छैक । हुनकहि आग्रहपर बनारसमे हुनक डेरापर जाइत अछि । ओ महानुभाव एकगोट आलोचक थिकाह । एहिठाम बनारसमे लेखक ओ प्रकाशकक शोषित-शोषकक भावकेँ देखि प्रफुल्ल अपन साहित्यिक रचनाकेँ गङ्गाकेँ समर्पित कऽ कटिहारक लेल प्रस्थान कऽ जाइत अछि।

एमहर नीलिमाक पिताक निधन भऽ जयबाक कारणेँ सोमनाथ जूट मिलक प्रधान नीलिमा भऽ जाइत छथि जकर प्रबन्धनक भार अपन एकगोट सम्बन्धीकेँ दऽ ओ स्वयम् पटनामे डाक्टरी पढ़य लगैत छथि ओ विवाह नहि करबाक ओ डाक्टरी पढ़ि समाज-सेवा करबाक निर्णय पिताकेँ आरम्भेमे कहि देने छलनि । हँ, प्रफुल्लक सङ्ग विवाहक चर्चपर विचार अवश्य करय लागल छलीह । कारण हुनका प्रफुल्लक कविता नीक लगैत छनि । मुदा बीचमे चरणक आगमन सेहो एकगोट आकर्षणक कारण छल ।

ओमहर प्रफुल्ल बनारससँ कटिहार आबि ओही सोमनाथ जूट मिलमे चरणक नामसँ नोकरी करय लगैत अछि । एहिठाम ओकर ख्याति मजदूर नेताक रूपमे भऽ जाइत छैक । कालक्रमे मिलमे हड़ताल भऽ जाइत छैक । मजदूर स्वयम् नीलिमा देवीक सङ्ग वार्त्ता करबाक इच्छा प्रकट करैत अछि । मजदूरकेँ अनकर मध्यस्थता स्वीकार नहि छैक । नीलिमा देवी पटनासँ कटिहार अबैत छथि । मजदूरक नामी नेता चरण ओ नीलिमाक बीच वार्त्ता होइत अछि । मुदा असफल रहि जाइत अछि । मजदूर लोकनिमे मिल बन्न भऽ जयबाक चिन्ता पसरि जाइत छैक । मुदा नीलिमा तकरा अपन कुशलतासँ सम्हारि लैत छथि । मिलक प्रबन्धनमे मजदूरक सहभागितासँ एकटा बोर्ड बनयबाक हुनक निर्णयसँ मजदूरो सभक मिलमे हिस्सा भऽ जाइत छैक ।

प्रफुल्ल समझौता करयबामे असफल भेलाक बाद नोकरी छोड़ि पुनः बनारसक लेल बिदा भऽ जाइत अछि । मुदा ओमहर नहि जा भिखमङनीक पजोहमे ओहि सुनसान स्थान दिस बिदा भऽ जाइत अछि, जहाँ भिखमङनी ओकर बेहोशी दूर कयने छलैक । मुदा भिखमङनी नहि भेटैत छैक । भेटि जाइत छैक गाय-महींस चरौनिहार बच्चा सब । प्रफुल्ल ओकरा सभसँ गप्प-सप्प कऽ ओकरा सभक निरक्षरता दूर करबाक सङ्कल्प करैत अछि । चरवाह सभ गायो-महींस चरबैत अछि आ पढ़ितो अछि । कालक्रमे ओहि गामक वयस्को सभ पढ़ब आरम्भ कऽ दैत छथि । एहि तरहेँ समय व्यतीत होमऽ लगैत

अछि कि एकदिन कोम्हरोसँ घुमैत-फिरैत भिखमङनी सेहो आवि जाइत अछि । ओ भुखलि अछि । प्रफ्फुलक खोपड़ीमे एके आदमीक खयबा जोगर चाउर छैक। प्रफुल्ल अपने भूखल रहि ओकरा खोआ दैत अछि । दुनू एकहिठाम रहि पढ़यबाक काज करय लगैत अछि । एकदिन भिखमङनी जकर नाम बिजली छैक अपन पितिऔतक घरसँ अपन गहना चोरा अनैत अछि । केस-मोकदिमा भऽ जाइत छैक । एहि केसमे प्रफुल्लकेँ जहल भऽ जाइत छैक । ओ बिजलीकेँ एहि बीच समय बितयबाक लेल बनारसक ओहि आलोचक महोदयक नामे पत्र दऽ पठा दैत अछि ।

जहलसँ मुक्त भेलाक बाद प्रफुल्ल बिजलीक खोजमे बनारस जाइत अछि मुदा ओहिठाम ओ उपलब्ध नहि होइत छैक । प्रफुल्ल मन-मारि ओहिठाम रहय लगैछ । अनायास एक दिन बिजली प्रफुल्लक खोज करैत ओतय अबैत अछि । दुनूकेँ भेँट होइत छैक । एहि बीच समीक्षक महोदयक ओहिठाम कटिहारसँ पत्र अबैत छनि । सभ मजदूर यूनियनक अधिकारी लोकनि 'मजदूर संसार' नामक एकगोट साप्ताहिक पत्र चलवय चाहैत छलाह । ताहिलेल एकगोट योग्य सम्पादकक अपेक्षा छलनि । समीक्षक शर्माजी एहि हेतु प्रफुल्लकेँ कहलनि । पछाति ओ बिजलीक सङ्ग कटिहार आवि पत्रक सम्पादन करय लगैछ ।

एकदिन बिजलीकेँ बेहोशी आवि जाइत छैक । कोनो मजदूर नीलिमा देवीकेँ वजा अनैत छनि । ओ आवि कऽ देखैत छथिन । प्रफुल्ल फीस नहि दऽ इतः-ततः करैत रहि गेल । पाछाँ फीस देवाक लाथे गेबो कयल तँ फीस दऽ घुरि आयल । विशेष किछु कहि अथवा पूछि नहि सकल ।

मुदा नीलिमा ओहि वाटे अवैत-जाइत विजलीसँ भेँट-घाँट करैत रहथि । आ बिजली सेहो प्रफुल्लसँ आज्ञा लऽ नीलिमा देवीक ओहिठाम आयल-गेल करय ।

एकदिन नीलिमः प्रफुल्लक ओहिठाम पहिनेसँ बिजलीक सङ्ग गप्प कऽ रहलि छलि कि प्रफुल्ल सेहो उपस्थित भऽ गेल । परस्पर दुनूक हृदयमे एक-दोसराक प्रति वैचारिक बिहाड़ि बहि रहल छलैक । एतवहिमे नीलिमा प्रफुल्लसँ कहैत छथि जे आन तँ नहि मुदा ओ दुनू गोटे सहयात्री तँ भैए सकैत छथि । दुनू गोटाक उद्देश्य सेवे करव छनि । काजक स्वरूपेटा भिन्न छैक । एहि वार्त्तालापक क्रममे नीलिमा अपन हाथ चरण अर्थात् प्रफुल्ल चरणक हाथमे दऽ सहयात्रिणी जकाँ ठाढ़ भऽ जाइत छथि ।

एहीठाम उपन्यास समाप्त भऽ जाइत अछि । नीलिमाकेँ समाजसेविकाक रूपमे भगिनी निवेदिताक समकक्ष ठाढ़ कऽ उपन्यासकार समाजकेँ एकगोट स्पष्ट, प्रभावी ओ सफल सन्देश देवामे सफल भेलाह अछि ।

कविकेँ 'क्रान्तिद्रष्टा' अर्थात् भविष्य द्रष्टा कहल गेल अछि । कवि-साहित्यकार वर्त्तमानक ओहि स्वरूपकेँ तँ देखिते छथि जे सामान्य लोक नहि देखि पवैछ, सङ्गहि

ओ भविष्यक स्पष्ट चित्र देखबामे सेहो सक्षम होइत छथि । एहि दृष्टिकोणसँ एहि उपन्यासमे शेखरजीक भविष्यद्रष्टाक छवि समुपस्थित होइत अछि । आइ भारत के कहय सम्पूर्ण विश्वमे 'चरबाहा विद्यालय' ओ 'वयस्क शिक्षा' क मुक्तकण्ठसँ स्वागत कयल जा रहल अछि । अनेक ठाम प्रयोग रूपमे एकर सञ्चालनो भऽ रहल अछि । मुदा शेखरजीक दृष्टि आइसँ वर्षो पूर्व एहि परिस्थितिकेँ देखि चुकल छल ।

एहि उपन्यासक नायक प्रफुल्ल चरण द्वारा चरबाह सभकेँ चरबाही करितो पढ़ायब आ कालक्रमे वयस्को लोकनिकेँ शिक्षित करबाक कार्य एही तथ्यक प्रमाण कहल जा सकैत अछि ।

समीक्षात्मक निबन्ध

वर्त्तमान कालमे निबन्धो सर्जनात्मक साहित्यक कोटिमे आवि गेल अछि। निबन्धक क्षेत्र ओ स्वरूप विस्तारक ई क्रम पूर्वमे नहि छल। पूर्वमे एकर उपयोग विचारकेँ सपाट रूपमे अभिव्यक्त करब अथवा कोनो गूढ़ विषयकेँ फरिछा पाठकक लग प्रस्तुत करब छल। शेखरजी निवन्धमे एही परम्पराकेँ निमाहने छथि।

शेखरजी पत्रकारिताक क्रममे समय-समयपर निबन्ध लेखन दिस प्रवृत्त होइत रहलाह। सर्जनात्मक साहित्यपर आलोचनात्मक निवन्ध नेयारि कऽ प्रायः कहियो नहि लिखलनि। हँ, जहिया कहियो कोनो अनटोटल स्थापना किंवा निष्कर्ष देखबामे अयलनि समीक्षा लिखबाक लेल सन्नद्ध भेलाह। ताहूमे जखन हिनक विचार, स्थापना आदिपर वैचारिक आक्रमण होनि कलम लऽ ओहि विचारक मूलोच्छेद करबाक लेल सन्नद्ध होथि। शेखरजी कहियो अपनाकेँ समीक्षक वा इतिहासकार नहि मानलनि, मुदा तकर ई अर्थ कदापि नहि जे ओ समीक्षा नहि लिखलनि। ओ स्वयम् कहैत छथि— 'हमरा ने निबन्धकार बनबाक कहियो सेहन्ता भेल अछि आ ने कहियो इएह इच्छा भेल जे हम समीक्षकक रूपमे जानल जाइ। यदि सत्य पूछल जाय तँ हम इएह कहब जे आलोचना किम्बा समीक्षाक क्षेत्रमे मैथिलीमे जाहि परम्पराकेँ जन्म देल गेल अछि तदनुसार हम समीक्षक भैयो नहि सकैत छी।'

सम्भवतः परम्पराक जन्मसँ हुनक तात्पर्य यशोगानक परम्परासँ छनि। किंवा निर्भीकता आदि गुणक अभावसँ। ओ अपने एहिसँ सर्वदा फराक रहलाह। निर्भीकतापूर्वक अपना मतक स्थापना शेखरजीक प्रमुख गुण रहनि। हिनक आलोचकीय दृष्टि 1954 इ०मे प्रकाशित *'विवेचना'*क सम्पादन ओ ताहिमे सङ्कलित हिनक निबन्धेसँ फड़िच्छ होमऽ लागल छलनि जे पछाति मुख्य धारा तँ नहि मुदा गौण रूपमे समय-समयपर अपेक्षाक अनुरूप प्रवाहित होइत रहलनि। जाहिमे समीक्षात्मक निबन्ध-सङ्ग्रह 'सन्दर्भ' विशेष रूपेँ उल्लेख्य अछि।

सन्दर्भ

हिनक बहुत रास आलोचनात्मक निबन्ध पत्र-पत्रिका आदिमे प्रकाशित छनि।

सर्जनात्मक साहित्यपर आधारित समालोचनात्मक निवन्धक एकमात्र सङ्ग्रह *'सन्दर्भ'* 1981 इ०मे मैथिली अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित भेल अछि ।

एहिमे भाषा-साहित्यसँ सम्बन्धित सात गोट सन्दर्भक कुल तीस गोट निबन्ध अछि, जे विभिन्न विचार-गोष्ठी किंवा आने अवसरपर भेल चर्च-वर्चकेँ आधार वना कऽ लिखल गेल अछि । शेखरजी स्वयम् एहि निबन्ध सभक सम्बन्धमे पोथीक आत्मकथ्यमे कहैत छथि—

"पोथीक नामे ई सूचित कऽ दैत अछि जे सन्दर्भसँ कटल विषय-वस्तुक एहिमे चर्च नहि होयत । अर्थात् नाटक, कथा, उपन्यास, नव कविता आदि विविध विधाक साहित्यिक प्रसंगमे समय-समयपर गोष्ठीक माध्यमे वा आनो अवसरपर चर्च-वर्च होइत रहल अछि आ ताहिमे जे अनटोटल वा वहबाँड़ि विचार रखबाक प्रयास होइत रहल अछि तकरे आधार वना कऽ सभ विधापर विचार कयल गेल अछि ।"

सङ्ग्रहक निबन्ध सभमे कोनो प्राचीन स्थापित मान्यताक पृष्ठ पोषण नहि कयल गेल अछि । अपितु प्राचीन सूत्रक नवीन व्याख्याक द्वारा आधुनिक कालमे पसरल विविध घुर्चीकेँ सोझरयवाक प्रयास कयल गेल अछि । जाहिमे कतहु विषयक विवेचन अथवा भाषाक ओझराहटि देखबामे नहि अवैत अछि ।

ओना तँ शेखरजी साहित्यक प्रायः सभ विधापर अपन लेखनी चलौलनि । मुदा नाट्य-विधाक प्रति हुनका एकगोट विशेष आकर्षण छलनि । स्वभावतः एहू सङ्ग्रहक पहिल सन्दर्भ नाटकेसँ सम्बद्ध अछि । *'नाट्य-सन्दर्भ'* शीर्षकक एहि पहिल सन्दर्भमे सात गोट निबन्ध सङ्कलित अछि—

(क) अर्वाचीन नाटकक प्राचीन सन्दर्भ
(ख) प्राचीन ओ आधुनिक नाटकमे वस्तुगत भिन्नता
(ग) नाटक ओ एकाङ्कीक पार्थक्य
(घ) प्रयोगधर्मा नाटक
(ङ) नाटक-नाटककार आ दायित्व बोधक प्रश्न
(च) नाटक : रङ्गमञ्च-निर्देशन आ प्रसाधन
(छ) मैथिली नाट्य साहित्य ।

प्राचीन नाटकक सम्बन्धमे दुइ गोट भ्रम पसरल रहल अछि । *ज्योतिरीश्वर* कृत *'धूर्तसमागम'* कि *विद्यापति* कृत *'गोरक्षविजय'* नाटक थिक अथवा रूपकक कोनो आन भेद ? निबन्धकारक मत छनि जे जँ ई दुनू प्राचीन कालक वस्तु थिक तँ एहिपर प्राचीने ढङ्गसँ विचार होयबाक चाही । तहिना किर्त्तनिञाँ नाच कि नाटक विषयपर विचारक-क्रम सेहो एही तरहक रहबाक चाही ।

वस्तुतः नाच ओ नाटक दुहूक उत्पत्ति संस्कृतक 'नट्' धातुसँ भेल अछि तँ

निबन्धकारकेँ नाटक ओ नाचक सम्बन्धमे प्राचीने मानदण्डक सहायता लेब अपेक्षित बुझना जाइत छनि ।

आधुनिक नाटक जेँ प्राचीन परम्परासँ भिन्न तरहक थिक तेँ एकरा लेल नवीन मानक तैयार करबाक आवश्यकता बूझि पड़ैत छनि । आधुनिक नाटकक तत्त्व ओ विशेषतापर विचार करबाक क्रममे हुनक मान्यता छनि जे आधुनिक नाटकमे जीबैत ओ भोगैत लोकक जटिल जीवनक अनुकृति कयल जाइत अछि । एकर नायक कोनो वर्ण, वर्ग किंवा जातिक लोक भऽ सकैत छथि ।

एकर कथानकक परिवेश छोट रहैत अछि जे कोनो एकगोट घटनाक चारूकात घुरमुरिया कटैत रहैत अछि । एहिमे दृश्य परिवर्त्तनक ह्रास भेल अछि । आधुनिक नाटक एकहि अङ्कमे पूर्ण भऽ सकैत अछि । जाहिमे घटनाक क्षिप्रता ओ गतिशीलता रहैत छैक ।

एकाङ्की ओ नाटकमे तात्विक अन्तर रहैत अछि । एकाङ्की जहाँ जीवनक कोनो छोटसन परिधिकेँ छूबैत अछि ओतय नाटक कोनो एकगोट परिधिकेँ छुबितो सम्पूर्ण जीवनसँ परिचय करा दैत अछि, तौलाक भात जकाँ । तौलाक दुइगोट चाउरकेँ छूबि जेना भनसीया सौँसे तौलाक चाउरक सम्बन्धमे बुझि जाइत अछि तहिना आधुनिक नाटकमे जीवनक तेहने घटनाकेँ उठौल जाइत अछि जे सम्पूर्ण जीवन किंवा जीवनक अधिकांशकेँ प्रकट कऽ दैत अछि ।

एहि सन्दर्भक अन्तर्गत समाविष्ट विषयक क्रममे रङ्गमञ्चक प्रकाश, ध्वनि, रूपसज्जा, निर्देशन आदि विषयपर सेहो विस्तारसँ प्रकाश देने छथि ।

सङ्ग्रहमे दोसर थिक *'कथा सन्दर्भ ।'* एहि सन्दर्भक अन्तर्गत सात गोट निवन्ध अछि—

(क) स्वभाव ओ स्वाभाविकता
(ख) विश्वसनीयता आ अविश्वसनीयताक आधार
(ग) यथार्थवादी नारा ओ जीवनक यथार्थ
(घ) कथा-तत्त्व आ कथा-प्रवृत्ति
(ङ) विरोधी अस्तित्वक वायवीयता
(च) धरतीक साहित्य आ सहित्यक धरती
(छ) समसामयिक मैथिली कथा साहित्यक प्रवृत्ति ।

उपर्युक्त सभ विषयपर विचार करबाक क्रममे साहित्यक कथा-विधामे जे राजनीतिक लोक कथाकारक खाल ओढ़ि भ्रमजाल पसारि रहलाह अछि तकरा निरस्त करैत लेखक सत्यक उद्घाटन करैत स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे 'वस्तुतः यथार्थवाद यदि मार्क्स-दर्शन द्वारा छद्मताक सङ्ग विशेष प्रभावित नारा थिक तँ जीवनक यथार्थ मनुष्यक

चतुर्मुख विकासमे सन्निहित अछि ।'

लेखक साहित्यक धरती जे सामाजिक मङ्गलताक धरातलपर आधारित अछि तकरा स्वच्छ ओ निर्मल रखबाक प्रयोजनीताक दिशा-सङ्केत कयलनि अछि ।

साम्प्रतिक कथातत्व ओ कथा प्रवृत्तिक भेदकताकेँ बिनु बुझने जे मात्र संघर्ष टा केँ कथा किंवा उपन्यास बुझैत छथि तनिका लेखक अपन अयोग्यताक प्रचारक मानैत छथि ।

ओ जीवन मूल्यक परिवर्त्तनकेँ रेखाङ्कित करबाकेँ साहित्य मानैत छथि । साहित्यमे रोड़बाहि करब अथवा अराजकता उत्पन्न करबाकेँ संघर्ष मानबाक विचारकेँ खारिज करैत वैचारिक धरातलपरक संघर्षकेँ साहित्यिक संघर्ष मानैत छथि ।

तहिना औपन्यासिक सन्दर्भमे 'स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासक पृष्ठभूमि' शीर्षकक एकमात्र निबन्धमे विभिन्न उपन्यासक कथात्मक विषयक ऐतिहासिक विभ्रान्तिक निराकरण कयल गेल अछि ।

'नवताक सन्दर्भमे' शीर्षकक अन्तर्गत कुल छौ गोट निवन्ध समाविष्ट अछि—

(क) वादे-वादे जायते तत्त्व बोधः

(ख) काव्य-जगतमे आग्रहशीलता

(ग) नव-लेखनक स्वरूप आ दिशा

(घ) आस्था-अनास्थाक स्वर

(ङ) परम्पराक अवस्थिति

(च) आधुनिक कवितामे सम्प्रेषणीयताक समस्या नहि

नवतावादी ओ परम्परावादी लेखकक द्वारा एक दोसराक रचनापर कयल जायवला आरोप-प्रत्यारोपक खण्डन करैत शेखरजी स्पष्ट कयलनि अछि जे प्रत्येक नवतामे प्राचीनताक खाद अवस्थित रहिते छैक । सम्प्रति जे विदेशसँ आयातित नवीनता थिक, जकर मूलमे विद्रोह तत्त्व अछि, जे साहित्यमे रोड़वाहिकेँ संघर्ष मानैत अछि । वस्तुतः ने तकर कोनो सार्थक भविष्य छैक आ ने ओकरा सोझाँ कोनो निश्चित लक्ष्ये छैक । साहित्यक काज धरतीकेँ स्वच्छ ओ निर्मल रखबाक प्रयोजनीयताक दिशा-सङ्केत करव थिक । जीवन मूल्यक परिवर्त्तनकेँ रेखाङ्कित करवे साहित्य थिक । एहीमे नवीनता सन्निहित अछि । अपन एहि पुष्ट विचारक द्वारा शेखरजी नवीनता ओ प्राचीनताक तथ्यात्मकताक सत्यकेँ उद्घाटित कयने छथि ।

ने परम्परावादी साहित्य अप्रासङ्गिक अछि ने नवीन साहित्यिक रचनामे सम्प्रेषणीयताक कोनो समस्या छैक । युगबोधक सङ्ग चलनिहारक लेल सम्प्रेषणीयताक समस्या नहि अछि । निबन्धकार नव लेखनक प्रति आशावान छथि । ओकर भविष्योक प्रति सन्दिग्ध नहि थिकाह, मुदा एहि नामपर कयल जायवला अनर्गल प्रलापसँ चिन्तित

अवश्य छथि ।

नवता सन्दर्भक अन्तर्गत एही विषय-वस्तुकेँ विस्तार प्रदान कयल गेल अछि। *'आलोचना-सन्दर्भ'*क अन्तर्गत निवेशित एकमात्र निबन्ध 'गम्भीर पाठकक अकाल : आलोचनाक दुर्भिक्ष' मे शीर्षकक अनुकूल गम्भीर पाठकक अभावेक-कारणेँ मैथिलीमे समुचित आलोचना नहि भऽ सकबाक कारणकेँ निर्दिष्ट करैत छथि ।

सङ्ग्रहक छठम खण्ड *'भाषा-साहित्य सन्दर्भ'* मे चारि गोट निबन्ध अछि—

(क) भाषाक स्वरूप ओ भाषाक अशुद्धि

(ख) प्रतिभा ओ अध्यवसाय

(ग) सामान्य लोकक लेखकः सामान्य लोकक हेतु साहित्य

(घ) अहो रूपम् अहो ध्वनिः

पुस्तकक एहि खण्डमे मैथिलीक स्वरूपसँ अपरिचित नव लेखक जे अपन अयोग्यताकेँ कुतर्कक द्वारा शुद्ध सिद्ध करबाक चेष्टाक बलेँ भाषाक स्वरूपकेँ विकृत करबाक प्रयास करैत छथि तनिकासँ अपन योग्यताक विकासक चेष्टा करबाक आग्रह करैत भाषाक स्वरूपकेँ स्थिर करबाक निवेदन कयल गेल अछि। सङ्गहि लेखक मैथिलीक निरपेक्ष पाठक ओ श्रोताकेँ अपनाकेँ मुखरित करबाक आग्रह सेहो करैत छथि। आगाँ 'प्रतिभा ओ अध्यवसाय' शीर्षकक अन्तर्गत सर्जनाक पृष्ठभूमिमे प्रतिभाकेँ जन्मजात गुण मानैत छथि आ अध्यवसायकेँ श्रमसाध्य । हुनक मत छनि जे सामान्य लोकक लेखक आ सामान्य लोकक साहित्य वस्तुतः साम्यवादी साहित्यकारक नारा थिक । ई भारतीय चिन्तन नहि थिक। तेँ एहि दिशामे लेखक ओ पाठककेँ विशेष रूपेँ सचेष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

सङ्ग्रहक सातम ओ अन्तिम खण्ड *'विविध सन्दर्भ'* मे निवेशित निबन्ध अछि—

(क) पत्र : पत्रकार ओ पत्रकारिता

(ख) साहित्यमे प्रतिबद्धताक औचित्य

(ग) प्रतिबद्धता आत्महत्याक पर्याय

(घ) इतिहास लेखन ओ आलोचना

निबन्धकारक कथन छनि जे प्रतिबद्धता नामक वस्तु बलात् राजनीतिक अभिप्रायसँ साहित्यकारक आगाँ पसारल गेल अछि। जे कोनो ने कोनो तरहेँ किछुओ साहित्यकार एहि जालमे फँसथु आ स्वीकार कऽ लेथु जे बिना कोनो विचारधाराक प्रति प्रतिबद्ध भेने साहित्यक काज चलिये नहि सकैत अछि ।

वस्तुतः ई स्थिति आत्महत्यासँ भिन्न दोसर कोनो उपलब्धिये नहि भऽ सकैत अछि। प्रतिबद्धतासँ मानसिक दासताक जन्म छोइत छैक। जे कोनो विशुद्ध साहित्यकारक लेल स्वीकार्य नहि भऽ सकैत अछि ।

शेखरजी पत्रकारितापर सेहो एहि खण्डमे विचार व्यक्त कयलनि अछि । मुदा *'मिथिला मिहिर'*केँ छोड़ि आन कोनो पत्र दिस नहि देखलनि । जखन कि मैथिलीक भाषा-साहित्यकेँ विकासक सोपानपर चढ़ौनिहार एकसँ एक महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिका प्रकाशित होइत रहल अछि ।

सङ्ग्रहक समस्त निबन्धमे शीर्षकसँ सम्बन्धित विषयक विशुद्ध आलोचना करबाक प्रयास कयल गेल अछि । एहि क्रममे सर्वत्र हिनक निर्भीकता ओ दू टूक गप्प करबाक प्रवृत्ति देखबामे अबैत अछि । सङ्ग्रहक सभटा निबन्ध मैथिली भाषा-साहित्यकेँ समुचित दिशा-निर्देश करबामे पूर्ण सफल भेल अछि । जे शेखरजीक गम्भीर विचार-मन्थनक गुणकेँ फरिच्छ करैत अछि । जँ एकदिस ओ सर्जनात्मक साहित्यक रथक एकटा महान रथी छलाह तँ दोसर दिस आलोचनाक लगाम धयने साहित्य-रथकेँ दिग् भ्रान्त होयबासँ बचयबा लेल, पथ-च्युत होयबासँ रोकबा लेल सतत साकांक्ष ओ सजग ।

काव्य कृति

शेखरजीक सशक्त लेखनी गद्ये जकाँ पद्यो विधापर चललनि । जाहिमे कल्पनाक उड़ानक अपेक्षा यथार्थक भाव-भूमिक चयन कयल गेल अछि । शेखरजी जहिना गद्यमे प्रवाहपूर्ण भाव, भाषा आदिक सफल प्रयोक्ता छलाह तहिना कवितोमे ।

प्रायः सभ साहित्यकारक साहित्य-यात्रा कवितेसँ आरम्भ होइत अछि । शेखरजी सेहो ओकर अपवाद नहि थिकाह । हिनकहु साहित्य-यात्रा (मैथिली) कवितेसँ आरम्भ भेलनि । एकगोट साक्षात्कारक क्रममे ओ सवयम् एहि तथ्यकेँ स्वीकारैत अपन प्रथम गीत रचनाक चर्चा कयने छथि । ओहि गीतमे शेखरजी स्वयम् सँ प्रश्न करैत छथि—

'की हमर चेष्टा विफल थिक !
जे न कहियो सोचि सकलहुँ,
ताहि पथपर पयर धयलहुँ,
की तकर ई अर्थ जे
पतने हमर निर्दिष्ट फल थिक ?
की हमर चेष्टा विफल थिक !'

शेखरजी छन्दोबद्ध गेयधर्मितासँ समन्वित कविताक सङ्ग छन्दमुक्त कविता सेहो लिखने छथि । जाहिमेसँ अधिकांश पत्र-पत्रिका आदिमे छिड़िआयल अछि । सङ्ग्रहक रूपमे हुनक मृत्यूपरान्त प्रकाशित काव्य-सङ्ग्रह *'गजल ओ गीत'* अछि जाहिमे हुनक कविता-लेखनक विविध प्रवृत्तिक समावेश कयल गेल अछि । तेँ पहिने एही पोथीकेँ देखब उचित होयत ।

गजल ओ गीत

कुल सैंतीस गोट कविताक सङ्ग्रह *'गजल ओ गीत'* 199; इ० मे शेखर प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भेल । जाहि उनतीस गोट गजल ओ आठ गोट गीत समाविष्ट अछि । सङ्ग्रहमे देश-दशा, लोकक सामाजिक प्रकृति ओ प्रवृत्तिक सङ्ग कविक जीवनपर विशेष प्रकाश देबयवला कविता सभ समेटल गेल अछि ।

कवि देशक- समाजक स्वरूप-परिवर्त्तनसँ खिन्न छथि । सम्पूर्ण समाज वैयक्तिक स्वार्थ-पूर्त्तिमे डूबि गेल अछि । लोकमे अपन-आनक ज्ञान नहि रहि गेलैक अछि । एकदिस अनुचित मार्गक अवलम्बन कऽ सुखक अमार लागल छैक तँ दोसर दिस अपनहि समाजक, अपनहि देस-कोसक समाङ नाङट, उघार आ भूखल अछि ।

समाजमे प्रपञ्ची लोकक चलती भऽ गेलैक अछि । प्रपञ्चकेँ लूरि कहल-बूझल जाय लागल छैक । ओकर प्रतिष्ठा भऽ रहल छैक । जे एहि प्रपञ्चमय बुद्धि ओ आचरणसँ भिन्न अछि तकरा बकलेल-ढहलेल बूझल जाय लागल छैक । देशमे समान अवसरक बात कहवे टा लेल बचल अछि । व्यवहारमे निपत्ता भऽ गेल अछि—

'सोझ बाट जे धरय, कहै तकरा सभ अछि ढहलेल ।
सोझ बात जे बाजय, बूझल जाय सुद्ध बकलेल ।

● ● ●

'मुँहगरकेँ ऊँच मचान जतऽ, लुरिगरकेँ ऊँच मकान जतऽ
मुँहगरकेँ घी पकवान जतऽ, अवसर सभ हेतु समान कतऽ'

सम्पूर्ण देश-समाजक लोक अन्धकारमय भविष्यक बाटपर आन्हर जकाँ बढ़ल जा रहल अछि । आगाँ-पाछाँक चिन्तासँ रहित वैयक्तिक कलुषित प्रतिस्पर्द्धामे लोकक सद्इच्छा ओंघरिया मारि रहल छैक । कलुषित लोक सर्वत्र नङरिया पिलुआ जकाँ सह-सह कऽ रहल अछि—

'कलुषित इच्छाकेर मोरीमे सह-सह करैत नङरिया,
सद्इच्छा जिनगीक मोहारपर मारै छै ओंघरड़िया ।'

एहना स्थितिमे लोकमे सद्भावनाक प्रति विकर्षण भेल जा रहल छैक । क्यौ नीक लोक रहि की करत ? काहि काटत । हकन्न कानत । ताहिसँ लाभ ? ओकर कतहु मूल्याङ्कन नहि होइत छैक । अनुचित क्रिया कयनिहार अपन गोल बना लेने अछि । नीचाँसँ ऊपर धरि गोल बनल छैक । अपनहि गोलक सर्वत्र विचार कयल जाइत छैक । अपना गोलक लोक केहनो अधलाह किएक ने हो, ओकर काज कतबो बेजाय किएक ने होइक, सम-विचारक लोकसभ मिलि ओकर जय-जयकार करब आरम्भ कऽ दैत छैक । बिना बात बुझने-अकानने सौंसे सम्प्रदायक लोक अनघोल शुरू कऽ दैत अछि । मुदा ओहीठाम जँ कोनो व्यक्ति, जकर गोल नहि छैक से जँ केहनो बहुमूल्य बात बाजल, कोनो विशिष्टतम काज कयलक तकर उपेक्षा कयल जाइत छैक । ओकरा लेल कोनो सुनगुनो नहि भऽ पबैत छैक । वस्तुतः आइ निर्गुट भऽ एको डेग नहि चलल जा सकैछ—

'निर्गुटक नहि चलय आ कि डेग बढ़य एक,
गुटवाजकेँ सभ किछु देअय अनिवार गोलैसी ।'

● ● ●

'कहेनो पहाड़ खसय आ मरि जाय बड़ अयोध,
जँ देअय बड़े जोरसँ ललकार गोलैसी ।'

गुटबाजीक एहि हो-हल्लामे एकान्त-शान्त-क्रियावान तपस्वीक सभटा तप-निष्ठा अकारथ चलि जाइत छैक । दसगोट गुटवाज सम्पूर्ण वातावरणकेँ छपने अछि । एही गोलैसीक बलपर अयोग्यो योग्य-पद प्राप्त करबामे सफल होइछ । वस्तुतः बैमाने लोकक सभतरि पूछ छैक—

'जकर तराजू पासङ तकरे आइ चलै व्यापार ।'

आ सत्यक बाटपर चलनिहार व्यक्तिकेँ तकनिहार कतहु क्यौ नहि अछि ।

एहना स्थितिमे समाजक हित-चिन्ता के करत ? पेटक लेल बेहाल रहनिहार समूहसँ देश-विषयक चिन्ताक कोनो प्रश्ने नहि उठैत अछि ।

तेँ कविक हृदयमे बेर-बेर प्रश्न उठैत छनि जे ई देश ककर ? स्वार्थक आसवपायी, श्वानवत पेटक लेल जिउनिहार व्यक्तिक कि सत्ताक लेल दिल्ली-दरबारमे दौड़ लगौनिहार नेताक ?

वस्तुतः ई देश एहन ककरो नहि । देश अछि देशमातापर अपन अन्तरक स्नेह ओ भक्ति लुटौनिहार तपःपूत निस्वार्थसेवी पुरूषक, जे सतत् देशेक उन्नति ओ महिमा-मण्डनक लेल चिन्तनशील रहैत छथि । साधनालीन रहैत छथि । मुदा कविक सन्दिग्ध मन देशमे व्याप्त अनाचारकेँ देखि प्रश्न कऽ उठैत अछि—

"जकरा अन्तरमे राष्ट्रभक्ति, छै सहज सिनेहक अतुल शक्ति,
देशक कण-कणकेँ अपन बुझय, लुटवय सदिखन देशानुरक्ति ।
देशक उन्नतिए कोष जकर
की देश तकर ?"

शेखरजीक जीवनमे साधनाक विशिष्ट स्थान रहलनि अछि । ओ उदाम जीवनक समर्थक नहि छलाह । हुनक आग्रह रहलनि जे जहिना सुघर सङ्गीतक लेल कण्ठ-साधना ओ उद्यानक सुघरताक लेल घेरा आवश्यक छैक, तहिना सुघर जीवनक निर्माणक लेल बन्धन ओ साधना आवश्यक—

'साधल नहि जायत कंठस्वर, संगीत सुघर ता होयत कोना ?'

● ● ●

'वेढ़ल नहि जायत काँट लगा, उद्यान सुघर ता होयत कोना ?'

● ● ●

'दुःखक ज्वालाकेर ताप विना, जीवन-सोना नहि शुद्ध होअय'

शेखरजीक जीवनक अधिकांश समय कष्टेमे बितलनि । मुदा ओ कहियो परिस्थितिक सङ्ग सौदा नहि कयलनि । संघर्ष करैत रहलाह । जीवनक केहनो दुःस्थितिमे नोर चुअयबाकेँ पुरूषार्थक विरुद्ध बुझलनि ।

वस्तुतः नोर ओकर नाम नहि छैक जे कोनो परिस्थिति सँ पछाड़ खा कऽ आँखिसँ चूबि जाइत अछि । नोर थिक ओ जे परिस्थितिक पहाड़सँ लड़ि-भिड़ि सफलता प्राप्त करैत अछि—

'नोर विवशता नहि थिक लपकैत आगि थिक नोर'

● ● ●

किछु करबा ले भिड़ि जाइत अछि लड़ि जाइत अछि नोर'

जेँ शेखरजीक जीवन संघर्षसँ भड़ल रहलनि, सदिखन ओहिसँ जुझैत रहलाह तेँ साधना ओ संघर्षक वलपर लक्ष्य प्राप्त करवामे सफल भेलाह आ अपन अनुभूतिक आधारपर 'दुःखक ज्वालाकेर ताप विना जीवन-सोना नहि शुद्ध होअय' कहलनि ।

'गजल ओ गीत' सङ्ग्रहमे सामाजिक-राष्ट्रीय भावनासँ सम्पन्न कविता सभक अतिरिक्त एहनो रचना सभ समाविष्ट अछि जे हुनक जीवनक अन्तिम कालक वोध करबैत अछि । जीवनक प्रत्येक परिस्थितिमे सङ्ग देनिहारि जीवन-सङ्गिनी जखन हुनका असगर छोड़ि संसारसँ विदा भऽ गेलथिन, शरीर आ मोन दुहूसँ दुर्बल भऽ गेलाह तँ बड़-वेसी मर्माहत भेलाह । लोकक सान्त्वना-स्वर नहि सोहाइत छलनि । धनसँ अधिक जनकेँ महत्व देनिहार असगर पड़ि जाइत छथि । अपनो आन जकाँ भऽ जाइत छनि । भेँट-घाँट कयनिहारक अभाव भऽ जाइत छनि । तेँ संघर्षमय जीवनक पथिककेँ आन कोनो वस्तुमे मन रमि नहि रहल छनि । ओ जीवनमे विश्रामक आकांक्षी भऽ जाइत छथि, निरूद्देश्य जीवनसँ मृत्युकेँ अधिक श्रेयस्कर मानैत छथि—

'जीवि रहल छी किए' ने बूझी, जीवन ई असहाय,
विश्व-धारमे एकसर नाविक, निर्वल ओ निरुपाय ।'

तेँ कवि जगत-नियन्तासँ निवेदनपूर्वक कहैत छथि—
'सांसारिक लक्ष्यक पाछाँ हम रहलहुँ बहुत वेहाल,

भेटल बहुत, बहुतमे हुसलहुँ, संघर्षक बड़ जाल ।'
अतः हे जगतक सूत्रधार ! आब एहि सभसँ मुक्ति दियऽ—

'सूत्रधार, सामर्थ्य आब नहि, संघर्षक नहि वेर,
अभिलाषा एतबे, ने नचावी एहि जीवनकेँ फेर ।'

कवि अपन एहि समस्त परिस्थिति ओ मानसिकताक आलोकमे अपनाकेँ सम्पूर्ण रूपसँ समर्पित करैत कहैत छथि—

'नीक वेजाय क्षणक दीअठिपर अहिंक सिनेहक टेम,
अहिंक देल ई संचित धन अछि, अछि खिपटा वा हेम ।'

कविकेँ पूर्ण आस्था ओ विश्वास छनि जे नियन्ता हुनक उपेक्षा नहि करथिन। ओ एकगोट प्रौढ़ तपस्वी जकाँ मृत्युकेँ 'मरणकेर हार' कहैत छथि । मृत्युसँ घवड़ाइत नहि छथि, अपितु ओकरा जयमाल जकाँ स्वीकारवा लेल तत्पर छथि—

'नै आबथि से असम्भव अछि, एहन ने निठुर निर्मोही,
ओ अपने हाथ पहिरौता मरणकेर हार, हम बैसल छी ।

एहि 'गजल ओ गीत' सङ्ग्रहमे सङ्कलित रचना सभक माध्यमे शेखरजीक भारतीय दर्शनमे पूर्ण आस्था ओ विश्वासक सङ्ग देश-समाज ओ संस्कृतिक प्रति सजगताक परिचय भेटैत अछि । सङ्ग्रहमे आयल 'सामाक तानमे' ओ 'एहि खन क्षितिजपर आयल' आदि शीर्षक एकरे द्योतन करैत अछि ।

एहि पोथीमे सङ्गृहीत रचनाक अतिरिक्त बहुत-रास कविता प्रकाशित-अप्रकाशित छनि, जाहिमे मातृभूमि-मातृभाषाक प्रति आदर ओ समर्पणक भाव, दीन-दुखी जनक अन्तर्वेदना आदि भेटैत अछि । पूर्वहि कहि चुकल छी जे शेखरजी प्राचीन ओ नवीन दुहू शैलीमे काव्य-रचना कयलनि । यथार्थ-चिन्तनसँ समन्वित हुनक कवितामे 'तीन चित्र' शीर्षक कविता द्रष्टव्य अछि जाहिमे वाढ़िक प्रतीक लऽ संसारमे पसरैत भौतिकतावाद, ईर्ष्या-द्वेष आदिक चित्र उपस्थित कयल गेल अछि—

एहन वाढ़ि कहियो नहि देखल ।
इचना पोठी सन जे धारा, सेहो खल-खल हास करैए ।
हू-हू-हू-हू पानि बहैए, मरण प्रलय संगीत गवैए ।।
भौतिकताक राक्षसी धारा, इच्छा नङटे नाच नचैए ।
सत्य धर्म ओ नीति भसैए, सम्बन्धक सब भीत खसैए ।।
प्रतिद्वन्द्विताक लहरि लहरैए, भेद भाव झण्डा फहरैए ।
राजनीति तँ ऊँच मचानक तऽरे तऽर कटाओ करैए ।।
दम्भ बान्हकेँ तोड़ि रहल छै, गुट्ट नाओकेँ फोरि रहल छै ।
जाति जऽरिकेँ कोड़ि रहल छै, हृदयक प्रीति पुनीत भसैए ।।

समाजमे वढ़ैत जा रहल वैयक्तिताक भावना, लोकक एक-दोसरासँ सम्वादहीनता, पारस्परिक सम्वन्धक तिरोभाव आदिक मूल कारण कवि युगक यांत्रिकताकेँ मानैत छथि। यांत्रिक सत्ताक प्रभावेँ लोकमे स्नेह, प्रेम भावुकता आदि गुणक अभाव भेल जा रहल छैक—

"यन्त्र-चालित शत-सहस्त्र लोकक यंत्रणा
व्यक्तिगत–नहि होइत छैक
तेँ एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक सुख-दुखसँ फराक अछि
डाकक खोलीमे हमर पत्र दस दिन पन्द्रह दिन पड़ल रहत
पत्रपर हमर पता अछि तेँ निघेस अछि अनका लेल
पत्रमे हमर पिता मुइल रहथु
माता शय्याशायी रहथु
परिवारक आन लोक आवश्यकताक अन्हड़मे
उड़ियाइत रहओ, वैआइत-औनाइत रहओ
सोह उतरल अछि, खोली लग हम नहि जाइत छी
हमरा हमर पत्रक सूचना क्यौ नहि देत
हमर व्यक्तिगत जीवनपर वज्र खसय
ओ वज्र अनकालेल वसातक हल्लुक झोका होयत
व्यक्तिगत दुःख आ सहानुभूतिक भावुकता
यन्त्रक हेतु वर्जित अछि ।"

एहि विकराल परिस्थितिक गम्भीरतासँ कविकेँ अपन शून्यताकेँ समाप्त करवाक सेहन्ता होइत छनि जे वैचारिक आदान-प्रदान करी—

'की हर्ज जे दू व्यक्तिक शून्यताकेँ एकत्र कऽ
एक दोसराक शून्यताकेँ भरि लेल जाय !'

युग सत्यक धाहसँ सन्तप्त एहि कविता सभमे कविक स्वस्थ, स्वच्छ ओ सूक्ष्म चिन्तन छनि । हिनक प्राचीन ओ नवीन दुहू प्रकारक कवितामे यथार्थ मूर्त्तरूपमे ठाढ़ अछि । अपन अभिव्यक्तिकेँ सहजताक सङ्ग फड़िच्छ रूपमे उपस्थित करवामे शेखरजी पटु छथि ।

पत्रकारिता ओ सम्पादन

मैथिलीमे पत्रकारिताक इतिहास सामान्यतः आन बहुतो भाषाक पत्रसँ बड़ छोट नहि अछि । पूरा एकौनबे वर्षक इतिहास छैक । शताब्दी लागय जा रहल अछि । ताहिमे शेखरजी एहि यात्राक लगभग एक तेहाइ भागसँ जुटल रहलाह । विशेषतः साठि इस्वीसँ अस्सी धरिक यात्राक विशिष्ट नायके छलाह ।

दरभङ्गासँ प्रकाशित *'वैदेही'* पत्रिकाक सम्पादक मण्डलमे एकगोट सदस्य होइतो हिनक सम्पादन क्षमताक परिचय तँ लोककेँ भेटवे कयलैक सङ्गहि *'इजोत'* मासिकक सम्पादनक अवसर हिनक साहित्यक आने विधा जकाँ सम्पादन-प्रतिभाक क्षमताक प्रौढ़ताक दिशा-सङ्केत कऽ देलक । ई पत्र महाविद्यालयीय छात्रकेँ ध्यानमे राखि प्रकाशित भेल छल । तथापि एहिमे विषयक स्तर, क्रमिकता आदिक उपस्थापन आदि हिनक पत्रकारिताक दृष्टिकेँ देखार कयलक जे कालान्तरमे साप्ताहिक *'मिथला-मिहिर'* (पटना)क प्रधान सम्पादकक उच्चताक प्राप्तिक अवसर पयबामे सफल बनौलकनि ।

1960 इ. सँ *'मिथिला मिहिर'* साप्ताहिकक रूपमे पुनः प्रकाशित होमऽ लागल । एहिसँ पूर्व *'मिहिर'* 1909 इ. सँ 1954 इ. धरिक अपन सुदीर्घ ओ सफल जीवन-यात्रा कऽ चुकल छल । मैथिलीक सर्वाधिक सुप्रतिष्ठित पत्रिका *'मिहिर'* एहि अवधिमे एकसँ एक विद्वान मनीषी सम्पादकक छत्रछायामे मासिक ओ साप्ताहिकक रूपमे प्रकाशित होइत रहल आ मिथिला-मैथिल ओ मैथिलीक सर्वांगीन विकासक दिशामे क्रियाशील रहैत जनप्रियता दिस अग्रसर भेल । मुदा ई सम्पादक *'मिथिला मिहिर'* क लेल कोनो सुविधाक बात नहि छल । अपितु विपुल समस्याक बोझ छल । साप्ताहिकक मर्यादाक रक्षा, मिथिलाक साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतनाक उद्घाटन-प्रकाशनक समस्याक समाधानकेर भारक सङ्गहि राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय गतिक सङ्ग चलब आदि समस्याक तालमे ताल मिलायब कठिन काज छल । मुदा शेखरजी एहि सभ समस्याक समाधान कयलनि ।

विविध रुचि-समूहक लोकक वाणीकेँ एक कण्ठसँ बहार कऽ सकल जनाकांक्षाक पूर्त्ति करब असम्भवकेँ सम्भव करब थिक । मुदा *मिथिला-मिहिरक* सम्पादकक लेल

ई अनिवार्य छल । सङ्गहि साहित्यकेँ सेहो सतत वर्त्तमान बनौने राखब आवश्यक । एहि क्रममे जतय रससिद्ध साहित्यकारगणक पूर्वपरम्परित रचनाकेँ स्थान दऽ विशाल जनसमूहक आकांक्षाक पूर्ति करब आवश्यक छलैक, ततहि साहित्य ओ साहित्यकारक अग्रिम कड़ीक निर्माण सेहो परमावश्यक छल । नवीनताक सम्वर्द्धनक सङ्ग नवीनताक नामपर अयोग्य किंवा साहित्यक माध्यमे समाजक स्वास्थ्यक लेल हानिकारक तत्त्वसँ रक्षा करबाक सशक्तताक सङ्ग दायित्व निर्वाहक अपेक्षाकेँ शेखरजी सदिखन पूर्ण करैत रहलाह । तेँ हिनक सम्पादनावधिमे *'मिहिर'* सर्वाधिक लोकप्रिय भेल ।

पत्र सदिखन लोकरुचिक अनुकूल बनल रहय ताहि दृष्टिजेँ समय-समयपर नव-नव धारावाहिक स्तम्भ आरम्भ करैत रहला—कहियो 'अङरेजीफूलक चिट्ठी' तँ कहियो 'सहजोपीसीक चर्खा ।' एहिमेसँ अनेक स्तम्भ आनो लोक लिखैत रहलाह आ ई स्वयं सेहो लिखैत छलाह । उपर्युक्त दुनू धारावाहिक स्तम्भमे क्रमशः पहिल डा० रामदेव झा ओ दोसर स्वयं शेखरजी लिखने छथि । शेखरजी समाजक प्रत्येक वर्ग ओ वयसक पाठकक लेल सामग्रीक चयन कऽ पत्रकेँ सफलता दिस बढ़ौलनि । जाहि क्रममे अनेको स्थायी-स्तम्भक निर्धारण कयलनि । जेना—*'नेना भुटकाक चौपाड़ि'*, *'स्त्रीगण समाज'*, *'देस-कोस'*, *'देश-देशान्तर'*, *'विचारमञ्च'*, *'क्रीड़ा जगत'*, *'फिल्मलोक'*, *'साप्ताहिक राशिफल'*, *'पाठकीय प्रतिक्रिया'* आदि । तहिना समय-समयपर हास्य-व्यंग्य स्तम्भक रूपमे *'बहिरा नाचय अपने ताल'*, *'गोनूझाक चटिसार'*, *'धर्मधकेलानन्दक चटिसार'*, *'रूचय तँ सत्त ने तँ फूसि'* आदिक नियोजन करैत रहलाह । एहि विविध विषयक अतिरिक्त कथा, कविता, एकाङ्की, निवन्ध, समीक्षा आदि नियमित रूपेँ मिहिरमे रहैत छल । साहित्यिक सम्वर्द्धनक निमित्त शेखरजी अनेको विशेषाङ्क प्रकाशित करैत रहलाह । कथा, लघुकथा, सत्यकथा, उपन्यास, एकाङ्की, निवन्ध आदि विधापर केन्द्रित विशेषाङ्कक अतिरिक्त *'विद्यापति स्मृति अङ्क'* ओ *'होलिकाङ्क'*क सदृश विशिष्ट अङ्क सभ एकदिस पाठकक विशाल संख्या ठाढ़ करबामे सहयोगी भेल तँ दोसर दिस लेखक ओ लेखिका लोकनिक पंक्ति बनयबामे सेहो सफल भेल । ई सभटा हिनक गम्भीर चिन्तन ओ दूरदृष्टिक परिणाम कहल जा सकैछ ।

जहिया शेखरजी *मिहिरक* माध्यमे भाषा ओ साहित्यक विकास-कार्यमे सन्नद्ध भेलाह तहिया मैथिलीमे बड़ अभाव छलैक । से पाठक ओ लेखक दुहू दृष्टिजेँ । पाठकक तँ अभाव छलैके साहित्यकारोक संख्या विशेष नहि छल । जे छलाह, ताहिमे विशेष कविये । किछु कथाकार । विविध विषयक लेख लिखनिहारक अत्यन्त अभाव छलैक । नाटककार नहिजेँ जकाँ छलाह । महिला लेखिकाक सर्वथा अभाव छल । विचारि कऽ देखलापर सर्वत्र अभावे अभाव छलैक । शेखरजीकेँ ई सभ वस्तु पुरयबाक छलनि । ओ मैथिलीमे व्याप्त एहि अभाव सभकेँ दूर करबाक लेल, मिहिरकेँ सर्वक्षेत्र, सर्वजनस्पर्शी

बनयवाक लेल रचना लिखायब, नव लेखक तैयार करब, पाठक तैयार करब आदि कार्यमे जुटि गेलाह । मुदा से लगले सम्भव नहि छल । दोसर, पत्रक स्तरकेँ कायम राखब सेहो आवश्यक छलैक । ताहिलेल स्वयम् छद्मनामे लिखब आरम्भ कयलनि— *कामरूप, पराशर, शेखर, शेफालिका देवी* आदि कनेको नामे रचना लिखथि आ छापथि । से जाहि छद्मनामी रचनाकारक जे भाषा, लेखन-स्तर, विषय-चयन-दृष्टि एकबेर लिखा गेल शेखरजी अपन प्रतिभाक बलेँ ओहि छद्मनामक समस्त संस्कारकेँ स्थिर रखैत छलाह । पाठककेँ ओहि लेखकक रचना पढ़लाक बाद कोनो तरहक अन्यथा अनुभव नहि होइत छलनि ।

स्वयम् शेखरजी साहित्यकार छलाह । मुदा कहियो अपन साहित्यिक मान्यताकेँ पत्रपर लदबाक प्रयासो नहि कयलनि आ ने अपन कि आन कोनो व्यक्ति-विशेषक व्यक्तित्वकेँ उभारबाक किंवा आरोपित करवाक चेष्टा कयलनि । जाहिसँ पत्र कोनो विशेष दिशामे झुकल सन प्रतीत नहि भेल ।

शेखरजीकेँ जाहि कोनो लेखकमे प्रतिभाक कनेको वीज देखबामे अयलनि, सभकेँ समुचित स्थान दैत ओकरा विकसित करवाक चेष्टा कयलनि । प्रतिभा कतहु, केहनो हो तकरा विकसित करबा काल ओ शत्रु-मित्र नहि मानैत छलाह । तेँ आजुक मैथिली साहित्यमे जे अनेकाशः गण्यमान्य साहित्यकार ताहिमे बेसी शेखरजीक निर्माण कहल जाइत छथि ।

पत्रकारिताक माध्यमे शेखरजी समाजक विविध क्षेत्रक प्रतिभाकेँ मैथिली दिस आकृष्ट करबामे सर्वाधिक सफल भेलाह । जेना, महिला लेखिकाक अभावकेँ देखैत महिला-स्तम्भ आरम्भ कयलनि, जे आरम्भमे कोनो पुरुष लेखक द्वारा लिखल जाइत छल । पछाति महिलोलोकनि एहि दिशामे आकृष्ट भऽ लिखब शुरू कयलनि । तहिना मैथिलीकेँ साहित्यक अतिरिक्त भाषा नहि बूझल जाइत छल, तकरा जीवनक विविध क्षेत्र धरि विस्तार देलनि । विभिन्न विषयपर निवन्ध लिखनिहार विद्धान मिहिरमे लिखब आरम्भ कयलनि ।

मिहिरक सम्पादनावधिक क्रममे शेखरजीक सभसँ महत्वपूर्ण योगदान रहलनि भाषा-शैलीक एकरूपताक स्थापना । मैथिलीमे भाषा-शैलीक समस्या अद्यावधि विद्यमान अछि । जतेक लेखक ततेक प्रकारक भाषा-शैली । मानक स्वरूपक स्थिरीकरण नहि होयबाक कारणेँ भाषा-भाषीक विलगाव, क्षेत्र-सङ्कोच आदि समस्या एखनो मुँह बौने ठाढ़ अछि ।

शेखरजी एहि समस्याक निदानक दिशामे सधल डेग उठौलनि । मिहिरक प्रकाशन एकगोट निश्चित भाषा-शैलीकेँ अपनाय आरम्भ भेल । मिहिरक लोकप्रियताक पाछाँ ईहो एकगोट महत्वपूर्ण कारण भेल । शेखरजी भाषाक लिखित स्वरूपकेँ रूढ़ भऽ

गेने जनसाधारणसँ कटि जयबाकेँ प्रमुख कारण मानैत, रूढ़ भाषाक प्रयोगसँ विकासक स्रोत सुखा जयवाक सम्भावना देखैत ओ क्षेत्र विशेष वा वर्ग-विशेषक मध्य भाषा-सङ्कोच अनुमानि भणित भाषा जे जनसामान्यक द्वारा प्रयोग कयल जाइछ तकरा अपनयवाक पक्षधर छलाह । फलतः मिहिरमे सोझ भाषा-शैलीक प्रयोग प्रारम्भ भेल । आ पत्र समग्र मिथिलाकेँ अपना प्रभाव-परिधिमे समेटि लेबामे सक्षम भेल । मिहिरक प्रकाशन-प्रतिक संख्या-वृद्धि ओ मैथिली विरोधी गतिविधिक शिथिलता एकर भाषा-नीतिक सफलताक रूपमे देखल जा सकैछ ।

शेखरजीकेँ एहि लेल घनघोर विरोधक सामना करय पड़लनि । वर्ग-विशेषक किछु लोक असहयोगात्मक रुखि अपनौलनि, मुदा विशाल संख्यामे लेखक लोकनि हुनक एहि डेगक समर्थन कयलनि । अपन दृढ़ता ओ सजग पत्रकारक गुणसँ मण्डित शेखरजी सकल समस्याक समाधान कऽ पत्रकारिताक क्षेत्रमे जे कीर्त्तिमान स्थापित कयलनि से सर्वदा विद्यमान रहतनि ।

एहिठाम ईहो स्पष्ट कऽ देव आवश्यक प्रतीत होइत अछि जे ओना तँ भाषा-शैली निर्धारणक प्रसङ्ग एकगोट उपसमिति प्रकाशनसँ पूर्वे बनि गेल छल । मुदा ईहो ध्यातव्य जे ओकरा लागू करव, ओकर पूर्णतः पालन करव सम्पादक शेखरजीपर निर्भर छलनि । हुनक थोड़वो वैमत्य ओहि नीतिकेँ प्रभावित कऽ सकैत छल । दोसर जे एहि नीति-निर्धारणक कारणेँ विरोधी-विरड़ोक सामना हिनके करय पड़ैत छलनि । तेँ निर्विवाद रूपसँ शैली-स्थिरीकरणक दिशामे हिनक महत्वपूर्ण भूमिका रहलनि ।

ओना मिहिरक प्रथम प्रकाशनसँ लऽ अन्तिम प्रकाशन धरि अनेको यशस्वी विद्वान-साहित्यकार सम्पादकक पदकेँ सुशोभित कयलनि, जाहिमे श्री सुमनजी ओ शेखरजी सर्वाधिक यश प्राप्त कयलनि । सुमनजीक सम्पादनमे मिहिर, जे हिन्दीक प्रमुख पत्र छल ; जाहिमे मैथिलीकेँ गौण स्थान प्राप्त छलैक, से मैथिलीक प्रमुख पत्र बनि भाषा-भाषीक विकासमे संलग्न भेल तँ शेखरजीक सम्पादनमे मिहिर पूर्णतः मैथिलीक पत्र बनि मिथिला-मैथिल ओ मैथिलीक समग्र विकासमे दत्तचित्त भेल । सुमनजीक रोपल, अँकुरायल ओ जनमौल गाछकेँ विशाल वृक्षक स्वरूप दैत, डारि-पात फुटवैत फूल आ फल लगयबाक श्रेय शेखरजीकेँ छनि ।

ओना शेखरजी आनो वहुत रास पोथी आदिक सम्पादन कयलनि । मुदा सम्पादकक रूपमे सभ दिन मिहिरेक सम्पादक कहौताह । हिनक सम्पादन क्षमता ओ गम्भीर पत्रकारिताक परिणामक प्रसङ्ग सारांशतः कहि सकैत छी जे मैथिली जे मात्र कविता, कथा, उपन्यास ओ नाटकादि धरि सीमित छल, जे मनोरञ्जन मात्रक साधन जकाँ उपयुक्त होइत छल तकरा जीवनोन्मुख बनाय जीवनक विविध दिशामे विस्तार देऔलनि ।

हिन्दी-सेवा

बाल्यावस्थेसँ साहित्य-साधनामे लीन रहनिहार शेखरजीक आरम्भिक रचना हिन्दीमे उपलब्ध अछि । यद्यपि ओहि रचना सभक भावभूमि, पात्र-पात्रीक चरित्र, वातावरण आदि मिथिलाञ्चलीय अछि, मैथिल अछि, मैथिलीक अछि । मुदा मसिजीवी साहित्यकार होयबाक कारणेँ हिनका लेल हिन्दीकेँ अभिव्यक्तिक माध्यम राखब अनिवार्य छलनि। एक तँ प्रकाशकक अभाव, दोसर पोथी-विक्रयक कठिनता । तेँ मैथिलीमे नहि लिखवाक कचोटक अछैतो हिन्दीमे लिखबाक बाध्यता छलनि । ओ स्वयम् एहि भावकेँ *'दो पाटन के बीच'* उपन्यास, जे बादमे *'तऽर पट्टा ऊपर पट्टा'* नामे छपल, तकरा हिन्दीमे लिखबाक कारण डा० रामदेव झाजीक लग प्रकट कयने छलाह ।

एही कारणेँ चारिम दशकसँ छठम दशकक बीच हिनक अधिकांश रचना हिन्दीमे उपलब्ध अछि । एहि बीचक रचनावलीमे कविता, कथा, उपन्यास, नाटक आदिक बहुलता अछि ।

हिनक हिन्दी- रचना सभक सङ्ग एकगोट विडम्बना अछि जे सभटा उपलब्धो नहि अछि । विशेषतः कथाक तँ शीर्षकोक सूचना नहि उपलब्ध होइत अछि । जखन कि कथा, नाटक ओ उपन्यासे हिनक मुख्य लेखन-क्षेत्र छल । जाहिमे हिनका विशेष प्रतिष्ठा ओ प्रशस्ति प्राप्त छनि ।

हिनक कथा सभ चारिम-पाँचम दशकक हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्र 'चाँद', 'मनोहर कहानियाँ', 'माधुरी', 'संगम', 'साप्ताहिक विश्वामित्र' आदिमे इलाचन्द्र जोशी ओ रांगेय राघव सदृश लेखक लोकनिक सङ्ग छपैत छलनि । एही कालखण्डमे अर्थात् 1950 इ. मे हिनक दुइगोट कथाक पोथी सेहो प्रकाशित भेल छलनि—'जयमाला' आ 'फिल्म की दुनियाँ' । 'जयमाला' पर साहित्य मनीषी शिवपूजन सहायक उक्ति छलनि जे हिनक प्रतिभा अधिकाधिक विकसित भऽ बिहारक गौरव-वृद्धि करत । 'फिल्म की दुनियाँ' एकगोट दीर्घकथा छल ।

1945 इ. मे शेखरजीक प्रथम पोथी *'पथ पर'* प्रकाशित भेलनि । सम्प्रति ईहो लगभग अनुपलब्धे जकाँ अछि । एकर खण्डित प्रति हिनक बालक श्री शरदिन्दु शेखरजीक लग सुरक्षित अछि । एहि पोथीमे 101 गोट बिनु शीर्षकक गीत सङ्कलित अछि । शीर्षकक

स्थानपर गीतक संख्या अङ्कित छैक । प्रत्येक गीतकेँ जीवन-गीत अथवा आत्म-गीत कहि सकैत छी । तेँ जँ *'पथ पर'* सँ पहिने 'जीवन' शब्द जोड़ि *'जीवन पथ पर'* कही तँ से सङ्ग्रहक रचनावलीक भावकेँ स्पष्ट करवामे आर सहायक होयत ।

शेखरजी जीवन किंवा साहित्य सभतरि नव बाट, नव दिशामे अग्रगामिताकेँ श्रेष्ठ मानैत छलाह । ओ अपना लेल स्वयम् बाट बना ओहिपर जीवन भरि चलैत रहलाह । एहि बातक संकेत ओ आरम्भेमे दऽ देने छलाह—

"दुनियाँ के पथ से बहुत दूर
निज पथ निर्मित कर चलता हूँ ।"

एहि तरहेँ नव बाटपर चलब अत्यन्त कठिन होइत छैक । हुनकहु जीवनक बाट अति कण्टकाकीर्ण रहलनि । मुदा ओ अपन जीवनक वेदनासँ अनका व्यथित नहि करय चाहैत छलाह । ओकरा अपना भीतरमे नुकौने रखलनि—

"निकले न आह मिस कलुष किरण
मैं भीतर-भीतर जलता हूँ ।"

जीवनक एहि नवीन पथपर हुनका कहियो विश्रामक अवसर नहि भेटतनि तकर पूर्वाभास छलनि । वस्तुतः शुद्ध अन्तःकरणसँ वहरायल विचार सत्य होइत छैक । शेखरजी जीवन भरि दुःख-दाहकेँ अन्तःकरणमे नुकौने अविराम गतिजेँ चलैत यात्रा सम्पन्न कयलनि । ओ सफलता-असफलताक विचार नहि करैत छलाह । तेँ हुनका जीवनमे निराशाकेँ कोनो स्थान नहि छलैक । सतत आशा ओ विश्वास सङ्ग रहैत छलनि ।

'फूल और कलियाँ' 1952 ई. मे प्रकाशित दोसर हिन्दी गीत-सङ्ग्रह अछि । लघु आकारक एहि पोथीमे एगारह गोट छोट-छोट गीत छैक ।

आरम्भिक रचना होयवाक कारणेँ एहि गीत सभमे साहित्यिकतासँ वेसी हृदयक निर्मलता देखबामे अवैछ । हँ, एहिमे भावी रचनाकारक वीज संकेत रूपमे विद्यमान छैक ।

शेखरजी प्रयोगवादी साहित्यकार छलाह । उपन्यास ओ नाटक हिनक साहित्यिक शृंखलामे पर्याप्त स्थान पौने अछि । एहू दुनू विधाक रचना हिनक प्रयोगधर्मी गुणसँ पूर्ण अछि । *'महाकवि पगलेट'* नामक उपन्यास मिथिला प्रकाशन, लहेरियासरायसँ 1957 इ. मे प्रकाशित भेल तँ एकर कथ्य ओ शिल्पकेँ देखि हिन्दीक महान साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी एही पोथीमे अपन विचार प्रकट करैत लिखने छथि जे शेखरजी अपन एहि कृति द्वारा बुझौलनि अछि जे सुप्रसिद्ध सूक्तिक 'शायर, सिंह, सपूत' जकाँ लीक छोड़ि कऽ चलबे हुनका पसिन्न छनि ।

एहि उपन्यासकेँ वार्त्तालापक शैलीमे लिखल गेल अछि । जाहिमे वार्त्ताक श्रोता स्वयम् पाठक अछि । पाठककेँ पात्र बना उपन्यासक नायक महाकवि पगलेटक सम्बन्ध मे सभ किछु बड़ स्वाभाविक ढङ्गेँ कहने चल गेलाह अछि ।

नाटक शेखरजीकेँ सभ विधासँ अधिक प्रिय छलनि । हिनक उपलब्ध समस्त साहित्यिक कृतिमे नाटकेक संख्या सर्वाधिक अछि । ओ अपनाकेँ मूलतः नाटककारे मानितो छलाह । सर्वाधिक यश सेहो एही विधामे भेटलनि ।

सन् 1950 सँ 60 क बीच ई दर्जनो हिन्दी नाटकक प्रणयन कयलनि । जाहिमे *'तमाशा', 'निकम्मा', 'नाटक', 'मैं भी इन्सान हूँ', 'परिवार', 'कागज की नाव', 'कर्ज की मार'* आदि एहि बीचक लिखित ओ प्रकाशित प्रमुख नाट्य-रचना थिक ।

'तमाशा', 'नाटक' ओ 'मैं भी इन्सान हूँ' हिनक बहुचर्चित ओ लोकप्रिय नाटक अछि । एहिमे प्रयुक्त अनेक गीतक पाँती दर्शक-श्रोताक ठोरपर अनायासे घुरिआय लगैत छल । चाहे ओ *'तमाशा'* नाटकक 'दुनियाँ एक तमाशा बाबा दुनियाँ एक तमाशा' हो आ कि *'नाटक'* नामक नाटकक 'नाटक खेल रहा संसार' हो ।

शेखरजीक रचनाक विषय लग-पासक होइत छल । आ कोनो ने कोनो रूपमे ओ स्वयम् अपना रचनामे रहिते छलाह । नामक भिन्नते टा रहैत छलैक ।

1956 इ. मे प्रकाशित *'निकम्मा'* नाटकक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे शेखरजी स्वयम् एहि नाटकमे 'निकम्मा' साहित्यकार थिकाह । बात जे होइ । मुदा एहि पोथीक आरम्भेमे ओ समाजसँ जे एकटा प्रश्न पुछने छथि से आइयो अनुत्तरित अछि । ओ प्रश्न उठबैत कहैत छथि जे—

"आजुक साहित्यकार पंगुकेँ गति, बौककेँ हुंकृति आ आन्हरकेँ आँखि प्रदान करबामे कम सफल सिद्ध नहि भेल अछि । सोझ शब्दमे मानवताक कल्याण मार्गमे, जनसाधारणकेँ आरूढ़ करबाक कार्य शुद्ध अन्तःकरणसँ जतेक एकगोट सफल साहित्यकार कयलक अछि ओतेक प्रायः कोनो सफल राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि महान वेत्ता नहि । तखन कोनो कारण नहि जे साहित्यकार सन सांस्कृतिक नेताक पद कोनो राजनीतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक आदि नेतासँ न्यून मानल जाय । मुदा आजुक साहित्यकारक सामाजिक मान्यता छै की ? की ओ वस्तुतः निकम्मे थिक ?"

एहि नाटकमे सर्वांशतः साधक साहित्यकारक प्रति सामाजिक दृष्टि-बोधकेँ दुत्कारल गेल अछि ।

साहित्यकारेकेँ केन्द्रमे राखि लिखल गेल एकगोट आर नाटक अछि—*'मैं भी इन्सान हूँ ।'* एहि नाटकक मुख्य पात्र एकगोट चरित्रवान लेखक छथि । जे अपन आर्थिक स्थितिसँ उबिया समाजक लेल सत्-साहित्य-सर्जनक मार्ग छोड़ि सस्ता साहित्य लिखबाक लेल उद्यत होइत छथि । मुदा हुनक आश्रयदाता एकटा मूढ़ी बेचनिहार एहन करबासँ रोकि दैत छनि ।

बहुधा समाज द्वारा उपेक्षित ओ तिरस्कृत पात्र साहित्यकार हिनक नाटकमे अपन लक्ष्यसँ विचलित नहि होइत अछि । ओ सतत संघर्ष करैत सन्मार्गपर चलैत रहैत अछि । समाजमे चेतनाक शंख फूकैत रहैत अछि ।

उपसंहार

अपना आधारसँ ऊपर आकाश दिस चिड़ै आ गाछ दूनू उठैत अछि । दुहूक विकासक दिशा एके होइत छैक; मुदा दुनूक विकासक क्रममे अन्तर होइत छैक । चिड़ै धरतीकेँ छोड़ि किंवा त्यागि ऊपर उठैछ आ गाछ यावत जीवन धरतीक त्याग नहि करैत अछि । ओ अन्त-अन्त धरि अपन धरतीसँ रस ग्रहण करैत रहैत अछि, अपन फूल-फल धरतीकेँ दैत रहैत अछि । ओकर फूल-फलमे ओकर धरतीक गुण-धर्म विद्यमान रहैत छैक । यैह ओकर मुख्य विशिष्टता छैक ।

सुधांशु शेखर चौधरी गाछ जकाँ मैथिली साहित्याकाशमे वढ़लाह । अपना धरतीक सांस्कृतिक सुगन्धिक ओ सामाजिक मानमर्यादाक रक्षा करैत साहित्यक माध्यमे समाजमे होइत परिवर्त्तनक क्रमकेँ रेखाङ्कित कयलनि ।

ओ विकासवादी छलाह । मुदा विकासक नामपर देशान्तरसँ आयातित विधर्मिताक पक्षपाती नहि छलाह । ओ अपन सांस्कृतिक धरातलपर युगानुरूप भवनक निर्माता छलाह । हिनक समस्त साहित्यक आकलन एही सन्दर्भमे करब उपयुक्त होयत ।

एहि सन्दर्भमे हिनक एकल कालखण्डी नाटक सभकेँ ओ मनकथा शैलीमे लिखित उपन्यासकेँ देखल जा सकैत अछि । कालखण्डी नाटक कि मनकथा वस्तुतः साहित्यमे एकगोट अभिनव प्रयोग थिक । जंकरा परम्परित आन नाटक ओ उपन्याससँ फराक करयवला तत्त्वक अन्तरकेँ फुटा कऽ देखनिहार दृष्टिवन्त विद्वानक अपेक्षा छैक ।

शेखरजी साहित्य क्षेत्रमे सर्वप्रथम हिन्दी-लेखकक रूपमे पदार्पण कयलनि । विशेषतः नाटककारक रूपमे । बादमे उपन्यास आ आनो आन विधाक माध्यमे हिन्दी क्षेत्रमे प्रतिष्ठित होमऽ लगलाह । ओना सभसँ पहिने कविते लऽ कऽ उपस्थित भेल छलाह । हिन्दीमे हिनक रचनावलीक शृंखला सबल अछि । मूलरूपसँ हिन्दीमे लिखित अनेक रचना मैथिलीमे प्रकाशित भेलनि । मुदा, तेँ हुनका हिन्दीक लेखक मानब उचित नहि होयत । कारण हिन्दीमे लिखब विवशता छलनि जकरा स्वयम् सेहो स्वीकारने छथि । दोसर हुनक हिन्दीक रचनावलीकेँ देखलासँ स्पष्ट होयत जे ओ हिन्दीमे मिथिला-मैथिल ओ मैथिलीक वस्तु लिखैत छलाह । मैथिली क्षेत्रमे अयबाक पश्चात् कहियो ने तँ हिन्दी दिस घुमि कऽ तकलनि आ ने मैथिलीमे हिन्दी लिखलनि ।

मैथिलीमे शेखरजी एकसँ एक उत्कृष्ट साहित्यिक रचना कयलनि। प्रायः साहित्यक सभ विधापर हिनकर कलम चललनि। समुचित ओ व्यवस्थित शिक्षासँ अपने वञ्चित रहि गेलाह, मुदा समाजक सोझाँ सफल शिक्षक वा मार्गनिर्देशकक छवि लऽ उपस्थित भेलाह।

शेखरजी अपना साहित्यमे भोगल यथार्थक उपस्थापना कयलनि। अपन प्रायः समस्त रचनामे ई कोनो ने कोनो रूपमे स्वयम् विद्यमान रहलाह। अधिकांश कृतिमे एकगोट पात्र साहित्यकार अवश्ये रहैत छनि जे वेसी ठाम अपने छथि। नामक भिन्नता जे होइ। से *'सिनेहक आश्वस्ति'* कथाक नायक होथि, *'लगक दूरी'* क मास्टर साहेव होथि आ कि हिन्दी-नाटक *'निकम्मा'* ओ *'मैं भी इन्सान हूँ'* क साहित्यकार।

विषय वा घटनावलीक चयन ई अपना लगपाससँ करैत रहलाह। जाहिमे यथार्थकेँ रङि-टीपि कऽ उपस्थित कयलनि। वर्णनमे कल्पना गौण रूपमे रहलनि। मुख्य स्थान यथार्थेक रहलैक। यथार्थकेँ कल्पनाक सहयोगसँ उपस्थित कयलनि। कल्पनापर यथार्थक मोलम्मा चढ़यबाक प्रयास कहियो नहि कयलनि। तेँ हिनका द्वारा सामाजिक विषय-वस्तु उद्घाटित होइत रहल।

शेखरजीक रचनामे उपस्थित चरित्र सभ निर्मित नहि अछि। अपना साहित्यक लेल उपयुक्त पात्रक सृजन ओ कहियो नहि कयलनि। अपितु अपन घर, परिवार वा समाजसँ आवश्यक पात्र वा चरित्रक चयन कयलनि। तकरे परिणाम भेल जे हिनक रचना जनमानसपर अमिट छाप छोड़बामे सफल भेल।

सर्वांशतः शेखरजी आधुनिक मैथिली साहित्यक सफल नाटककार, कथा-उपन्यासकार, कवि-निबन्धकार छलाह, जनिकर साहित्य तत्कालीन समाजक चित्रावली होयबाक सङ्गहि साहित्य ओ समाजकेँ नव दिशा-निर्देश करैत विकासक पथपर अग्रसर करबामे सहायक सिद्ध भेल।

परिशिष्ट

शेखरजीक प्रकाशित ग्रन्थक सूची

मैथिली

नाटक

1. भफाइत चाहक जिनगी
2. लेटाइत आँचर
3. पहिल साँझ
4. लगक दूरी
5. हथटुट्टा कुरसी (एकाङ्की सङ्ग्रह)

उपन्यास

6. तऽर पट्टा : ऊपर पट्टा
7. दरिद्रछिम्मरि
8. ई वतहा संसार
9. निवेदिता

निबन्ध

10. सन्दर्भ

कविता

11. गज़ल ओ गीत

हिन्दी

नाटक

1. तमाशा
2. नाटक

3. निकम्मा
4. कर्ज की मार
5. परिवार
6. मैं भी इन्सान हूँ

उपन्यास

7. महाकवि पगलेट

कथा

8. जयमाला
9. फिल्म की दुनियाँ

कविता

10. पथ पर
11. फूल और कलियाँ

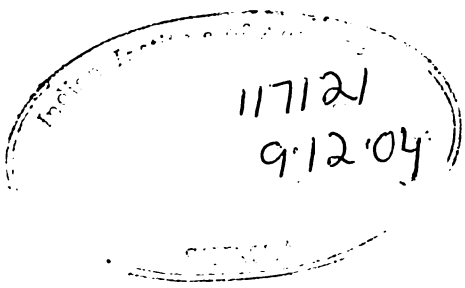

सफल नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार, निबन्धकार, कवि, दबंग सम्पादक, प्रभावोत्पादक भाषा-शैलीक प्रयोक्ता, साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित, बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार सुधांशु शेखर चौधरीक आधुनिक मैथिली साहित्यमे एकगोट विशिष्ट स्थान छनि । हिनक साहित्य अपन माटि-पानिसँ ऊर्जा ग्रहण कऽ मैथिली साहित्यकेँ विकासक नव दिशा ओ गति देबामे सहायक सिद्ध भेल अछि ।

एकदिस हिनक मैथिली ओ हिन्दीक नाटक अत्यन्त लोकप्रिय रहल अछि तँ दोसर दिस हिनक उपन्यास चिन्तनक धरातलपर पाठककेँ विचार करबाक लेल विवश करैत रहल अछि । साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत *'ई बतहा संसार'* अपना तरहक एकसरे उपन्यास थिक ।

प्रस्तुत विनिबन्धक लेखक प्रो. शिवाकान्त पाठकं मैथिली साहित्यक सुप्रतिष्ठित कवि, कथाकार, निबन्धकार ओ सम्पादक थिकाह । ई ओज ओ माधुर्यक प्रखर राष्ट्रवादी काव्यक लेल खास कऽ जानल-चीन्हल जाइत रहलाह अ
मौलिक ओ सम्पादित पोथी प्रकाशित छ
पत्र-पत्रिकामे हिनक प्रभावोत्पादक र
अछि । सम्प्रति रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापकक रूपमे कार्यरत छथि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 C 393 P
00117121

ISBN 81-260-0238-7

पचीस टाका